

TAMHEEDUL IMAAN (HINDI)

तम्हीदुल ईमान

मअ़ ह़ाशिय्या

ईमान की पहचान

मुसन्निफ़ : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن



-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना देहली-6

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

तम्हीदुल ईमान मअ़ ईमान की पहचान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **"उर्दू"** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **"हिन्दी"** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, WhatsApp या E-mail) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عٔ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ु = ُ	ू = ٗ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ृ = وٗ	ा = آ

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

तम्हीदुल ईमान मअ़ हाशिया ईमान की पहचान

अज़ : इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

ह़ाशिया व तक़्दीम : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत)

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद,

देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

नाम किताब : तम्हीदुल ईमान मअ़ हाशिया ईमान की पहचान

मुसन्निफ़ : इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان

हाशिया व तक्दीम : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत)

पेशकश : शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

सिने तृबाअ़त : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सि. 1436 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- ...अह़मदाबाद : फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद, गुजरात -1, फ़ोन : 9327168200
- ... मुम्बई : 19-20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 022-23454429
- ... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09373110621
- .... अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : (0145) 2629385
- .... हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ऑल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860
- ... हैदराबाद : मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- ... कानपूर : मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव, गुर्बत पार्क, कानपूर, यू.पी. फ़ोन : 09335272252
- ... बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद, अम्बा शाह की तकया, मदन पूरा, बनारस, यू.पी. फ़ोन : 09369023101

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

अ़र्ज़े नाशिर

"तम्हीदुल ईमान" इमाम अह़मद रज़ा ख़ान (رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की शोहरए आफ़ाक़ तस्नीफ़ है जिसे पढ़ना मुहि़ब्बे सुन्नत अमीरे अहले सुन्नत मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ) ने हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के लिये ज़रूरी क़रार दिया है।

लेकिन बुअ़्दे ज़मानी के बाइ़स आज के अ़वाम, इमामे अहले सुन्नत (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) के फ़सीह़ो बलीग़ कलाम को समझने से क़ासिर रहते हैं चुनान्चे, पैग़ामे रज़ा (رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) की तबलीग़ के लिये **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने इन की गिरां क़द्र तस्नीफ़ात को ह़वाशी और तस्हील से मुज़य्यन करने का बीड़ा उठाया है इस मक़्सद के लिये ज़ेरे नज़र किताब **"तम्हीदुल ईमान"** के ह़ाशिये में मुन्दरिजए ज़ैल उमूर का एहतिमाम किया गया है।

﴾1﴿ क़दीमुल इस्ति'माल तर्ज़े बयान को **"आज"** के तर्ज़े बयान में ढालने की कोशिश की गई है। ﴾2﴿ मतने **"तम्हीदुल ईमान"** में जिन अ़रबी इ़बारात का तर्जमा नहीं किया गया था उन का तर्जमा कर दिया है। ﴾3﴿ कोमा, सुवालिया निशान और इसी त़रह़ के दीगर निशानात का इज़ाफ़ा ग़रज़े मुसन्निफ़ (رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) को मद्दे नज़र रखते हुवे किया गया है। ﴾4﴿ आयाते क़ुरआनी का जो तर्जमा ख़ुद इमामे अहले सुन्नत (رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने फ़रमाया है उसे तब्दील नहीं किया गया अलबत्ता वोह आयतें जिन का तर्जमा नहीं फ़रमाया था हम ने उन का **तर्जमा कन्ज़ुल ईमान शरीफ़** से लिख दिया है। ﴾5﴿ किताब के आख़िर में अ़रबो अ़जम के उन उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی के अस्मा की फ़ेहरिस्त दी गई है जिन्हों ने इमामे अहले सुन्नत (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) के तक्फ़ीरी फ़त्वे की तस्दीक़ फ़रमाई।

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से दुआ़ है कि वोह हमारी इस कोशिश को क़बूल फ़रमा कर नजाते आख़िरत का सामान बनाए।

इदारा : अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तबलीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, इह़्याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَھُمُ اللّٰہ تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है।

तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.



फ़ेहरिस्त

मुक़द्दमा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

वाजिबुल एह़तिराम क़ारिईने किराम : हम जिस ख़ित़्ते में रहते हैं येह ख़ित़्त़ा सदियों से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के प्यारे दीन या'नी इस्लाम की दौलत से मालामाल है । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمۡ के दौर में ही मुबल्लिग़ीने इस्लाम की कोशिशों से इस ख़ित़्ते में नूरे इस्लाम उस वक़्त चमका जब येह सारा ख़ित़्त़ा कुफ़्रो शिर्क के घटा टोप अन्धेरों में घिरा हुवा था ।

इस ख़ित़्ते में इस्लाम की पहली किरन उस वक़्त चमकी जब अ़रब ताजिरों की तबलीग़ से मुतअस्सिर हो कर इस के साह़िली अ़लाक़ों के कुछ क़बाइल मुसलमान हो गए । इस के बा'द मुजाहिदे इस्लाम मुह़म्मद बिन क़ासिम की आमद हुई और दैबल से मुल्तान शरीफ़ तक के अ़लाक़े में इस्लाम की किरनें नूरबार हुईं । फिर इस्लाम के बत़ले जलील मह़मूद ग़ज़नवी के ह़म्लों से कुफ़्रो शिर्क के ऐवान ताराज हुवे । इन के साथ आने वाले उ़लमा और ख़ास त़ौर पर सूफ़ियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمۡ की कोशिशों से हिन्दुस्तान के अ़वाम बड़ी ता'दाद में मुसलमान होने लगे ।

अल ग़रज़ हिन्दुस्तान में तबलीग़े दीन का सेहरा औलियाए किराम और उ़लमाए अहले सुन्नत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہم के सर है । जिन्हों ने इस्लाम की ख़ात़िर अपने घरबार को छोड़ कर हिन्दुस्तान के कुफ़्रिस्तान को दारुल इस्लाम बना दिया । मिसाल के त़ौर पर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी, हुज़ूर दाता अ़ली

हिजवेरी, सय्यिद मियां मीर क़ादिरी लाहौरी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی वग़ैरहुम। इस से पता चलता है कि येह बुज़ुर्ग رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی हमारे मोह़सिन हैं और इन्हीं की वजह से आज हम मुसलमान हैं। येही वजह है कि इन के मज़ारात की त़रफ़ आज भी हमारे दिल खिंचते और सीनों में इन की अ़क़ीदत व मह़ब्बत के चराग़ जलते हैं।

फिर जब हमारे हुक्मरानों की आपस की नाचाक़ियों की वजह से अंग्रेज़ ने इक़्तिदार पर क़ब्ज़ा किया तो उस वक़्त यहां सिर्फ़ वोह लोग मुसलमान कहलाते थे जो इन्हीं बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के फ़ैज़ से फ़ैज़याब थे। और दिली तौ़र पर इन्ही औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی से वाबस्ता थे (या'नी अहले सुन्नत व जमाअ़त) गोया उस वक़्त सिवाए रवाफ़िज़ (शीआ़) के कि जिन की ता'दाद आटे में नमक के बराबर थी मुसलमानों का कोई मद्दे मुक़ाबिल न था। चुनान्चे, अंग्रेज़ ने चाहा कि किसी त़रह़ इस अकसरिय्यती जमाअ़ते अहले सुन्नत व जमाअ़त की त़ाक़त को पारा पारा कर दिया जाए। ताकि उस की हुकूमत को दवाम ह़ासिल हो। इस मक़्सद को ह़ासिल करने के लिये अंग्रेज़ ने मुसलमानों के मुक़ाबिल ऐसे लोगों को खड़ा किया जो अपने आप को न सिर्फ़ मुसलमान कहलवाते, बल्कि पीर बन कर बैअ़त वग़ैरा का सिलसिला भी करते। लेकिन इस के साथ साथ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ), उस के ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की शान में वोह गुस्ताख़ियां करते थे कि बड़े से बड़ा काफ़िर भी इस की जुरअत न कर सकता था। इन की तफ़्सील के लिये मुलाह़ज़ा फ़रमाएं : "**बरत़ानवी मज़ालिम की कहानी अ़ब्दुल ह़कीम अख़्तर शाह जहानपूरी की ज़बानी**।"

चुनान्चे, अंग्रेज़ मक्कार का मक़्सद पूरा हुवा और उस वक़्त से ले कर आज तक पाक व हिन्द की सर ज़मीन बातिल फ़िर्क़ों की आमाजगाह बन कर रह गई। इन फ़िर्क़ों ने अंग्रेज़ की दी हुई इमदाद से अपने मदारिस और कॉलिज बनाए जहां येह लोग मुसलमानों को फ़िर्क़ों में बांट कर अंग्रेज़ों की हुकूमत को मुस्तह्कम करते रहे, और आज भी येही फ़िर्क़े अपने फ़िरंगी आक़ाओं की मदद से इक्तिदार में शामिल हैं। और तक़रीबन **95** फ़ीसद मुसलमान आज भी क़स्मपुर्सी का शिकार, मज़्लूमिय्यत की जीती जागती तस्वीर नज़र आते हैं। ग़रज़ मक्कार अंग्रेज़ ने अपना मक़्सद ह़ासिल कर लिया और मुसलमान कहलवाने वाले चन्द नाम निहाद मौलवियों को ख़रीद कर मुसलमानों में **बद अ़क़ीदगी** और **बद अ़मली** फैलाना शुरूअ़ कर दी।

इन बद अ़क़ीदा लोगों के अ़क़ाइद जो ख़ुद इन्हों ने अपनी किताबों में शाएअ़ किये कुछ इस त़रह़ से हैं :

बद अ़क़ीदा लोगों के अ़क़ाइद का ख़ुलासा

1 : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) झूट बोल सकता है। (बराहीने क़ातिआ़ सफ़्ह़ा, **6**)

2 : हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आख़िरी नबी नहीं हैं बल्कि आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के बा'द भी नबी के आने का इमकान है।

(तह़्ज़ीरुन्नास, स. **3**, **24**, **113**)

3 : हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का इ़ल्म शैत़ाने लईन के इ़ल्म से कम है। (बराहीने क़ातिआ़, स. **55**)

4 : हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का इ़ल्म ऐसा ही है जैसा बच्चों, पागलों, बल्कि जानवरों को होता है। (ह़िफ़्ज़ुल ईमान, स. **8**)

5 : हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को दीवार के पीछे का भी इ़ल्म नहीं। (बराहीने क़ातिआ़, स. **55**)

معاذ اللہ۔ معاذ اللہ۔ ثم معاذ اللہ۔ ولاحول ولاقوۃ الا باللہ

नोट : अस्ल कुतुब से इन अक़्वाल की नुक़ूल इसी किताब के आख़िरी सफ़हात पर मुलाहज़ा की जा सकती हैं।

इन अ़क़ाइद का बुरा होना तो हर किसी को मा'लूम ही है जब येह अ़क़ाइद अ़वाम ने सुने ते उ़लमाए किराम से इन के बारे में फ़तवा पूछा। उ़लमाए अहले सुन्नत ने इन अ़क़ाइद का जवाब दिया और बद अ़क़ीदा लोगों से तौबा का मुत़ालबा किया लेकिन येह तौबा करने पर राज़ी न हुवे बल्कि अपनी बद अ़क़ीदगी को छुपाने के लिये इन अ़क़ाइद की ऐसी तशरीह़ करने लगे जो अ़क़्ल व शरीअ़त के बिल्कुल ख़िलाफ़ थी। कई साल येही ह़ालत रही, कितनी ही मरतबा इन बद अ़क़ीदा लोगों को मुनाज़िरे के लिये दा'वत दी गई। लेकिन येह हमेशा भाग जाते, आख़िरे कार मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, शाह अह़मद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन्हें इन की कुफ़्रिय्या इ़बारतों की वजह से, काफ़िर क़रार दिया और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इस फ़तवे की तस्दीक़ अ़रबो अ़जम के सेंकड़ों उ़लमा ने भी की। देखिये **: हुस्सामुल ह़रमैन व अस्सवारिमुल हिन्दिय्या** वग़ैरहा।

इस के जवाब में इन बद अ़क़ीदा लोगों ने बहुत से मक्रो फ़रेब के जाल फेंके और शोर मचाया कि इमाम अह़मद रज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हमें ख़्वाह मख़्वाह काफ़िर क़रार दिया है। चुनान्चे इन बद अ़क़ीदा लोगों के मक्रो फ़रेब का पोल खोलने के लिये आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने किताब **"तम्हीदे ईमान"** तस्नीफ़ फ़रमाई। जिस में अ़वाम को इन के धोके से बचने की ताकीद फ़रमाई और बद अ़क़ीदा लोगों के ए'तिराज़ात के जवाबात भी दिये।

जाइज़ा

अब आइये अपने अ़क़ीदे को इन बद अ़क़ीदा मौलवियों से मह़फ़ूज़ रखने के लिये "**तम्हीदे ईमान**" का जाइज़ा लें। मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **तम्हीदे ईमान** में चार मरह़लों का ज़िक्र किया है। वोह मुन्दरिजए ज़ैल हैं।

1 : जो सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को गाली दे, ऐ़ब लगाए या उन की शान में कमी करे वोह क़त़्अ़न काफ़िर है।

2 : जो कोई इन के कुफ़्रिय्या कलाम को देख कर, सुन कर भी इन्हें काफ़िर न माने और बहाने बनाए। इन की दोस्ती, उस्ताज़ी, शागिर्दी का लिह़ाज़ करे वोह भी काफ़िर है।

3 : इन गुस्ताख़ों ने जो कुछ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के ह़बीब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के बारे में लिखा है उस के गुस्ताख़ाना होने में कोई शुबा नहीं।

4 : जो मक्रो फ़रेब और बहानेबाज़ी येह लोग करते हैं इस का कोई ए'तिबार नहीं वोह बहानेबाज़ी इन के कुफ़्र को नहीं मिटा सकती।

अब हम इन चार मराह़िल को उ़लमाए इस्लाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के अक़्वाल की रोशनी में मुख़्तसरन बयान करते हैं

मरह़ला नम्बर 1 और 2

1 : उ़लमाए अह़नाफ़ رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का फ़तवा

وَالْکَافِرُ بِسَبِّ نَبِیٍّ مِنَ الْاَنْبِیَاءِ فَاِنَّہٗ یُقْتَلُ وَلَایُقْبَلُ
تَوْبَتُہٗ مُطْلَقًا وَلَوْسَبَّ اللّٰہَ تَعَالٰی قُبِلَتْ لِاَنَّہٗ حَقُّ اللّٰہِ تَعَالٰی
وَالْاَوَّلُ حَقُّ عَبْدٍ وَمَنْ شَکَّ فِیْ عَذَابِہٖ وَ کُفْرِہٖ کَفَرَ۔

(علامہ علاؤالدین حصکفی "درمختار" جلد۳ص۴۰۰مطبوعہ مطبع عثمانیہ استنبول)

तर्जमा : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से किसी भी नबी عَلَيْهِ السَّلَام को गाली देने के सबब से काफ़िर होने वाले को क़त्ल किया जाएगा और उस की तौबा किसी भी तरह क़बूल नहीं की जाएगी और अगर उस ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को गाली दी होती (और तौबा करता तो) क़बूल कर ली जाती इस लिये कि येह **अल्लाह** तआ़ला का ह़क़ है (जो तौबा से मुआ़फ़ हो जाता है) और पहली बात (कि किसी नबी को गाली देना) ह़क़्क़ुल अ़ब्द है (या'नी बिग़ैर बन्दे के मुआ़फ़ किये ह़क़्क़ुल अ़ब्द मुआ़फ़ न होगा) और जो इस के (या'नी गाली देने वाले के) कुफ़्र और अ़ज़ाब में शक करे ख़ुद काफ़िर है।

2 : उ़लमाए मालिकिय्या رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का फ़त्वा

قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ سَحْنُوْنَ اَجْمَعَ الْعُلَمَاءُ عَلٰى اَنَّ شَاتِمَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم اَلْمُنْتَقِصَ لَهُ كَافِرٌ وَالْوَعِيْدُ جَارٍ عَلَيْهِ بِعَذَابِ اللّٰهِ لَهُ وَحُكْمُهُ عِنْدَ الْاُمَّةِ اَلْقَتْلُ وَمَنْ شَكَّ فِيْ كُفْرِهٖ وَ عَذَابِهٖ كَفَرَ۔

अ़ल्लामा इयाज़ बिन सह़नून मूसा अन्दलुसी मालिकी

("الشفاء" جلد۲ ص۱۹۰ مطبوعہ عبدالتواب اکیڈمی ملتان)۔

तर्जमा : सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सह़नून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तह़रीर फ़रमाया कि उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का इजमाअ़ है कि नबिय्ये अकरम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को गाली देने वाला, तौहीन करने वाला काफ़िर है और उस पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के अ़ज़ाब की वईद जारी है और इस की सज़ा तमाम उम्मत के नज़दीक क़त्ल है और जो उस के कुफ़्र और अ़ज़ाब में शक करे वोह ख़ुद काफ़िर है।

3 : उ़लमाए शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का फ़तवा

وَ قَدْ نَقَلَ اِبْنُ الْمُنْذَرِ اَلْاِتِّفَاقَ عَلٰى اَنَّ مَنْ سَبَّ النَّبِيَّ عليه السلام صَرِيْحًا وَجَبَ قَتْلُهٗ وَ نَقَلَ اَبُوْ بَكْرِ الْفَارْسِي اَحَدُ اَئِمَّةِ الشَّافِعِيَّةِ فِيْ كِتَابِ الْاِجْمَاعِ اَنَّ مَنْ سَبَّ النَّبِيَّ صلى الله تعالٰى عليه وسلم بِمَا هُوَ صَرِيْحٌ كُفْرٌ بِاِتِّفَاقِ الْعُلَمَاءِ فَلَوْ تَابَ لَمْ يَسْقُطْ عَنْهُ الْقَتْلُ لِاَنَّ حَدَّ قَذْفِهِ الْقَتْلُ وَ حَدُّ الْقَذْفِ لَا يَسْقُطُ بِالتَّوْبَةِ (فتح الباري ج ١٢ ص ٢٨١ دار نشرالكتب الإ سلاميه لاهور)

तर्जमा : और सय्यिदुना इब्ने मुन्ज़िर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नक़्ल किया है कि इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जिस ने हुज़ूरे अकरम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को खुले अल्फ़ाज़ में गाली दी उसे क़त्ल करना वाजिब है और शाफ़ेइय्या के एक इमाम सय्यिदुना अबू बक्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "**किताबुल इजमाअ़**" में नक़्ल फ़रमाया कि जिस ने खुले अल्फ़ाज़ में हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को गाली दी तो उस के कुफ़्र पर उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का इत्तिफ़ाक़ है और अगर वोह तौबा करे तो फिर भी क़त्ल उस पर से साक़ित़ न होगा (क़त्ल किया जाएगा) इस लिये कि नबिय्ये अकरम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर तोहमत की सज़ा क़त्ल है और तोहमत की सज़ा तौबा से साक़ित़ नहीं होती ।

4 : उ़लमाए ह़नाबिला رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का फ़तवा

وَ مَنْ سَبَّ اللّٰهَ تَعَالٰى كُفِّرَ سَوَاءٌ كَانَ مَازِحًا اَوْ جَادًّا كَذٰلِكَ مَنِ اسْتَهْزَئَ بِاللّٰهِ تَعَالٰى اَوْ بِاٰيَاتِهٖ اَوْ بِرُسُلِهٖ اَوْ بِكُتُبِهٖ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَ نَلْعَبُ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَ اٰيٰتِهٖ وَ رَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ۔

तर्जमा : और जिस ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को गाली दी वोह काफ़िर है ख़्वाह गाली मज़ाक़ में दी हो और इसी त़रह़ जिस ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का मज़ाक़ उड़ाया, या उस की आयतों का या उस के रसूलों عَلَيْهِمُ السَّلَام का या उस की किताबों का, जैसा कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का फ़रमान उन मुनाफ़िक़ों के बारे में है, जिन्हों ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्मे मुक़द्दस का मज़ाक़ उड़ाया और अगर तुम उन से पूछो कि उन्हों ने क्या कुफ़्र बका है ? तो येह ज़रूर कहेंगे कि हम तो मह़ज़ मज़ाक़ कर रहे थे । तुम फ़रमाओ कि ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस की आयतों और उस के रसूल का मज़ाक़ उड़ा रहे थे ? बहाने मत बनाओ तुम यक़ीनन ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो चुके हो । (المغنی ج۹ص۳۳دارالفکر بیروت)

इब्ने तैमिय्या की गवाही

यहां तक तो उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के फ़तवे आप ने पढ़े । अब वहाबिय्या के शैख़े कबीर इब्ने तैमिया की गवाही भी मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

وَ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ سَحْنُوْنِ اَجْمَعَ الْعُلَمَاءُ عَلٰى اَنَّ شَاتِمَ النَّبِيِّ عليه السلام وَ الْمُنْقِصَ لهٗ كَافِرٌ وَالْوَعِيْدُ جَارٍ عَلَيْهِ بِعَذَابِ اللّٰهِ لَهٗ وَ حُكْمُهٗ عِنْدَ الْاُمَّةِ الْقَتْلُ وَ مَنْ شَكَّ فِيْ كُفْرِهٖ وَ عَذَابِهٖ كَفَرَ وَ تَحْرِيْرُ الْقَوْلِ فِيْهِ اَنَّ السَّابَّ اِنْ كَانَ مُسْلِمًا فَاِنَّهٗ يُكَفَّرُ وَ يُقْتَلُ بِغَيْرِ خِلَافٍ وَ هُوَ مَذْهَبُ الْاَئِمَّةِ الْاَرْبَعَةِ وَ غَيْرِهِمْ۔

तर्जमा : मुह़म्मद बिन सह़नून رَحْمَةُاللهِ تَعالٰى عَلَيۡه ने फ़रमाया कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को गाली देने वाला और तौहीन करने वाला काफ़िर है और उस पर अ़ज़ाबे इलाही की वई़द आई है और इस मस्अले में तह़क़ीक़ येह है कि अगर गाली देने वाला मुसलमान है तो बिल इत्तिफ़ाक़ उसे काफ़िर क़रार दिया जाएगा और क़त्ल किया जाएगा और येही चारों आइम्मा رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى वग़ैरा का मज़हब है। (ص۴۔الصارم المسلول مطبوعہ نشر السنۃ ملتان)

तौहीन के अल्फ़ाज़ में निय्यत का ए'तिबार

प्यारे भाइयो ! बा'ज़ लोग कहते हैं कि येह तो ठीक है कि तौहीने ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) और तौहीने रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) करना कुफ़्र ही है लेकिन इन उ़लमाए देवबन्द की निय्यत तौहीन करना नहीं थी बल्कि इन की निय्यत उम्मत की इस्लाह़ करना थी वग़ैरा वग़ैरा।

प्यारे भाइयो ! अगर कोई शख़्स तौहीने ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) और तौहीने रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) करे या'नी ऐसी बात कहे जिस से तौहीन होती हो तो ज़ाहिरी मा'ना का ए'तिबार किया जाता है उस की निय्यत को नहीं देखा जाता। क्यूंकि अदब व तौहीन का ऐ'तिबार उ़र्फ़े आ़म पर होता है। बताइये क्या आप अपने वालिद साहि़ब या उस्ताद साहि़ब को ता'रीफ़ की निय्यत से "**गधा**" कह सकते हैं ? हरगिज़ नहीं क्यूंकि "**गधा**" कहना हमारी बोलचाल में तौहीन का लफ़्ज़ है। हां लफ़्ज़े "**शेर**" कहने से तौहीन नहीं होती क्यूंकि "**शेर**" उ़र्फ़ेआ़म में ता'रीफ़ के लिये बोला जाता है। बहर ह़ाल अगर आप कहें कि गधे से मेरी मुराद तो वालिद साहि़ब या उस्ताद साहि़ब को शरीफ़ आदमी कहना था। क्यूंकि गधा एक शरीफ़ जानवर है। या'नी मेरी निय्यत तौहीन करना नहीं बल्कि ता'रीफ़ करना थी तो आप का क़ौल नहीं माना जाएगा।

पता चला कि अच्छी निय्यत से भी तौहीन का कलिमा कहना तौहीन ही है चुनान्चे, अच्छी निय्यत से भी सरकार (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म को शैत़ान के इ़ल्म से कम बताना, या अच्छी निय्यत से हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्मे शरीफ़ को जानवरों, पागलों और बच्चों के बराबर बताना, या अच्छी निय्यत से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को झूटा कहना, यक़ीनन **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के ह़बीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तौहीन है। हम इस पर उ़लमाए इस्लाम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) के फ़तावा नक़्ल किये देते हैं :

अ़ल्लामा शामी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) फ़रमाते हैं :

اِنْ مَا كَانَ دَلِيْلَ الْاِسْتِخْفَافِ يُكَفَّرُ بِهٖ وَاِنْ لَمْ يَقْصُدِ الْاِسْتِخْفَافَ (علامہ ابن عابدین شامی ردالمحتار جلد۳،ص۲۹۲،مطبع،عثمانیہ استنبول)

तर्जमा : "अगर किसी लफ़्ज़ में तौहीन की दलील हो तो उसे काफ़िर कहा जाएगा अगर्चे कहने वाला तौहीन का इरादा न करे।"

क़ाज़ी इ़याज़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) फ़रमाते हैं :

اَنْ يَّكُوْنَ الْقَائِلُ لِمَا قَالَ فِيْ جِهَتِهٖ ا غَيْرَ قَاصِدٍ لِلسَّبِّ وَ الْاِزْدِرَاءِ وَ لَا مُعْتَقِدٌ لَهٗ وَلٰكِنَّهٗ كَلَّمَ فِيْ جِهَتِهٖ بِكَلِمَةِ الْكُفْرِ مِنْ لَعْنِهٖ اَوْ سَبِّهٖ اَوْ تَكْذِيْبِهٖ اَوْ اِضَافَةِ مَا لَا يَجُوْزُ عَلَيْهِ اَوْ نَفْيِ مَا يَجِبُ لَهٗ مِمَّا هُوَ فِيْ حَقِّهٖ نَقِيْصَةٌ مِثْلُ نَسْبِ اِلَيْهِ اِتْيَانَ كَبِيْرَةٍ اَوْ مُدَاهَنَةً فِيْ تَبْلِيْغِ الرِّسَالَةِ اَوْ فِيْ حُكْمِ بَيْنَ النَّاسِ اَوْ يَغُضُّ مِنْ مَّرْتَبَتِهٖ اَوْ شَرَفِ نَسَبِهٖ اَوْ وُفُوْرِ عِلْمِهٖ اَوْ زُهْدِهٖ اَوْ يُكَذِّبُ بِمَا اشْتَهَرَ مِنْ اُمُوْرٍ اَخْبَرَ بِهَا تَوَاتَرَ الْخَبَرُ بِهَا عَنْ قَصْدِ رَدِّ خَبَرِهٖ اَوْ يَاْتِيْ بِسَفْهِهٖ مِنَ الْقَوْلِ اَوْ قَبِيْحٍ مِنَ الْكَلَامِ وَ نَوْعٍ مِنَ السَّبِّ فِيْ جِهَتِهٖ وَ اِنْ ظَهَرَ بِدَلِيْلِ حَالِهٖ اَنَّهٗ لَمْ

يَتَعَمَّدُ ذَمَّهٗ وَ لَمْ يَقْصُد سَبَّهٗ اَمَّا لِجِهَالَةٍ حَمَلَتهٗ عَلٰى مَا قَالَهٗ اَوْ لِفَجْرٍ اَوْ سُكْرٍ اَضْطَرَّهٗ اِلَيهِ اَوْ قِلَّةِ مُرَاقَبَةٍ اَوْ ضَبطِ لِسَانِهٖ وَ عَجْرُفَةٍ وَ تَهَوُّرٍ فِي كَلَامِهٖ فَحُكْمُ هٰذَا الْوَجْهِ حُكْمُ الْاَوَّلِ لُقَتْلُ دُوْنَ تَلَعْثُمٍ اِذْ لَا يُعْذَرُ اَحَدٌ فِي الْكُفْرِ بِالْجِهَالَةِ وَ لَابِدَعْوٰى زَلَلِ اللِّسَانِ وَ لَا بِشَيْءٍ مِمَّا ذَكَرْنَاهُ اِذَا كَانَ عَقْلُهٗ سَلِيْمًا اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّ بِالْاِيْمَانِ۔

(الشفاء،جلد۲،ص۲۰۴،۲۰۳مطبوعہ،عبدالتواب اکیڈمی ملتان)

तर्जमा : जो शख़्स नबिय्ये अकरम (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में कोई बात करे और उस का इरादा न गाली देने का हो न आप की तौहीन का, और न वोह उस का यक़ीन करता हो लेकिन वोह नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में ऐसा कुफ़्रिय्या कलिमा कहे जिस में ला'नत या गाली हो, या आप की तक्ज़ीब हो, या आप की त़रफ़ किसी ऐसी चीज़ की निस्बत करे जो नाजाइज़ हो, या उस चीज़ की नफ़ी करे जो आप के लिये वाजिब (ज़रूरी) हो, या वोह बात कहे जो आप के लिये नक़्स (ऐ़ब) हो या आप की त़रफ़ गुनाहे कबीरा की निस्बत करे, या तबलीग़े रिसालत में कुछ छुपाने की निस्बत करे या आप का मर्तबा व शरफ़ नसब या आप के इ़ल्म की अ़ज़्मत या आप के ज़ोहद में कमी बताए या आप के जो अवसाफ़े मश्हूरा और मुतवातिरा हैं उन्हें झुटलाए, या नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में कोई नाज़ैबा बात कहे जो गाली की क़िस्म से हो, अगर्चे उस के ह़ाल से येह ज़ाहिर हो कि वोह आप की तौहीन नहीं करता न उस पर ए'तिमाद करता है, या उस ने जहालत की वजह से कहा हो, या रन्जो ग़म की बिना पर या नशे की वजह से कहा हो, या ज़बान की

तेज़ी की वजह से मुंह से निकल गया हो, या ग़ुस्से में ऐसा कहा, तो ऐसे शख़्स का बेशक येह हुक्म है कि उसे क़त्ल कर दिया जाए क्यूंकि जहालत का बहाना कुफ़्र बकने में नहीं माना जाएगा, न ज़बान की तेज़ी की वजह से कुफ़्र निकलने का दा'वा न कोई और सबब जो बयान हुवे (मसलन : ग़ुस्सा, रन्जो ग़म, वग़ैरा) जब कि उस की अ़क़्ल दुरुस्त हो सिवाए उस शख़्स के जिस को येह कहने पर मजबूर कर दिया गया हो (या'नी जान से मार देने की धमकी वग़ैरा हो) अलबत्ता उस का दिल ईमान पर मुतमइन हो।

अ़ल्लामा ख़फ़ाजी ह़नफ़ी और मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने इस इबारत को दुरुस्त क़रार दिया और येही फ़तवा दिया। देखिये :

(نسیم الریاض جلد۴،ص ۳۸۷،۳۸۸، دارالفکر بیروت نیز ملاعلی قاری ہروی شرح شفاء علی ہامش نسیم الریاض جلد۴،ص ۳۸۷،۳۸۸، دارالفکر)

अब ज़रा **अन्वर कश्मीरी** की सुनिये (मौसूफ़ दारुल उ़लूम देवबन्द के अकाबिर उ़लमा में से हैं)

1 : اَلْمَدَارُ فِي الْحُكْمِ بِالْكُفْرِ عَلَى الظَّوَاهِرِ وَ لَا نَظَرَ لِلْمَقْصُوْدِ وَالنِّيَّاتِ وَ لَا نَظَرَ لِقَرَائِنِ حَالِهٖ (اکفارالملحدین ص ۷۳)

तर्जमा : कुफ़्र का हुक्म लगाने का दारो मदार ज़ाहिरी (लफ़्ज़ वग़ैरा) पर है कहने वाले के मक़्सद व निय्यत और उस के ह़ाल व क़राइन का ए'तिबार नहीं किया जाएगा।

2 : इसी में है : وَ قَدْ ذَكَرَ الْعُلَمَاءُ اَنَّ التَّهَوُّرَفِي عَرْضِ الْاَنْبِيَاءِ وَ اِنْ لَّمْ يَقْصُدْ كُفْرٌ (ص ۸۶)

तर्जमा : "उ़लमा बयान फ़रमाते हैं कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान में गुस्ताख़ी **कुफ़्र** है ख़्वाह कहने वाला गुस्ताख़ी का इरादा न करे।"

फ़तवा गंगोही

कुछ इसी त़रह़ का फ़तवा गंगोही साह़िब ने भी सादिर फ़रमाया है। मौसूफ़, अपनी किताब फ़तावा रशीदिय्या कामिल मुबव्वब (स. 71-72 मत़बूआ मुह़म्मद सईद एन्ड सन्ज़, कराची) पर रक़म त़राज़ हैं :

किसी ने सुवाल किया :......सुवाल : "जो शाइ़र अपने अश्आ़र में आं ह़ज़रत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को सनम या बुत या आशूबे तुर्क (ब मा'ना तुर्क मह़बूब) फ़ित्नए अ़रब (ब मा'ना अ़रबी मह़बूब) बांधते हैं (कहते हैं) इस का क्या हुक्म है? (بينوا وتوجروا)

जवाब : "येह अल्फ़ाज़े क़बीह़ बोलने वाला अगर्चे मा'नए ह़क़ीक़िय्या ब मा'नए ज़ाहिरा, ख़ुद मुराद नहीं रखता बल्कि मा'नए मजाज़ी मुराद लेता है ता'रीफ़ कर रहा है मगर ताहम ईहामे इहानत (गुस्ताख़ी के वहम) व अज़िय्यते ज़ाते पाके ह़क़ तआ़ला और जनाबे रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ख़ाली नहीं। येही सबब है कि रब्बे ह़क़ तआ़ला ने लफ़्ज़ "راعنا" बोलने से सह़ाबा को मन्अ़ फ़रमाया "انظرنا" का लफ़्ज़ अ़र्ज़ करना इरशाद फ़रमाया। ह़ालांकि मक़्सूदे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن हरगिज़ वोह मा'ना कि जो यहूद मुराद लेते थे न था, मगर ज़रीअ़ए शौख़ी यहूद का और मुहिम अज़िय्यत व गुस्ताख़िये जनाबे रिसालत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का था लिहाज़ा हुक्म हुवा "لَاتَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا"

और अ़ला हाज़ा ह़ज़राते सह़ाबा का पुकार कर बोलना मजलिसे शरीफ़ आं ह़ज़रत में बवजहे अज़िय्यत व गुस्ताख़ी (مَعَاذَ اللّٰه) न था बल्कि ह़स्बे आ़दत व त़ब्अ़ था मगर चूंकि अज़िय्यत व बे ए'तिनाई शाने वाला का इस में अब्हाम था, येह हुक्म हुवा।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ (الحجرات، ٢/٢٦)

तर्जमा : "ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ों को नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की आवाज़ से ऊंचा मत करो और इन से ऐसे चीख़ के बात मत करो जैसे तुम आपस में करते हो, कहीं तुम्हारे आ'माल ज़ाएअ़ हो जाएं और तुम्हें शुऊ़र तक न हो।"

क्या साफ़ हुक्म है कि अगर्चे तुम्हारा क़स्द गुस्ताख़ी नहीं मगर इस फे'ल से हब्त़ (या'नी बरबाद) आ'माल तुम्हारे हो जावेंगे। और तुम को ख़बर भी न होगी और ऐसा ही ह़दीस में تكنّى بكنية ابى القاسم (अबी क़ासिम, कुन्यत रखना) आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ह़याते शरीफ़ा में मन्अ़ हो गई थी बवजहे अज़िय्यते ज़ाते सरवरे आ़लम के, कोई किसी दूसरे शख़्स को पुकारेगा तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) येह समझ कर कि कोई मुझ को (बुलाने का) इरादा करता है इल्तिफ़ात (तवज्जोह) फ़रमाएंगे ("अबुल क़ासिम" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कुन्यत है) हालांकि नादी (पुकारने वाला) हरगिज़ निय्यते रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) नहीं रखता.........

अल ह़ासिल, इन अल्फ़ाज़ में गुस्ताख़ी और अज़िय्यते ज़ाहिरा है, पस इन अल्फ़ाज़ का बकना कुफ़्र होगा। इन कलिमाते कुफ़्र के लिखने वाले को मन्अ़ करना शदीद चाहिये, और मक़्दूर हो (कुदरत हो) अगर बाज़ न आवे तो क़त्ल करना चाहिये"

गंगोही साहिब का फ़तवा ख़त्म हुवा। इस फ़तवे से पता चला कि किसी कलाम में अगर गुस्ताख़ी का हल्का सा वहम भी हो तब भी वोह कुफ़्र होगा। लेकिन येह अ़जब तमाशा है कि जब खुद गंगोही साहिब ने सरकार (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी की तो चाहिये तो येह था कि फ़ौरन तौबा कर लेते

मगर अफ़्सोस ! कि तौबा तो नहीं की अलबत्ता येह साबित करने की कोशिश करने लगे कि मेरा कलाम गुस्ताख़ी नहीं। ह़ालांकि इन के कलाम में गुस्ताख़ी का वहम नहीं बल्कि खुल्लम खुल्ला गुस्ताख़ी मौजूद है जैसा कि आइन्दा हम साबित करेंगे। पस साबित हुवा कि अगर कोई शख़्स ऐसा कलिमा कहे जिस में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) या हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तौहीन होती हो, काफ़िर कहा जाएगा और उस की निय्यत व इरादा न देखा जाएगा।

मरह़ला 3
इन गुस्ताख़ों की इबारतें गुस्ताख़ाना हैं

अब आइये उन ख़बीस, नापाक व मलऊ़न इबारतों की त़रफ़ जिन की वजह से अ़रबो अ़जम के सेंकड़ों उ़लमा رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی ने इन के कहने वालों को काफ़िर क़रार दिया। अगर आप ईमान की आंखों से देखेंगे तो आप को इन की इबारतों के गुस्ताख़ाना होने के बारे में कोई शक नहीं रहेगा।

हमें मा'लूम है कि हुज़ूरे पुरनूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को इन के रब तआ़ला ने तमाम क़ुरआन का इ़ल्म सिखा दिया और क़ुरआने पाक में हर छोटी बड़ी, छुपी व ज़ाहिर शै का इ़ल्म है अब ज़रा बताइये कि क्या किसी ऐसी मख़्लूक़, जिस पर क़ुरआन नाज़िल नहीं हुवा उस का इ़ल्म हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म के बराबर हो सकता है ? नहीं, हरगिज़ नहीं।

तो अब जो शख़्स किसी "**दूसरे**" को हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा इ़ल्म वाला बताए उस के बारे में फ़तवा मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

مَنْ قَالَ فُلَانٌ اَعْلَمُ مِنْهُ فَقَدْ عَابَهٗ فَحُكْمُهٗ حُكْمُ السَّابِ(نسیم الریاض)

तर्जमा : जिस ने कहा : "फुलां को हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा इल्म है" तो उस ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ऐ़ब लगाया और उस की वोही सज़ा है जो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को गालियां बकने वाले के बारे में है।"

या'नी वोह काफ़िर है, क़त्ल किया जाएगा। जो उस के काफ़िर होने में शक करे खुद काफ़िर है। अब अगर कोई येह कहे कि مَعَاذَ اللّٰه शैत़ान का इल्म हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा है तो उस के काफ़िर होने में किसी को कोई शक नहीं हो सकता, लेकिन आप ह़ैरत करेंगे कि येही बात **1304** हि./**1887** ई. में मौलवी ख़लील अह़मद अम्बेठवी ने अपनी किताब "**बराहीने क़ाति़आ़**" (जो कि मौलवी रशीद अह़मद गंगोही की तस्दीक़ के साथ शाए़अ़ हुई) के स.**55** पर तह़रीर की। ज़रा इस नापाक इ़बारत को ईमान की आंखों से पढ़िये।

इ़बारत नम्बर 1

"शैत़ान व मलकुल मौत का ह़ाल देख कर इल्मे मुह़ीत़े ज़मीन का फ़ख़्रे आ़लम को ख़िलाफ़े नुसूसे क़त़इय्या के बिला दलील मह़्ज़ क़ियासे फ़ासिदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का ह़िस्सा है? शैत़ान व मलकुल मौत को येह वुस्अ़त, नस्स से साबित हुई फ़ख़्रे आ़लम की वुस्अ़त इल्म की कौन सी नस्से क़त़ई है?" (براہین قاطعہ ص ۵۵ مطبوعہ کتب خانہ امدادیہ دیوبند یوپی انڈیا) ولاحول ولاقوۃ الا باللہ۔

हमारे ज़हीन क़ारी इस नापाक इ़बारत में बयान कर्दा कुफ़्रिय्यात को समझ गए होंगे लेकिन हम त़लबा व अ़वाम की आसानी के लिये इस इ़बारत के मुश्किल अल्फ़ाज़ की वज़ाह़त कर रहे हैं।

इल्मे मुह़ीत़ ज़मीन का	: या'नी सारी ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे का इल्म
फ़ख़्रे आ़लम	: या'नी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

खिलाफ़े नुसूसे क़त़इय्या के : या'नी क़ुरआनो ह़दीस के वाज़ेह़ अह़कामात के खिलाफ़
क़ियासे फ़ासिदा : या'नी ग़लत़ अन्दाज़ा। ग़लत़ क़ियास
नस्स : या'नी क़ुरआनो ह़दीस की इ़बारत या हुक्म

ज़रा इन अल्फ़ाज़ को इस नापाक इ़बारत में रख कर पढ़ें।

"शैत़ान व मलकुल मौत का ह़ाल देख कर सारी ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे का इ़ल्म हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये बिग़ैर किसी दलील के मह़ज़ ग़लत़ क़ियास से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का ह़िस्सा है ? शैत़ान व मलकुल मौत को (इ़ल्म की) येह वुस्अ़त क़ुरआन व ह़दीस से साबित हुई हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म की इतनी वुस्अ़त पर क़ुरआनो ह़दीस की कौन सी इ़बारत है ?"

या'नी कहने का मत़लब येह कि :

(1) हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बारे में येह कहना कि आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे का इ़ल्म है शिर्क है। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

(2) शैत़ान व मलकुल मौत को ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे का इ़ल्म ह़ासिल है, और येह क़ुरआन व ह़दीस से साबित है, (**अल्लाह** ही बेहतर जानता है कि इस गुस्ताख़ को शैत़ान के बारे में इतने इ़ल्म की नस्से क़त़ई कहां नज़र आई ?)

(3) गंगोही का कहना है कि क़ुरआनो ह़दीस में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म के वसीअ़ होने के बारे में कोई दलील मौजूद नहीं। इस लिये येह कहना कि "हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام शैत़ान व मलकुल मौत से अफ़्ज़ल हैं तो शैत़ान और मलकुल मौत को चूंकि ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे का इ़ल्म है इस लिये हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को भी है" येह बात क़ियासे फ़ासिद या'नी ग़लत़ क़ियास है।

(4) साबित हुवा कि मलकुल मौत व शैतान का इल्म हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इल्म से ज़ियादा है। مَعَاذَ الله (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ)

प्यारे भाइयो, आप पढ़ चुके हैं कि जो किसी को इल्म में हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा कहे वोह काफ़िर है। देखिये ! उस शख़्स ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के महबूब, दानाए ग़ुयूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इल्म से ज़ियादा शैतान के इल्म का इक़रार किया और येह ऐसा शदीद कुफ़्र है कि जो इसे न माने वोह भी काफ़िर है। क्यूंकि इस अ़ज़ीम बारगाह में कोई ऐसा कलिमा बोलना जिस से तौहीन का वहम ही होता हो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हां क़ाबिले क़बूल नहीं जबकि यहां तो **अल्लाह** के दुश्मन शैताने लईन को आक़ाए दो आ़लम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा इल्म वाला बताया जा रहा है। नीज़ ज़रा तमाशा देखिये कि (बक़ौले गुस्ताख़) अगर ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे का इल्म शैतान के लिये मानो तो येह क़ुरआनो ह़दीस से साबित है और अगर इतना ही इल्म हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये माना जाए तो शिर्क ? ह़ालांकि इल्म की इतनी वुस्अ़त जब हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये मानना शिर्क है तो शैतान के लिये भी मानना शिर्क होना चाहिये। कि जो चीज़ मख़्लूक़ में किसी एक के लिये मानना शिर्क हो वोह दूसरे के लिये मानना भी यक़ीनन शिर्क ही है क्यूंकि **अल्लाह** के साथ शिर्क के मुआ़मले में तमाम मख़्लूक़ात बराबर हैं किसी की कोई तख़्सीस नहीं कि फ़ुलां को मिलाओ तो शिर्क है और फ़ुलां को मिलाओ तो शिर्क नहीं। ऐसा हरगिज़ नहीं। और फिर जब इन ह़ज़रात से तौबा का मुत़ालबा किया गया तो राहे फ़िरार इख़्तियार कर ली और इस का जवाब न दिया। अफ़्सोस ! कि मौसूफ़ अपने कुफ़्र से तौबा किये बिग़ैर ही दारे फ़ानी से कूच कर गए लेकिन आज इन के पैरूकारों को ग़ैर जानिबदार रह कर सोचना चाहिये और मौसूफ़ की ह़िमायत में अपने ईमान को दाव पर नहीं लगाना चाहिये।

प्यारे भाइयो ! मुसलमानों का मुत्तफ़िक़ा अ़क़ीदा है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को अपने ला महदूद इल्मे गै़ब से बा'ज़ इल्मे गै़ब अ़ता फ़रमाया । जैसा कि कु़रआने पाक में इरशाद है :

وَ مَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ (سورۃ التکویر آیت ۲۴)

तर्जमा : "और येह नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) गै़ब बताने में बुख़्ल नहीं फ़रमाते ।"

अलबत्ता हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इस बा'ज़ इल्मे गै़ब के जानने में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के मोह़ताज हैं और हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का येह बा'ज़ इल्मे गै़ब, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के इल्म के बराबर हरगिज़ हरगिज़ नहीं ! बल्कि येह "बा'ज़ इल्मे गै़ब" **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के इल्म के मुक़ाबले में इतना भी नहीं जितना कि करोड़ों समन्दरों के मुक़ाबले में एक क़त़रा । हां ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बा'द हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का इल्म तमाम मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा है और मख़्लूक़ात में शैत़ान व मलकुल मौत भी शामिल हैं लिहाज़ा हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इन से भी ज़ियादा इल्म वाले हैं । यहां तक कि दीगर मख़्लूक़ का इल्म हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे समन्दरों के मुक़ाबले में एक क़त़रा ।

प्यारे भाइयो ! इन गुस्ताख़ों की गुस्ताख़ियां बढ़ती ही चली गईं यहां तक कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इस बा'ज़ इल्मे गै़ब पर त़ा'न किया गया बल्कि एक गुस्ताख़ ने तो ऐसी शदीद नापाक इ़बारत हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तौहीन में लिखी जिसे पढ़ कर आप का दिल शिद्दते ग़ज़ब से ख़ून के आंसू रोने लगेगा । उस गुस्ताख़ की इ़बारत के मुश्किल अल्फ़ाज़ का तर्जमा क़ौसैन (bracket) में दर्ज कर रहे हैं, लिखता है ।

इबारत नम्बर 2

"आप की ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे ग़ैब का हुक्म किया जाना अगर बक़ौले ज़ैद सह़ीह़ हो (या'नी हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के बारे में येह अ़क़ीदा कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया है) इस ग़ैब से मुराद बा'ज़ ग़ैब है या कुल ग़ैब, अगर बा'ज़ उ़लूमे ग़ैबिय्या (ग़ैबी उ़लूम) मुराद हैं तो इस में हुज़ूर ही की क्या तख़्सीस है ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद, अ़म्र बल्कि हर सबी (बच्चे), मजनून (पागल) बल्कि जमीअ़ (तमाम) ह़ैवानात व बहाइम (जानवरों) के लिये भी ह़ासिल है।"

(ह़िफ़्ज़ुल ईमान, स. **8**, मुसन्निफ़ : अशरफ़ अ़ली थानवी)

इस मलऊ़न कलाम को समझना बिल्कुल दुश्वार नहीं। आ़म समझ बूझ रखने वाला भी आसानी से समझ सकता है कि इस गुस्ताख़ के कहने के मुत़ाबिक़ बा'ज़ इल्मे ग़ैब सिर्फ़ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ही को नहीं बल्कि ऐसा कुछ इल्म तो (مَعَاذَ اللّٰہ) बच्चों, पागलों और जानवरों को भी ह़ासिल है। गोया बक़ौले गुस्ताख़ तमाम जानवर, जिन में गधे, कुत्ते और ख़िन्ज़ीर भी शामिल हैं, और पागल भी इल्म की बा'ज़िय्यत में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के बराबर हो गए। चुनान्चे, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को अगर बा'ज़ इल्मे ग़ैब मिला भी है तो इस में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का क्या कमाल व ख़ुसूसिय्यत? क्यूंकि इसी त़रह़ "कुछ न कुछ इल्मे ग़ैब" तो......., को भी ह़ासिल है। (مَعَاذَ اللّٰہ)

ह़ालांकि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को **अल्लाह** तआ़ला ने जो बा'ज़ इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया उस का अन्दाज़ा लगाना इन्सान के बस से बाहर है, इस बा'ज़ इल्मे ग़ैब की वुस्अ़त की एक झलक मुलाह़ज़ा हो।

इल्मे ग़ैब के मुतअ़ल्लिक़ चन्द दलाइल

प्यारे भाइयो! इस बात को हर मुसलमान जानता और मानता है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की आख़िरी किताब क़ुरआने

मजीद है और कुरआने पाक में हर शै का बयान है। खुद **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) कुरआने पाक के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ (الانعام/٥٩)

"और कोई खुश्क व तर चीज़ ऐसी नहीं जो कुरआन में न हो।" पता चला कि कुरआने अ़ज़ीम में हर शै का बयान मौजूद है। और येह बात भी हर मुसलमान जानता और मानता है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने सारा कुरआने पाक अपने प्यारे ह़बीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को सिखाया।

चुनान्चे, मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को पूरे कुरआने पाक का इ़ल्म ह़ासिल है और कुरआन में छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बात का बयान मौजूद है पस साबित हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को हर छोटी व बड़ी बात का इ़ल्म **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने अ़ता फ़रमाया येह बात हम अपनी त़रफ़ से नहीं कह रहे हैं बल्कि खुद साह़िबे कुरआने पाक मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इरशाद फ़रमा रहे हैं। देखिये बुख़ारी शरीफ़ किताबुल ए'तिसाम बिल किताब व सुन्नत।

قَامَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَذَكَرَ السَّاعَةَ وَ ذَكَرَ اَنَّ بَيْنَ يَدَيْهَا اُمُوْرٌ عِظَامٌ ثُمَّ قَالَ مَا مِنْ رَجُلٍ يُحِبُّ اَنْ يَّسْأَلَ عَنْ شَيْءٍ فَلْيَسْئَلْ عَنْهُ فَوَ اللّٰهِ لَا تَسْئَلُوْنِيْ عَنْ شَيْءٍ اِلَّا اَخْبَرْتُكُمْ مَا دُمْتُ فِيْ مَقَامِيْ هٰذَا فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ اَيْنَ مَدْخَلِيْ قَالَ النَّارُ فَقَامَ عَبْدُ اللّٰهِ ابْنُ حُذَافَةَ فَقَالَ مَنْ اَبِيْ قَالَ اَبُوْكَ حُذَافَةُ ثُمَّ كَثُرَ اَنْ يَّقُوْلَ سَلُوْنِيْ سَلُوْنِيْ..........

हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मिम्बर पर खड़े हुवे और क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया, और बताया कि इस से पहले बड़े बड़े उमूर होंगे, फिर फ़रमाया जो शख़्स मुझ से जो बात भी पूछना चाहे पूछ ले। खुदा की क़सम ! जब तक मैं यहां खड़ा हूं तुम मुझ से

जिस चीज़ के बारे में भी पूछोगे मैं तुम्हें उस का जवाब ज़रूर दूंगा, चुनान्चे, एक (मुनाफ़िक़) शख़्स खड़ा हुवा और पूछा : मेरा ठिकाना कहां है? फ़रमाया : जहन्नम में....फिर अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा खड़े हुवे, अ़र्ज़ किया : मेरा (अस्ली) बाप कौन है" फ़रमाया : हुज़ाफ़ा। फिर बार बार फ़रमाते रहे "पूछो पूछो"। इस की मिस्ल ह़दीस इमामे मुस्लिम ने अपनी किताब (मुस्लिम शरीफ़) में नक़्ल फ़रमाई है।

देखिये ! जन्नत में ठिकाना होगा कि जहन्नम में ! इस का पता तो क़ियामत के दिन चलेगा, आज येह बात ग़ैब है, लेकिन हमारे आक़ा व मौला (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इस की ख़बर दी और क्यूं न हो कि बज़ाते ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं :

اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ قَدْ رَفَعَ لِيَ الدُّنْيَا فَاَنَا اَنْظُرُ اِلَيْهَا وَ اِلٰى مَا

هُوَ كَائِنٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كَاَنَّمَا اَنْظُرُ اِلٰى كَفِّيْ هٰذِهٖ۔

तर्जमा : बेशक अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने मेरे सामने दुन्या को रख दिया है पस मैं इस की त़रफ़ और जो कुछ इस में क़ियामत तक होने वाला है उसे ऐसे देख रहा हूं जैसा अपने हाथ की इस हथेली को।

(مجمع الزوائد کتاب علامات النبوۃ/الباب ۳۳)

बेशक हमारे आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने जो बा'ज़ इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाया है उस की हुदूद मुतअ़य्यन करना क़ुव्वते बशरी से बाहर है। देखिये : "बुख़ारी शरीफ़ किताब बदउल ख़ल्क़" में कैसा साफ़ बयान मौजूद है ! सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं :

قَامَ فِيْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ مَقَامًا فَاَخْبَرَنَا عَنْ بَدْءِ الْخَلْقِ حَتّٰى

دَخَلَ اَهْلُ الْجَنَّةِ مَنَازِلَهُمْ وَ اَهْلُ النَّارِ مَنَازِلَهُمْ حَفِظَ ذٰلِكَ مَنْ

حَفِظَهٗ وَ نَسِيَ مَنْ نَسِيَهٗ

तर्जमा : "हमारे दरमियान रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) खड़े हुवे और हमें मख़्लूक़ात की पैदाइश (इब्तिदा) के बारे में बताया। यहां तक कि जन्नती अपने ठिकानों पर और दोज़ख़ी अपने ठिकानों पर पहुंच गए इसे जिस ने याद रखा सो याद रखा और जो भूल गया सो भूल गया।" (صحیح البخاری کتاب بدء الخلق)

पता चला कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को जब से मख़्लूक़ बनी उस वक़्त से ले कर आइन्दा क़ियामत तक के वाक़िआत की ख़बर दे दी येह हमारे आक़ा व मौला (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को अ़ता कर्दा "**बा'ज़ इल्मे ग़ैब**" की एक झलक है। मिश्कात बाब फ़ज़ाइले सय्यिदुल मुर्सलीन (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) में इमाम मुस्लिम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से ब रिवायते सौबान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) है اِنَّ اللّٰہَ زَوٰی لِیَ الْاَرْضَ فَرَأَیْتُ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَ مَغَارِبَھَا۔

तर्जमा : बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने मेरे लिये ज़मीन को समेट दिया है मैं ने इस के मशरिक़ों और मग़रिबों को देख लिया। (مشکوٰۃ المصابیح باب فضائل سید المرسلین ﷺ) अब ज़रा आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के "**बा'ज़ इल्मे ग़ैब**" की वुस्अ़तों पर एक और गवाही, जलीलुल क़द्र सहाबी अबू ज़र गिफ़ारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से सुनिये।

لَقَدْ تَرَکْنَا رَسُوْلُ اللّٰہِ وَ مَا یُحَرِّکُ طَائِرٌ جَنَاحَیْہِ اِلَّا ذَکَرَنَا مِنْہُ عِلْمًا

तर्जमा : हम को हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इस ह़ाल पर छोड़ा कि कोई परन्दा अपने पर भी नहीं हिलाता मगर हमें उस का इल्म बता दिया। (مسند امام احمد بن حنبل مسند الأنصار ، براويت أبي ذرالغِفَاري)

इसी बा'ज़ इल्मे ग़ैब की वुस्अ़त का बयान करते हुवे सय्यिदुना इमाम बूसैरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) क़सीदा बुर्दा शरीफ़ में अ़र्ज़ करते हैं :

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَ ضَرَّتَهَا وَ مِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ

"और बेशक दुन्या व आख़िरत आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही के करम से है और लौहो क़लम का इ़ल्म आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के उ़लूम में से एक हिस्सा है।"

इस शे'र की शर्ह़ में सय्यिदुना इब्राहीम हैजूरी फ़रमाते हैं :

فَاِنْ قِيْلَ اِذَا كَانَ عِلْمُ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ بَعْضَ عُلُوْمِهٖ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَمَا الْبَعْضُ الْاٰخَرُ اُجِيْبَ بِاَنَّ الْبَعْضَ الْاٰخَرَ هُوَ مَا اَخْبَرَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْ اَحْوَالِ الْاٰخِرَةِ لِاَنَّ الْقَلَمَ اَنَّمَا كَتَبَ فِى اللَّوْحِ مَا هُوَ كَائِنٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ۔

तर्जमा : अगर कहा जाए कि जब लौहो क़लम का इ़ल्म हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म का एक छोटा सा हिस्सा है तो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का बाक़ी इ़ल्म किस के बारे में है ? (क्यूंकि लौहो क़लम में पूरी दुन्या के अव्वलीनो आख़िरीन के ह़ालात लिख दिये हैं तो अब बाक़ी क्या बचा ?) इस का जवाब येह दिया जाएगा कि वोह बाक़ी उ़लूम आख़िरत के बा'ज़ ह़ालात से मुतअ़ल्लिक़ हैं जिस की ख़बर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को दी है क्यूंकि लौहो क़लम ने तो सिर्फ़ क़ियामत तक का इ़ल्म ही लिखा है (इस के बा'द आख़िरत के मुआ़मलात लौह़ में नहीं हैं, लेकिन इन के बा'ज़ मुआ़मलात का इ़ल्म भी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को अ़त़ा हुवा।)

प्यारे भाइयो ! येह जो कुछ लिखा बत़ौरे नुमूना है और उन दलाइल का एक फ़ीसद भी नहीं जो शर्क़ो ग़र्ब के उ़लमाए मुतक़द्दिमीन व मुतअख़्ख़िरीन ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्मे ग़ैब शरीफ़ की वुस्अ़त पर तह़रीर फ़रमाए। तफ़्सील के लिये देखें : **जाअल ह़क़, ख़ालिसुल ए'तिक़ाद** और **अद्दौलतुल मक्किय्या** वग़ैरहा।

प्यारे भाइयो ! अगर इन्साफ़ से देखें तो इतना कुछ इत्मीनाने क़ल्ब के लिये काफ़ी है और येह तो अहले ईमान की गवाहियां थीं, ह़ालांकि येह गुस्ताख़ जिन का तज़्किरा हो रहा है, जब तक अंग्रेज़ के हाथों बिके न थे उस वक़्त येही कुछ मानते थे बल्कि किताबों में लिखते थे। मसलन रशीद अह़मद गंगोही "**लत़ाइफ़े रशीदिय्या**" में स. 27 पर लिखता है : "अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हरदम (हर वक़्त (मुशाहदए उमूरे ग़ैबिय्या (ग़ैबी उमूर का मुशाहदा) और तयक़्क़ुज़ (**अल्लाह** के दरबार में ह़ाज़िर होना) मयस्सर रहता है।

كَمَاقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لَوْتَعْلَمُوْنَ مَا اَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيْلاً وَ لَبَكَيْتُمْ كَثِيْرًا

(**तर्जमा :** अगर तुम वोह जानते जो मैं जानता हूं तो तुम कम हंसते और ज़ियादा रोते) और फ़रमाया اِنِّي اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ (मैं वोह देखता हूं जो तुम नहीं देखते)" (अन्वारुल ग़ैबिय्या, स. 32)

नीज़ देवबन्दियों के "**मायए नाज़ इमाम**" अशरफ़ अ़ली थानवी तक्मीलुल यक़ीन (मत़्बूआ़ हिन्दुस्तान प्रिन्टिंग प्रेस स. 135) पर लिखते हैं :

"शरीअ़त में वारिद हुवा है कि रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ग़ैब और आइन्दा की ख़बर दिया करते हैं क्यूंकि जब खुदा ग़ैब, और आइन्दा के ह़वादिसात को जानता है इस लिये कि हर ह़ादिस उस के इ़ल्म से, उसी के इरादे के मुतअ़ल्लिक़ होने से, उसी के फ़े'ल से पैदा होता है, तो फिर उस से कौन अम्रे मानेअ़ हो सकता है कि येही खुदा इन रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलिया में से जिसे चाहे उसे ग़ैब या आइन्दा की ख़बर दे दे अगर्चे हम इस के क़ाइल हैं कि फ़ित़्रते इन्सानी का येह मुक़्तज़ा (तक़ाज़ा) नहीं कि वोह बिज़्ज़ातिही (खुद ब खुद) और खुद मुग़य्यबात (ग़ैबों) में से किसी शै को जान सके, लेकिन अगर खुदा ही किसी को बता दे तो उसे कौन रोक सकता है ? और फिर वोह लोग औरों को ख़बर दे देते हैं

इन में से कोई ऐसा नहीं, जो बज़ातिही इल्मे ग़ैब का दा'वा करता हो । चुनान्चे, शरीअ़ते मुहम्मदिय्या बिज़्ज़ात इल्मे ग़ैब के दा'वा करने को आ'ला दर्जे के ममनूआ़त में शुमार करती है और जो इस का दा'वा करे उसे काफ़िर बताती है ।"

अकाबिरीने देवबन्द के मुरब्बी क़ासिम नानोतवी "**तह़ज़ीरुन्नास स. 4**" पर लिखते हैं : "मसलन उ़लूमे अव्वलीन और हैं, और उ़लूमे आख़िरीन और, लेकिन वोह सब इल्म रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में मुज्तमअ़ (जम्अ़) हैं इस त़रह़ से कि आ़लिमे ह़क़ीक़ी रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं और अम्बिया बाक़ी और औलिया बिलअ़र्ज़ हैं ।" इन ह़ज़रत ने तो उम्मते मुस्लिमा के मुसल्लमा अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ ह़ुज़ूरे अकरम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को "**आ़लिमे ह़क़ीक़ी**" क़रार दे दिया है ह़ालांकि आ़लिमे ह़क़ीक़ी सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है और बक़िय्या सब उसी की अ़त़ा और करम से फ़ैज़याब होते हैं ।

प्यारे भाइयो ! आ़लिमे ह़क़ीक़ी, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है बहर ह़ाल ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया कि "**बा'ज़ इल्मे ग़ैब**" की एक अदना झलक भी किस क़दर वसीअ़ है अब अगर कोई ऐसे "**अ़ज़ीमुश्शान इल्मे ग़ैब**" को مَعَاذَ اللّٰه जानवरों या पागलों या शैत़ान के इल्म की मिस्ल या उन के इल्म जितना क़रार दे वोह किस क़दर ज़ालिम है وَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْكَرِيْم

ऐ ग़य्यूर मुसलमानो ! तुम ने देखा कितनी तौहीन आमेज़ और ईमान सोज़ इ़बारत है ! क्या जो इल्म में नबी और जानवर दोनों को बराबर समझे वोह मुसलमान हो सकता है ? वल्लाह ! हरगिज़ नहीं और जो इस कुफ़्रिय्या इ़बारत के मानने वाले को काफ़िर न माने बल्कि इस के ज़ाहिरी इल्मो फ़न या उस्ताज़ी व शागिर्दी का लिहाज़ करे वोह भी मुसलमान नहीं रह सकता है ।

अभी आप ने सारी उम्मत के उ़लमा का फ़तवा सुना कि مَنْ شَكَّ فِي كُفْرِهٖ وَعَذَابِهٖ فَقَدْ كَفَرَ **तर्जमा :** "जो उस के काफ़िर होने और अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ होने में शक करे वोह काफ़िर है।"

प्यारे भाइयो ! क्या आप तसव्वुर कर सकते हैं कि कोई शख़्स आप का कलिमा पढ़े और आप को "**रसूलुल्लाह**" कहे ? क्या आप अपने आप को "**रसूलुल्लाह**" कहलवा कर ख़ुश होंगे ? या उस कलिमा पढ़ने वाले को जूता रसीद करेंगे ? उसे **शाबाश** देंगे या बुरा भला कहेंगे ? यक़ीनन कोई भी उम्मती अपने आप को "**रसूल**" कहलवाने का सोच भी नहीं सकता और जो बदबख़्त ऐसी ख़्वाहिश करे उस के ईमान की ह़क़ीक़त के बारे में कुछ कहने की ज़रूरत नहीं।

लेकिन बद क़िस्मती से तबलीग़ी जमाअ़त की गुस्ताख़ियों के इस सिलसिले की एक कड़ी येह भी है कि "**जनाब**" अशरफ़ अ़ली साह़िब ने अपने मुरीद को "**अशरफ़ अ़ली रसूलुल्लाह**" कहने पर तसल्ली दी और इस पर मसर्रत का इज़्हार भी फ़रमाया। देखिये : (रिसाला अल इमदाद, स. 34-35, बाबत माह सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1336 हि. जि. 3, अज़ मत़बए़ इमदादुल मत़ाबेअ़ थाना भवन)

मुरीद का बयान है........ ....लेकिन ज़बान से बेसाख़्ता बजाए **रसूलुल्लाह** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के नाम के **अशरफ़ अ़ली रसूलुल्लाह** निकल जाता है......مَعَاذَ اللّٰه (तफ़्सील के लिये अ़क्स मुलाह़ज़ा फ़रमाएं)

प्यारे भाइयो ! अब ज़रा आगे चलिये और देखिये कि इस तबलीग़ी जमाअ़त के रहनुमा व अकाबिर क्या क्या गुल खिलाते हैं। क्या आप हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आख़िरी नबी होने में शक कर सकते हैं ? मुझे यक़ीन है आप का जवाब नफ़ी में होगा। या'नी हरगिज़ नहीं। हमारे नबी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के आख़िरी नबी हैं, आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द कोई नबी हरगिज़ नहीं आ सकता।

आइये अब हम आप का तआ़रुफ़ एक ऐसी शख़्सिय्यत से करवाते हैं जिस ने येह दा'वा किया कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)के बा'द भी किसी नए नबी बल्कि हज़ारों अम्बिया के आने की गुन्जाइश है और नए नबियों के आने से हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आख़िरी नबी होने में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। (ह़ालांकि एक मा'मूली समझ बूझ वाला भी येह बात आसानी से समझ सकता है कि आख़िरी नबी होने का मत़लब ही येही है कि इन के बा'द कोई नया नबी नहीं आ सकता। अलबत्ता सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام क़ियामत के क़रीब हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के उम्मती की ह़ैसिय्यत से तशरीफ़ लाएंगे न कि नए नबी की ह़ैसिय्यत से, क्यूंकि नबुव्वत तो उन्हें पहले ही मिल चुकी है।) इस शख़्सिय्यत का तअ़ल्लुक़ भी फ़िर्क़ए वहाबी देवबन्दी से है और येह भी तबलीग़ी जमाअ़त के अकाबिर में से है। इस का नाम मुह़म्मद **क़ासिम नानोतवी** है इस की बदनामे ज़माना किताब जिस का नाम **तह़ज़ीरुन्नास**, है येह किताब **1290** हि. / **1874** ई. में छपी, इस के सफ़ह़ा नम्बर **24** पर येह साह़िब लिखते हैं :

इ़बारत नम्बर 3

"अगर बिलफ़र्ज़ **बा'दे ज़मानए नबवी** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) भी कोई नबी पैदा हो जाए तो फिर भी **ख़ातमिय्यते मुह़म्मदी** में कुछ फ़र्क़ न आएगा।"

इस इ़बारत के मुश्किल अल्फ़ाज़ का **तर्जमा :**

बा'दे ज़मानए नबवी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : या'नी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़माने के बा'द।

ख़ातमिय्यते मुह़म्मदी : या'नी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का आख़िरी नबी होना।

अब ज़रा इस तर्जमे को इ़बारत में रख कर पढ़िये :

"अगर बिलफ़र्ज़ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़माने के बा'द कोई नबी पैदा हो जाए फिर भी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आख़िरी नबी होने में कोई फ़र्क़ न आएगा।"

इस गुस्ताख़ की बात का मत़लब येह है कि !

“हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मुबारक ज़माने के बा'द अगर कोई नया नबी आए तो येह जाइज़ व मुमकिन है और इस त़रह़ से हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आख़िरी नबी होने में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा।”

प्यारे भाइयो ! सारी उम्मत जानती है कि हमारे आक़ा व मौला हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के आख़िरी नबी हैं और अब कोई नया नबी हरगिज़ हरगिज़ नहीं आ सकता। जो किसी नए नबी के आने को जाइज़ माने काफ़िर है।

चन्द दलाइले ख़त्मे नबुव्वत

(**1**) हुज़ूरे अकरम (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आख़िरी नबी होने पर क़ुरआने पाक से दलाइल : مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

तर्जमा : मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं लेकिन वोह **अल्लाह** के रसूल हैं और सब नबियों के आख़िर। (अह़ज़ाब/**40**)

पता चला कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم), **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के आख़िरी नबी हैं नीज़।

(**2**) اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

तर्जमा : “आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को बत़ौरे दीन पसन्द कर लिया।”

(कन्ज़ुल ईमान, आयत नम्बर **3**, रुकूअ़ **5**, सूरए माइदा, पारह **6**)

पता चला कि दीन मुकम्मल हो गया ने'मत तमाम हो गई अब न किसी नए दीन की गुन्जाइश बाक़ी है न किसी नए नबी की।

(**3**) وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۲۸

तर्जमा : "और बेशक हम ने तुम्हें (ऐ मह़बूब) तमाम लोगों के लिये बिशारत देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते। (सबा/28)

चूंकि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तमाम लोगों के लिये नबी व रसूल हैं इस लिये किसी नए नबी की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रही।

अह़ादीस से दलाइल

(1) وَاَنَّهٗ لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ **तर्जमा :** "और बेशक मेरे बा'द कोई नबी नहीं"

(बुख़ारी जि. 1 स. 491 मत़बूआ़ नूरे मुह़म्मद कुतुब ख़ाना, कराची)

(2) اَمَا تَرْضٰى اَنْ تَكُوْنَ مِنِّيْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُّوْسٰى غَيْرَ اَنَّهٗ لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ-

(हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अ़ली رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया) क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि तुम मेरे लिये ऐसे हो जैसे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام अलबत्ता मेरे बा'द कोई नबी नहीं।"

(बुख़ारी जि. 2 स. 633 मत़बूआ़ नूरे मुह़म्मद कुतुब ख़ाना कराची)

(मुस्लिम जि. 2 स. 678 मत़बूआ़ नूरे मुह़म्मद कुतुब ख़ाना कराची)

(मुस्नदे इमाम अह़मद जि. 1 स. 177, 182-183 मत़बूआ़ बैरूत मक्तबए इस्लामी)

(तिर्मिज़ी स. 534-535 मत़बूआ़ नूरे मुह़म्मद कुतुब ख़ाना कराची)

(इब्ने माजा स. 12 मत़बूआ़ नूरे मुह़म्मद कुतुब ख़ाना कराची)

(अल एह़सान बित्तरतीब इब्ने ह़ब्बान जि. 1 स. 41 दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

(3) اِنَّ الرِّسَالَةَ وَالنُّبُوَّةَ قَدْ انْقَطَعَتْ فَلَا رَسُوْلَ بَعْدِيْ وَ لَا نَبِيَّ **तर्जमा :** "बेशक नबुव्वत और रिसालत मुन्क़त़अ़ हो गई पस मेरे बा'द न कोई रसूल है न नबी।"

(जामेए़ तिर्मिज़ी स. 331 मत़बूआ़ नूरे मुह़म्मद कारख़ाना तिजारत ख़ाना कराची)

(मुस्नदे अह़मद जि. 3 स. 1267 मत़बूआ़ मक्तबे इस्लामी बैरूत)

(अल मुस्तदरक जि. 4 स. 391 मत़बूआ़ दारुल बाज़ुन्नशरुत्तौज़ीअ़ मक्कए मुकर्रमा)

(अल मुसन्निफ़ लि इब्ने अबी शैबा जि. 11 स. 53 इदारतुल क़ुरआन कराची)

बहर ह़ाल

मेरे मुसलमान भाइयो ! ख़त्मे नबुव्वत के मुन्किरों ने जो कुछ किया वो हमारे लिये कोई अनोखी बात नहीं क्यूंकि हमें चौदह सो साल पहले ही हमारे आक़ाए नामदार (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इस बात की ख़बर दे दी थी कि मेरे बा'द कुछ लोग नबुव्वत का झूटा दा'वा करेंगे अह़ादीस मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

(1) وَ اِنَّهٗ سَيَكُوْنُ فِيْ اُمَّتِيْ ثَلَاثُوْنَ كَذَّابًا كُلُّهُمْ يَزْعَمُ اَنَّهٗ نَبِيٌّ وَ اَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ-

(जामेए़ तिर्मिज़ी स. 323 मत़बूआ़ नूरे मुह़म्मद कारख़ाना तिजारते कुतुब, कराची)

तर्जमा : "और अ़नक़रीब मेरी उम्मत में तीस कज़्ज़ाब होंगे जिन में से हर एक नबी होने का दा'वा करेगा ह़ालांकि मैं **ख़ातमुन्नबिय्यीन** हूं मेरे बा'द कोई नबी नहीं।"

येह ह़दीस मुन्दरिजए ज़ैल किताबों में मुख़्तलिफ़ उ़लमा ने रिवायत की है।

(सुनने अबू दावूद, जि. 2 स. 228 मत़बूआ़ मुजतबाई पाकिस्तान)

(मुस्नदे अह़मद, जि. 5 स. 278 मक्तबे इस्लामी बैरूत)

(दलाइलुन्नबुव्वह (बैहक़ी), जि. 6 स. 480 दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

(2) اَنَا اٰخِرُ الْاَنْبِيَاءِ وَ اَنْتُمْ اٰخِرُ الْاُمَمِ وَ هُوَ خَارِجٌ فِيْكُمْ لَا مَحَالَةَ (اِلٰى قَوْلِهٖ صلى اللّٰه تعالىٰ عليه وسلم اَنَّهٗ سَاصِفُهٗ لَكُمْ لَمْ يَصِفُهَا اِيَّاهُ نَبِيٌّ قَبْلِيْ اَنَّهٗ يَبْدَءُ فَيَقُوْلُ اَنَا نَبِيٌّ وَ لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ

(सुनने इब्ने माजा, स. 298 नूरे मुह़म्मद तिजारते कुतुब, कराची)

(फ़रमाया) "मैं आख़िरी नबी और तुम आख़िरी उम्मत हो यक़ीनन दज्जाल तुम में ज़ाहिर होगा। मैं अ़नक़रीब उस की एक अ़लामत तुम्हें बताऊंगा कि वोह अ़लामत किसी नबी ने मुझ से पहले बयान नहीं की, वोह येह कि इब्तिदाअन वोह कहेगा मैं नबी हूं। ह़ालांकि मेरे बा'द कोई नबी नहीं।"

اَنَا مُحَمَّدٌ نَبِيٌّ اُمِّيٌّ قَالَهٗ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ وَ لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ (3)

(मुस्नदे अह़मद जि. 2 स. 172, 212 मक्तबे इस्लामी बैरूत)

तर्जमा : "मैं मुह़म्मद नबिय्ये उम्मी हूं (इसे तीन बार इरशाद फ़रमाया) मेरे बा'द कोई नबी नहीं।"

प्यारे भाइयो ! देखा आप ने, हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का आख़िरी नबी होना बिल्कुल यक़ीनी और क़त़ई है लेकिन "**नानोतवी**" ने अपनी मलऊ़न इ़बारत से इस अ़क़ीदे में रख़्ना डालने की कोशिश की चुनान्चे, इस इ़बारत से फ़ाइदा उठाते हुवे दज्जाले लईन **मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी** ने अपनी नबुव्वत का ए'लान कर दिया और दलील के त़ौर पर **क़ासिम नानौतवी** की मज़्कूरा बाला इ़बारत पेश कर दी कि जनाब मैं नबी हूं और मेरे नबी होने से हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आख़िरी नबी होने में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

प्यारे भाइयो ! येह थे वोह ह़ालात जो आ'ला ह़ज़रत (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ) के दौर में पैदा हो चुके थे। कोई **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को झूटा कह रहा था, कोई हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आख़िरी नबी होने का इन्कार कर रहा था। कोई बज़ाते ख़ुद नबी होने का दा'वेदार था, तो कोई हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म को पागलों और जानवरों के बराबर या मिस्ल कह रहा था مَعَاذَ الله।

इन सब का मक़्सद एक ही था कि हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की अ़ज़्मत व मह़ब्बत मुसलमानों के दिल से निकाल ली जाए ताकि मुसलमानों के दिल ईमान से ऐसे ख़ाली कर लिये जाएं जैसे मौत के बा'द जिस्म रूह़ से ख़ाली हो जाता है।

येह फ़ाक़ा कश जो मौत से डरता नहीं ज़रा
रूहे़ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इस के बदन से निकाल दो

ऐसे वक़्त में जब सारे हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ के इशारे पर येह साज़िशें ज़ोरों पर थीं अ़वाम व ख़वास की आंखें इमामे अहले सुन्नत अह़मद रज़ा ख़ान (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) की त़रफ़ लगी हुई थीं चुनान्चे, आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने इन गुस्ताख़ों को समझाया नीज़ ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) और अ़ज़मते मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) याद दिलाने की कोशिश की। अगर येह लोग अपनी गुस्ताख़ाना इ़बारतों से तौबा कर लेते तो येह इन्ही के ह़क़ में बेहतर था। मगर अफ़्सोस ! कि येह लोग अपनी किताबों से येह कुफ़्रिय्या इ़बारतें निकालने और इन से तौबा करने पर राज़ी न हुवे ह़ालांकि एक आ़म शख़्स भी समझाने पर अपनी ग़लती का इक़रार कर ही लेता है। येह लोग तो फिर उ़लमा कहलाते थे अगर येह अपनी ग़लती का इक़रार कर के तौबा कर लेते तो उम्मते मुस्लिमा एक नए फ़ितने से बच जाती लेकिन अफ़्सोस ! ऐसा न हो सका।

चुनान्चे, अब इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा عَلَيْهِ الرَّحْمَة इन गुस्ताख़ों के बारे में शरई हुक्म बयान करने पर मजबूर हो गए। हमारे क़ारेईन पढ़ आए हैं कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गुस्ताख़ का शरई हुक्म क्या है, जी हां वोह काफ़िर है और ऐसा काफ़िर कि जो उसे काफ़िर न माने वोह भी काफ़िर है।

चुनान्चे, आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने किताब اَلْمُعْتَقَدُ الْمُنْتَقَد के ह़ाशिये में (जिस का नाम **अल मो'तमदुल मुस्तनद** है) मुन्दरिजए ज़ैल **5** गुस्ताख़ों के बारे में कुफ़्र का फ़तवा सादिर फ़रमाया।

(1) क़ासिम नानोतवी देवबन्दी को ख़त्मे नबुव्वत के इन्कार के सबब

(2) रशीद अह़मद गंगोही देवबन्दी को और

(3) ख़लील अह़मद अम्बेठवी देवबन्दी को हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इल्म में शैत़ान से कम मानने के सबब।

(4) अशरफ़ अ़ली थानवी देवबन्दी को हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को इल्म में जानवरों और पागलों के बराबर मानने के सबब।

मुन्दरिजए बाला चार अफ़राद तबलीग़ी जमाअ़त के मो'तमद और बुज़ुर्ग तरीन अकाबिरीन हैं।

(5) मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी को नबुव्वत के झूटे दा'वे के सबब काफ़िर क़रार दिया।

इस के बा'द इन गुस्ताख़ों के बारे में कुफ़्र का फ़तवा उ़लमाए ह़रमैन (अ़रब शरीफ़ के उ़लमा رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی) के पास भेजा गया उन लोगों ने इस की तस्दीक़ फ़रमाई और इस पर इमाम अह़मद रज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) को अपने भरपूर तआ़वुन का यक़ीन दिलाया। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने इन उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی की तस्दीक़ात को अपने फ़तवा समेत 1324 हि. (तेरह सो चौबीस) में शाएअ़ फ़रमाया और इस का नाम حُسَّامُ الْحَرَمَین عَلٰی منحر الکفر والمین रखा। इस फ़तवे की ह़िमायत और तस्दीक़े मुत्तह़िदा हिन्दुस्तान के ढाई सो (250) से ज़ाइद उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی ने भी की और आ'ला ह़ज़रत (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ज़बरदस्त ख़िराजे तह़सीन पेश किया।

ढाई सो (250) से ज़ाइद उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی की इन तस्दीक़ात को मौलाना ह़शमत अ़ली ख़ान रज़वी (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने **अस्सवारिमुल हिन्दिय्या** के नाम से शाएअ़ किया। इन उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی के नाम इस किताब के आख़िर में मुलाह़ज़ा करें।

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शरई मजबूरी

प्यारे भाइयो ! इमाम अह़मद रज़ा (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने इन्तिहाई मजबूरी के आ़लम में इन गुस्ताख़ों के बारे में शरई हुक्म बयान फ़रमाया था । क्यूंकि आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) उस वक़्त हिन्दुस्तान भर के उ़लमा व अ़वाम की निगाहों का मर्कज़ थे । इस सूरत में आप (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) पर लाज़िम था कि आप दीने मतीन और अ़ज़मते मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की पासदारी के लिये अपना फ़र्ज़े मन्सबी अदा फ़रमाते । चूंकि गुस्ताख़े रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के बारे में पूरी उम्मत का एक ही फ़ैसला है कि **"वोह शख़्स काफ़िर है नीज़ जो उसे काफ़िर न माने वोह भी काफ़िर है"** चुनान्चे, आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) उन्हें काफ़िर लिखने पर मजबूर हो गए । इसी मजबूरी की त़रफ़ मुर्तज़ा ह़सन दरभंगी देवबन्दी ने भी इशारा किया है (मौसूफ़ दारुल उ़लूम देवबन्द के शो'बए तबलीग़ के नाज़िमे ता'लीमात थे) लिखते हैं : "अगर (मौलाना अह़मद रज़ा) ख़ान साहिब के नज़दीक बा'ज़ उ़लमाए देवबन्द वाक़ेई ऐसे ही थे जैसा कि उन्हों ने समझा (या'नी गुस्ताख़े रसूल) तो ख़ान साहिब पर इन उ़लमाए देवबन्द की तक्फ़ीर फ़र्ज़ थी अगर वोह इन्हें काफ़िर न कहते तो ख़ुद काफ़िर हो जाते ।"

नीज़ ज़ैल में हम बत़ौरे नुमूना अकाबिर उ़लमाए देवबन्द के चन्द फ़तावा पेश करते हैं जो इमामे अहले सुन्नत के फ़तावे की ताईद करते हैं ।

देवबन्दी फ़तावा

(**1**) जो शख़्स नबी عَلَيْهِ السَّلَام के इल्म को ज़ैद व बक्र व बहाइम (जानवरों) व मजानीन (पागलों) के इल्म के बराबर समझे या कहे, वोह क़त्अ़न काफ़िर है।

(अल मुहन्नद, स. **30**, अज़् ख़लील अह़मद अम्बेठवी व उ़लमाए देवबन्द)

(**2**) जो कोई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्म के बराबर सिबयान (बच्चों) व मजानीन (पागलों) व बहाइम (जानवरों) को कहे वोह काफ़िर है, मुर्तद है, मलऊ़न है, जहन्नमी है।

(अशद्दुल अ़ज़ाब, स. **14**, अज़् मुर्तज़ा ह़सन दरभंगी)

मज़ीद फ़रमाते हैं : "तमाम उ़लमाए देवबन्द फ़रमाते हैं कि (मौलाना अह़मद रज़ा) ख़ां साहिब का येह हुक्म बिल्कुल सह़ीह़ है, जो ऐसा कहे (जैसा कि नानोतवी ने "**तह़ज़ीरुन्नास**" और थानवी ने "**हि़फ़्ज़ुल ईमान**" में और अम्बेठवी ने "**बराहीने क़ाति़आ़**" में कहा है) वोह काफ़िर है, मुर्तद है, मलऊ़न है, लाव हम भी तुम्हारे फ़तवा पर दस्तख़त़ करते हैं। बल्कि ऐसे मुर्तदों को जो काफ़िर न कहे, वोह ख़ुद काफ़िर है।" (अशद्दुल अ़ज़ाब, स. **12-13**)

इन साहि़बान की इन इ़बारात से बात मज़ीद वाज़ेह़ हो गई कि कुफ़्रिय्या फ़तावा ज़ाती दुश्मनी की वजह से न था बल्कि आ'ला ह़ज़रत (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) पर आ़लिमे दीन होने की ह़ैसिय्यत से इन्हें काफ़िर कहना ज़रूरी था ताकि नामूसे रिसालत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की हि़फ़ाज़त का फ़र्ज़ कमाह़क़्क़ुहू अदा कर सकें और आइन्दा किसी गुस्ताख़ को हमारे नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी की जुर्अत न हो।

डाल दी क़ल्ब में अ़ज़मते मुस्त़फ़ा
उस इमाम अहले सुन्नत पे लाखों सलाम

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला

प्यारे भाइयो ! तबलीग़ी जमाअ़त और गुरौहे वहाबिय्या के सरख़ील मौलवी इस्माईल देहलवी (जिसे इन के पैरूकार "**शहीद**" के लक़ब से याद करते हैं) ने अपनी बदनामे ज़माना किताब "**तक़्वियतुल ईमान**" में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के प्यारे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की शान में बेहद गुस्ताख़ियां कीं और सच्चे मुसलमानों को बे मह़ाबा, बयक जुम्बिशे क़लम काफ़िर व मुशरिक क़रार दिया जिस की वजह से तह़रीके आज़ादी हिन्द 1857 ई. के अ़ज़ीम रहनुमा (हीरो) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने इस्माईल देहलवी के कुफ़्र का फ़तवा दिया था।

और फ़रमाया था مَنْ شَكَّ فِيْ كُفْرِهٖ وَ عَذَابِهٖ فَقَدْ كَفَرَ **तर्जमा :** जो इस के कुफ़्र और अ़ज़ाब में शक करे वोह काफ़िर है।

नीज़ दीगर अकाबिर उ़लमाए अहले सुन्नत رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने भी इस किताब का रद्द बड़ी शद्दो मद के साथ तह़रीर किया था और ऐसा होना भी चाहिये था। ज़ैल में "**तक़्विय्यतुल ईमान**" की चन्द इबारात पेश करते हैं जिस से मुसन्निफ़ की ज़ेहनिय्यत और अ़ल्लामा फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) के फ़तवाए तक्फ़ीर की वजह समझने में मदद मिल सकेगी।

देहलवी मज़्कूर, सरकारे दो आ़लम (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और मौला अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के बारे में लिखता है : "जिस का नाम **मुह़म्मद** या **अ़ली** है वोह किसी चीज़ का मुख़्तार (मालिक) नहीं।"

(तक़्विय्यतुल ईमान स. 28 मुत्तबअ़ अ़लीमी अन्दरूने लाहौरी दरवाज़ा लाहौर)

इसी किताब में आगे चल कर लिखता है :

"सारा कारोबार जहां का **अल्लाह** के चाहने से होता है, रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता" (ऐज़न, स.**96**)

बल्कि एक बात तो ऐसी लिखी जिसे पढ़ कर एक मोमिन का कलेजा लरज़ जाता है और दिल पुकार पुकार कर येह कहता है कि येह अल्फ़ाज़ किसी मोमिन की ज़बान व क़लम से जारी नहीं हो सकते। मौसूफ़, अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی और कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन में किसी क़िस्म का फ़र्क़ किये बिग़ैर क्या गुल अफ़्शानी फ़रमाते हैं :

"हर मख़्लूक़ में बड़ा हो या छोटा वोह **अल्लाह** की शान के आगे चमार से भी ज़ियादा ज़लील है।"

(तक़्विय्यतुल ईमान, सफ़्हा **13**)

साफ़ ज़ाहिर है कि येह छोटाई या बड़ाई क़द-काठ के लिहाज़ से नहीं बल्कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के दरबार में दर्जात के लिहाज़ से है और येह बात तो बच्चा बच्चा जानता है कि मख़्लूक़ में सब से बड़ा दरजा अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का है और हज़रत ने इन्हीं के बारे में कैसी तौहीन आमेज़ बात की !

इस के इलावा **1300** साल के तमाम मुसलमानों को अपने अज़्बए रोज़गार फ़तवे के ज़रीए दीने इस्लाम से ख़ारिज क़रार दिया और साफ़ साफ़ काफ़िर व मुशरिक ठहराया मसलन,

"जो कोई किसी का नाम उठते बैठते लिया करे (जैसा कि सिलसिलए क़ादिरिय्या, चिश्तिय्या, सोहरवर्दिय्या और नक़्शबन्दिय्या ग़रज़ तमाम आ़लमे इस्लाम में राइज है कि बुज़ुर्गाने दीन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद का मज़हर समझते हुवे इन्हें मदद के लिये पुकारते हैं और ऐसा करना शरअ़न दुरुस्त है) और दूरो नज़्दीक से पुकारा करे या उस की सूरत का ख़याल बांधे और यूं समझे कि जब मैं उस का नाम लेता हूं, ज़बान से या दिल से या उस की सूरत का या उस की क़ब्र का ख़याल बांधता हूं तो वहीं उस को

ख़बर हो जाती है और उस से मेरी बात छुपी नहीं रह सकती और जो कुछ मुझ पर अह़्वाल गुज़रते हैं जैसे बीमारी व तन्दुरुस्ती कशाइश व तंगी, मरना, जीना, ग़म व ख़ुशी सब की हर वक़्त उसे ख़बर रहती है और जो बात मेरे मुंह से निकलती है वोह सब सुन लेता है और जो ख़याल व वहम मेरे दिल में गुज़रता है वोह सब से वाक़िफ़ है।

सो इन बातों से मुशरिक हो जाता है और इस क़िस्म की बातें सब शिर्क हैं ख़्वाह अ़क़ीदा अम्बिया-औलिया से रखे, ख़्वाह पीर व शहीद से, ख़्वाह इमाम व इमाम ज़ादे से ख़्वाह भूत व परी से (या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के प्यारों और दुश्मनों में कोई फ़र्क़ नहीं) फिर ख़्वाह यूं समझे कि येह बात इन को अपनी ज़ात से ख़्वाह **अल्लाह** के दिये से। ग़रज़ इस अ़क़ीदे से हर त़रह़ शिर्क साबित होगा।" (गोया **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की अ़त़ा का इन्कार कर दिया)

(तक़्विय्यतुल ईमान स. 22 मत़्बूआ़ इस्लामी एकेडमी लाहौर)

मौसूफ़ के इस फ़तवे से अकाबिरीने उम्मत ह़त्ताकि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن तक مَعَاذَ اللّٰہ ग़ैर मुस्लिम क़रार पाते हैं और इस त़रह़ के फ़तवे उन की इस किताब में ह़शरातुल अर्द़ की त़रह़ फैले हुवे हैं।

येही नहीं बल्कि आप ह़ैरत करेंगे कि इस शख़्स ने झूट को **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़त क़रार दिया, देखिये : रिसाला यकरोज़ा, स. 17

देवबन्दी ह़ज़रात से जब इस के बारे में सुवाल किया जाता है तो जवाब कुछ यूं मिलता है कि अगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) झूट पर क़ादिर न माना जाए तो बन्दों की क़ुदरत **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से बढ़ जाएगी इस लिये **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को झूट पे क़ादिर माना जाता है।

हा़लांकि बन्दे तो गुनाह भी करते हैं मसलन चोरी, शराब ख़ोरी, बदकारी वग़ैरा नीज़ बन्दे शादी भी करते हैं और अवलाद भी पैदा करते हैं ह़त्ताकि ख़ुदकुशी भी करते हैं तो क्या येह अफ़्आ़ल करने से बन्दे की कु़दरत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की कु़दरत से बढ़ जाएगी ? और अगर ख़ुदा को भी इन तमाम पर का़दिर माना जाए तो क्या ऐसी हस्ती को "**ख़ुदा**" कहा जा सकता है ?

आप ही बताइये क्या **अल्लाह** तआ़ला ख़ुदकुशी कर सकता है ? क्या अपने जैसा दूसरा "**ख़ुदा**" पैदा कर सकता है ...?

बात दर अस्ल येह है कि झूट, चोरी, ख़ुदकुशी, शराब ख़ोरी वग़ैरा अफ़्आ़ल ऐ़ब हैं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हर ऐ़ब से पाक है। लेकिन येह बात वहाबियों, देवबन्दियों और तबलीग़ी जमाअ़त वालों को कौन समझाए ?

इन्ही ह़ज़रत ने अपनी किताब "**सिराते़ मुस्तक़ीम**" में **अल्लाह** के मह़बूब, सय्यिदे कौनैन, हु़ज़ूर ताजदारे मदीना (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बारगाहे मुक़द्दसा में गुस्ताख़ी करते हुवे जो कुछ लिखा है वोह आप भी अपनी आंखों से पढ़ लीजिये "ज़िना के वस्वसे से अपनी बीबी की मुजामअ़त का ख़याल बेहतर है और शैख़ का और इसी जैसे और बुज़ुर्गों की त़रफ़ ख़्वाह जनाबे रिसालत मआब ही हों अपनी हिम्मत को लगा देना अपने **बैल** और **गधे** की सूरत में मुस्तग्रक़ होने से बुरा है" (सिराते़ मुस्तक़ीम, स. 136)

इबारत वाज़ेह़ है आप ख़ुद समझ सकते हैं। अपने दिल से पूछिये क्या अगर नमाज़ में आप का ख़याल सरकारे दो आ़लम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ चला जाए और आप अपने प्यारे आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की इस प्यारी सुन्नत को इन की मह़ब्बत में डूब कर अदा करें तो येह مَعَاذَ الله गधे या बेल के ख़याल में डूबने से ज़ियादा बुरा है ? क्या एक मुसलमान ऐसी बात लिख सकता है ?

अल ग़रज़ वहाबिया के इमाम ने कुफ़्रो शिर्क और तौहीन व गुस्ताख़ी का जो बाज़ार गर्म कर रखा था ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) और इन के मुख़्लिस साथियों ने इस का सद्देबाब किया और इस **मुकफ़्फ़रुल मुस्लिमीन** को काफ़िर क़रार दिया।

आज बा'ज़ वहाबी और देवबन्दी येह ए'तिराज़ करते हैं कि तुम्हारे एक आ़लिम ने तो हमारे सरदार को काफ़िर कहा और येह हुक्म लगाया कि مَنْ شَكَّ فِيْ كُفْرِهٖ وَ عَذَابِهٖ فَقَدْ كَفَرَ (**तर्जमा :** जो (इस्माईल देहलवी) के कुफ़्र और अ़ज़ाब में शक करे वोह खुद काफ़िर है) और तुम्हारे दूसरे आ़लिम या'नी आ'ला ह़ज़रत (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने इस के कुफ़्र का फ़तवा जारी नहीं किया तो वोह खुद काफ़िर हो गए। ह़ालांकि मस्अला येह है कि किसी शख़्स को उस वक़्त तक काफ़िर नहीं कहा जा सकता जब तक कि येह न साबित हो जाए कि :

(1) उस शख़्स का कलाम वाक़ेई कुफ़्र है।

(2) जिस शख़्स की त़रफ़ कुफ़्रिय्या कलाम की निस्बत की जा रही है साबित हो जाए कि वाक़ेई उसी ने वोह कलाम कहा है।

(3) कुफ़्रिय्या कलाम कहने के बा'द तौबा नहीं की।

अगर इन तीनों बातों में से कोई एक भी न पाई जाए तो उस शख़्स को काफ़िर नहीं कह सकते।

चुनान्चे, मौलाना फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) के दौर में तो देहलवी मज़्कूर के बारे में येह तीनों बातें पाई जाती थीं इस लिये इन्हों ने इस्माईल देहलवी को काफ़िर क़रार दिया लेकिन तक़रीबन पचास साल के बा'द इमामे अहले सुन्नत (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) के दौर में येह अफ़्वा मश्हूर हुई थी कि (इस्माईल देहलवी ने अपने कुफ़्रिय्यात से तौबा कर ली थी) ह़ालांकि ख़बर ग़लत़ थी लेकिन मश्हूर हो चुकी थी।

अब इमामे अहले सुन्नत (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की एह़तियात देखिये कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने इस्माईल देहलवी के कलाम में सत्तर सत्तर कुफ़्र साबित करने के बा'द भी मह़ज़ तौबा की अफ़्वा का लिह़ाज़ करते हुवे उसे काफ़िर नहीं क़रार दिया।

क्या अब भी कोई ज़ी शुऊ़र इमामे अहले सुन्नत पर येह इल्ज़ाम लगा सकता है कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ख़्वाह म ख़्वाह अपने मुख़ालिफ़ीन को काफ़िर कह दिया करते थे !

हम गुस्ताख़ी पर मब्नी इ़बारात का अ़क्स इन की अस्ली किताबों से पेश कर रहे हैं ताकि अगर ज़ेह्न में कोई ख़लजान हो तो उस का सद्देबाब हो सके, वाज़ेह़ रहे कि येह गुस्ताख़ियां दो चार नहीं बल्कि इन का सिलसिला शैत़ान की आंत की त़रह़ दराज़ है और तमाम का इह़ात़ा इस मुख़्तसर किताब में मुमकिन नहीं।

आख़िरी और अहम गुज़ारिश

प्यारे भाइयो ! देखा येह गया है कि जब कभी देवबन्दियों, वहाबियों और तबलीग़ी जमाअ़त वालों से इन गुस्ताख़ाना इ़बारतों के बारे में वज़ाह़त त़लब की जाती है तो कोई इत़मीनान बख़्श जवाब नहीं दे पाते बल्कि बात को दूसरी त़रफ़ टालने की कोशिश करते दिखाई देते हैं मसलन :

(1) भाइयो ! हमें अ़मल करना चाहिये येह उ़लमा के झगड़े हैं, इस में हमें नहीं पड़ना चाहिये।

(2) हम सब मुसलमान हैं, एक ख़ुदा एक रसूल और एक क़ुरआन के मानने वाले हैं, हमें आपस में एक हो के रहना चाहिये।

ह़ालांकि दीन में तफ़र्क़ा अहले सुन्नत व जमाअ़त ने नहीं डाला, झगड़े की बुन्याद अहले सुन्नत व जमाअ़त के उ़लमा ने नहीं डाली, गुस्ताख़ाना इ़बारतें लिख कर करोड़ों मुसलमानों के

दिलों के जज़्बात को ठेस अहले सुन्नत व जमाअ़त ने नहीं पहुंचाई बल्कि येह काम खुद इन्ही ह़ज़रात का किया हुवा है। और येह लोग मह़ज़ बात बदलने के लिये और झगड़े की अस्ल वजह से तवज्जोह हटाने के लिये येह बातें करते हैं।

बा'ज़ अवक़ात अहले सुन्नत के मा'मूलात पर **शद्दो मद** के साथ तन्क़ीद करना शुरूअ़ कर देते हैं मसलन :

(1) या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कहना शिर्क है।

(2) मज़ारात पर जाना शिर्क है।

(3) फ़ातिह़ा, सिवुम, चालीसवां, मीलाद शरीफ़ और ग्यारहवीं शरीफ़ मनाना शिर्क व बिदअ़त है वग़ैरा वग़ैरा।

जब कि तबलीग़ी जमाअ़त के अकाबिर येह बात अच्छी त़रह़ जानते हैं कि येह सब बातें न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब हैं। अहले सुन्नत व जमाअ़त के उ़लमा भी इन बातों को फ़र्ज़ व वाजिब क़रार नहीं देते अलबत्ता इन्हें ग़लत़ कहने वालों से दलील ज़रूर त़लब करते हैं।

बहर ह़ाल इन मसाइल को सिर्फ़ और सिर्फ़ इस लिये उछाला जाता है ताकि इन के माथे पर जो गुस्ताख़ाना इ़बारतें कलंक का टीका बन चुकी हैं उन्हें छुपाया जा सके जब कि यहां नजात की सिर्फ़ एक ही सूरत है और वोह **तौबा** है।

प्यारे भाइयो ! आख़िर हम मुसलमान कहां जाएं ? एक वक़्त वोह था कि जब मुसलमान ग़ालिब और कुफ़्फ़ार मग़लूब थे लेकिन कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन ने साज़िशों और रेशा दवानियों के ज़रीए़ मुसलमानों की अकसरिय्यत को दुन्यादार और फ़ेशन परस्त बना डाला है। तक़रीबन एक हज़ार साल तक दुन्या पर हुकूमत करने और अक़्वामें आ़लम की रहनुमाई करने वाले मुसलमान, आज आपस में दस्तो गिरेबां नज़र आते हैं। और अब येह लोग हम से हमारा ईमान तक छीन लेना चाहते हैं।

यक़ीनन येह सब उस आक़ाए दो आ़लम, ताजदारे अ़रबो अ़जम, शाहे बनी आदम, हुज़ूर नूरे मुजस्सम (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़श्क़ में कमी के बाइ़स हुवा। और अब भी अगर हम अपने मर्कज़ की त़रफ़ लौट आएं, इ़श्क़े रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हुब्बे अहले बैत رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और अ़ज़्मते सह़ाबा व औलिया (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) की शम्अ़ अपने सीनों में फ़रोज़ां कर लें तो ज़रूर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की करम नवाज़ी से दुन्या व आख़िरत में कामयाब व कामरान हो जाएंगे।

की मुह़म्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या लौह़ो क़लम तेरे हैं

ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हमें और हमारे भोले भाले मुसलमान भाइयों को इस फ़ितनो फ़साद के दौर में मह़्ज़ अपने फ़ज़्लो करम से गुमराहियों से मह़फ़ूज़ फ़रमा। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जो भोले भाले मुसलमान शैत़ान के चक्कर में आ कर किसी बद मज़्हबी का शिकार हो गए हैं उन्हें अपने प्यारे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सदक़े में तौबा और इ़श्क़े रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की लाज़वाल दौलत अ़त़ा फ़रमा। हमें ऐसा बना दे कि हमारी वजह से उम्मत फ़ितना व फ़साद का शिकार न हो। हम हरगिज़ उम्मते मुस्लिमा को इन्तिशार व इफ़्तिराक़ में मुब्तला नहीं करना चाहते, तू अपनी रह़मते कामिला से आज के मुसलमानों बल्कि हमारी आने वाली नस्लों को ताजदारे मदीना (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का वफ़ादार बना दे। हमें अपने प्यारों की बे अदबी और गुस्ताख़ी से मह़फ़ूज़ रख, हमें अच्छा माह़ोल अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और सच्चे इस्लामी अ़क़ाइद पर हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमा।

آمین بجاہ سید المرسلین، صلی اللّٰہ تعالیٰ علیہ و علیہم و

علی اٰلہٖ و صحبہٖ و اولیاء امتہٖ اجمعین

अ़ब्दुल मुज़निब
मुह़म्मद यूसुफ़ अ़त्तारी रज़वी

ईमान की पहचान

हाशिया

तम्हीदे ईमान

-: मुसन्निफ़ :-

शैख़ुल इस्लाम इमामे अहले सुन्नत

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلحَمْدُللّٰهِ رَبِّ العٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ ا لمرسَلِينَ
خَاتَمِ النّبِيِّين واٰلهٖ واَصحٰبِهٖ اَجْمَعِينَ اِلىٰ يَوْمِ الدِّينِ بالتّبجيلِ
وَحَسبُنَاالّٰلهُ وَنِعمَ الوكيلُ۔

मुसलमान भाइयो से **आ़जिज़ाना दस्तबस्ता अ़र्ज़**(1)

प्यारे भाइयो ! السلامُ عَلَيكُم وَرَحمةُ الله وَبَرَكاتُه

अल्लाह तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) आप सब ह़ज़रात को और आप के सदक़े में इस नाचीज़, **कसीरुस्सय्यिआत**(2) को दीने ह़क़ पर क़ाइम रखे और अपने ह़बीब, मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सच्ची मह़ब्बत, अ़ज़्मत दे और इसी पर हम सब का ख़ातिमा करे। (اٰمين ياارحم الراحمين)(3)

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ﴿۸﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۹﴾

तर्जमा : ऐ नबी बेशक हम ने तुम्हें भेजा गवाह और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता, ताकि ऐ लोगो ! तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** की पाकी बोलो। (पारह 26, अल फ़त्ह़, आयत 8 ता 9)

मुसलमानो ! देखो दीने इस्लाम भेजने, **क़ुरआने मजीद उतारने का मक़्सूद**(4) ही तुम्हारा मौला तबारक व तआ़ला तीन बातें बताता है :

अव्वल : येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाएं।
दुवुम : येह कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम करें।
सिवुम : येह कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की इ़बादत में रहें।

---

(1) हाथ जोड़ कर अ़र्ज़ या'नी इन्तिहाई आ़जिज़ी से दरख़्वास्त। (2) बहुत ज़ियादा गुनाहगार को। (3) ऐसा ही कर दे ऐ सब से बढ़ कर रह़्म करने वाले। (4) क़ुरआने पाक नाज़िल करने का मक़्सद और वजह, कि क्यूं नाज़िल फ़रमाया ?

मुसलमानो ! **इन तीनों जलील बातों की जमील तरतीब**[5] तो देखो, सब में पहले ईमान को ज़िक्र फ़रमाया और **सब में पीछे**[6] अपनी इबादत को और बीच में अपने प्यारे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम को, इस लिये कि बिग़ैर ईमान, ता'ज़ीम कार आमद नहीं । **बहुतेरे**[7] **नसारा**[8] हैं कि नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम व तकरीम और हुज़ूर पर से दफ़्ए़ ए'तिराज़ात काफ़िराने लईम में **तस्नीफ़ें कर चुके**[9] **लेकचर दे चुके**[10] मगर जब कि ईमान न लाए, **कुछ मुफ़ीद नहीं**[11] कि ज़ाहिरी ता'ज़ीम हुई, दिल में हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सच्ची अ़ज़्मत होती तो ज़रूर ईमान लाते । फिर जब तक नबिय्ये करीम (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सच्ची ता'ज़ीम न हो, उ़म्र भर इबादते इलाही में गुज़रे, सब बेकार व **मर्दूद**[12] है **बहुतेरे जोगी**[13] और **राहिब**[14] तर्के दुन्या कर के, अपने त़ौर पर ज़िक्रे इबादते इलाही में उ़म्र काट देते हैं बल्कि इन में बहुत वोह हैं, कि لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه का ज़िक्र सीखते और **ज़र्बें लगाते**[15] हैं मगर अज़् **आंजा कि**[16] मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम नहीं, क्या फ़ाइदा ? **अस्लन**[17] **क़ाबिले क़ुबूल बारगाहे इलाही नहीं**[18]

---

(5) इन तीनों अ़ज़्मत वाली बातों की ख़ूब सूरत तरतीब (6) सब से आख़िर में। (7) बहुत से। (8) ईसाई। (9) या'नी बहुत से ईसाई कुफ़्फ़ारे नाहंजार की त़रफ़ से हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर होने वाले ए'तिराज़ात के जवाब में किताबें लिख चुके हैं। (10) तक़रीरें कर चुके या'नी अपने बयानात से, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर काफ़िरों की त़रफ़ से होने वाले ए'तिराज़ात का जवाब दे चुके हैं । (11) बिल्कुल फ़ाइदा मन्द नहीं। (12) क़ाबिले क़बूल नहीं। (13) ऐसे हिन्दू जो दुन्या से तर्के तअ़ल्लुक़ कर लेते हैं । (14) ऐसे ईसाई जो दुन्या से तर्के तअ़ल्लुक़ कर लेते हैं। (15) सूफ़िया दिल को साफ़ करने के लिये एक ख़ास त़रीक़े से ज़िक्र करते हैं और दौराने ज़िक्र दिल की त़रफ़ तवज्जोह करते हैं इसे ज़र्बें लगाना कहते हैं। (16) मगर जब तक कि (17) बिल्कुल (18) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के दरबार में क़ुबूलिय्यत के क़ाबिल नहीं ।

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ऐसों ही को फ़रमाता है :

وَقَدِمۡنَاۤ اِلٰی مَا عَمِلُوۡا مِنۡ عَمَلٍ فَجَعَلۡنٰہُ ہَبَآءً مَّنۡثُوۡرًا ﴿۲۳﴾ (پارہ ۱۹، الفرقان)

तर्जमा : "जो कुछ आ'माल उन्हों ने किये थे, हम ने सब बरबाद कर दिये।"

ऐसों ही को फ़रमाता है :

عَامِلَۃٌ نَّاصِبَۃٌ ۙ﴿۳﴾ تَصۡلٰی نَارًا حَامِیَۃً ۙ﴿۴﴾ (پارہ ۳۰، الغاشیہ ۳ تا ۴)

तर्जमा : अ़मल करें, **मशक़्क़तें भरें**[19] और बदला क्या होगा? येह कि भड़कती आग में पेठेंगे।[20] والعیاذ باللّٰہ تعالٰی

मुसलमानो! कहो : मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम, **मदारे ईमान**[21] व **मदारे नजात**[22] व **मदारे क़बूले आ'माल**[23] हुई या नहीं? कहो : हुई और ज़रूर हुई!

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

قُلۡ اِنۡ کَانَ اٰبَآؤُکُمۡ وَ اَبۡنَآؤُکُمۡ وَ اِخۡوَانُکُمۡ وَ اَزۡوَاجُکُمۡ
وَ عَشِیۡرَتُکُمۡ وَ اَمۡوَالُۨ اقۡتَرَفۡتُمُوۡہَا وَ تِجَارَۃٌ تَخۡشَوۡنَ کَسَادَہَا
وَ مَسٰکِنُ تَرۡضَوۡنَہَاۤ اَحَبَّ اِلَیۡکُمۡ مِّنَ اللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ وَ جِہَادٍ فِیۡ
سَبِیۡلِہٖ فَتَرَبَّصُوۡا حَتّٰی یَاۡتِیَ اللّٰہُ بِاَمۡرِہٖ ؕ وَ اللّٰہُ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِیۡنَ ﴿۲۴﴾ (توبہ ۲۴، پارہ ۱۰)

---

(19) तक्लीफ़ें उठाएं (20) अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह। (21) ईमान की बुन्याद, जिस पर ईमान का दारोमदार है। (22) नजात का सबब। अ़ज़ाब से छुटकारे का सबब। (23) आ'माल की क़बूलिय्यत का सबब। जिस के सबब आ'माल क़बूल होते हों। या'नी आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम ईमान की बुन्याद है, आख़िरत में अ़ज़ाब से छुटकारा पाने और नेक आ'माल की क़बूलिय्यत का सबब है। अगर कोई आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान में مَعَاذَ اللّٰہ तौहीन करे तो न उस का ईमान बाक़ी रहेगा न अ़ज़ाब से छुटकारा होगा और न ही नेक आ'माल क़बूल किये जाएंगे।

तर्जमा : ऐ नबी तुम फ़रमा दो, कि ऐ लोगो ! अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीबियां, तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदागरी जिस के नुक़्सान का तुम्हें अन्देशा है और तुम्हारी पसन्द के मकान, इन में कोई चीज़ भी अगर तुम को **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उस की राह में कोशिश करने से ज़ियादा महबूब है, तो इन्तिज़ार रखो यहां तक कि **अल्लाह** अपना अ़ज़ाब उतारे और **अल्लाह बे हुक्मों को राह नहीं देता**[24]

इस आयत से मा'लूम हुवा कि **जिसे दुन्या जहान में कोई मुअ़ज़्ज़ज़, कोई अ़ज़ीज़, कोई माल, कोई चीज़, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **से ज़ियादा महबूब हो, वोह बारगाहे इलाही से मर्दूद है,**[25] **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे अपनी त़रफ़ **राह न देगा**[26] उसे अ़ज़ाबे इलाही के इन्तिज़ार में रहना चाहिये والعياذ بالله تعالى

तुम्हारे प्यारे नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं :

لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُم حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ

तर्जमा : "तुम में कोई मुसलमान न होगा जब तक मैं उसे उस के मां-बाप, अवलाद और सब आदमियों से ज़ियादा प्यारा न हो जाऊं" येह ह़दीस बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में अनस बिन मालिक अन्सारी (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) से मरवी है। उस ने तो येह बात साफ़ फ़रमा दी कि जो हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा किसी को अ़ज़ीज़ रखे, हरगिज़ मुसलमान नहीं। मुसलमानो कहो : मुह़म्मद, रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को तमाम जहानों से ज़ियादा महबूब रखना **मदारे ईमान व मदारे नजात**[27] हुवा या नहीं ? कहो : हुवा और

---

(24) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) नाफ़रमानों को हिदायत नहीं देता। (25) अगर किसी को दुन्याभर में कोई भी ज़ाहिरी इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत का मालिक, और कोई प्यारा रिश्तेदार, या माल वग़ैरा आक़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा प्यारा हो वोह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के दरबार से ठुकराए जाने के क़ाबिल (मर्दूद) है। (26) हिदायत अ़त़ा नहीं फ़रमाएगा। (27) ईमान की बुन्याद और अ़ज़ाब से छुटकारे का दारो मदार हुवा या नहीं ? हुवा और ज़रूर हुवा।

ज़रूर हुवा। यहां तक तो सारे **कलिमा गो**(28) खुशी खुशी क़बूल कर लेंगे कि हां हमारे दिल में मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की अ़ज़ीम अ़ज़मत है। हां हां मां-बाप अवलाद सारे जहान से ज़ियादा हमें हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत है।

भाइयो ! खुदा ऐसा ही करे, मगर ज़रा **कान लगा कर**(29) अपने रब का इरशाद सुनो :

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

الٓمّٓ ط اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْٓا اَنْ یَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ (پارہ۲۰، العنکبوت۱،۲)

तर्जमा : ''क्या लोग इस **घमन्ड**(30) में हैं, कि इतना कह लेने पर छोड़ दिये जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन की आज़माइश न होगी।

येह आयत मुसलमानों को होशयार कर रही है कि देखो **कलिमा गोई**(31) और **ज़बानी इद्दिआ़ए मुसलमानी**(32) पर तुम्हारा छुटकारा न होगा। हां हां सुनते हो ! आज़माए जाओगे, आज़माइश में पूरे निकले तो मुसलमान ठहरोगे। **हर शै की आज़माइश में येही देखा जाता है कि जो बातें उस की ह़क़ीक़ी व वाक़ेई होने को दरकार हैं, वोह उस में हैं या नहीं ?**(33) अभी कु़रआनो ह़दीस

---

(28) कलिमा पढ़ने वाले। अपने आप को मुसलमान कहने वाले। (29) ग़ौर से, तवज्जोह के साथ। (30) झूटे गुरूर, धोके। (31) सिर्फ़ ज़बान से कलिमा पढ़ना। (32) मुसलमान होने का सिर्फ़ ज़बानी दा'वा करना। (33) हर शै की आज़माइश में येही देखा जाता है कि जो बातें उस शै के अस्ली होने के लिये ज़रूरी हैं वोह उस शै में मौजूद हैं या नहीं मसलन प्लास्टिक के फूल या फल वग़ैरा देखने में तो अस्ली नज़र आते हैं लेकिन जो खुसूसिय्यात अस्ली फलों या फूलों में होती हैं या'नी ज़ाइक़ा, खुश्बू या खाने के क़ाबिल होना वग़ैरा वोह इन नक़्ली फलों या फुलों में नहीं पाई जातीं और इसी वजह से इन्हें नक़्ली कहा जाता है, इसी त़रह़ जो शख़्स बज़ाहिर कलिमा पढ़े, नमाज़ व रोज़े का एहतिमाम करे, लेकिन अगर उस के दिल में आक़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम व मह़ब्बत, जो कि ईमान की बुन्याद है, न हो तो वोह बज़ाहिर मुसलमान तो है मगर नक़्ली मुसलमान या'नी मुनाफ़िक़ है क्यूंकि उस के दिल में ईमान की बुन्याद ता'ज़ीम व मह़ब्बते रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मौजूद नहीं।

इरशाद फ़रमा चुके कि ईमान के ह़क़ीक़ी व **वाक़ेई होने को दो बातें ज़रूर हैं**(34) (1) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम और (2) मुह़म्मद, रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत को **तमाम जहान पर तक़्दीम**(35) तो इस की आज़्माइश का येह **सरीह़**(36) त़रीक़ा है कि तुम को जिन लोगों से कैसी ही ता'ज़ीम, कितनी ही अ़क़ीदत, कितनी ही दोस्ती, कैसी ही **मह़ब्बत का अ़लाक़ा**(37) हो । जैसे तुम्हारे बाप, तुम्हारे उस्ताद, तुम्हारे पीर, तुम्हारी अवलाद, तुम्हारे भाई, तुम्हारे **अह़बाब,**(38) तुम्हारे अस्ह़ाब, तुम्हारे मौलवी, तुम्हारे ह़ाफ़िज़, तुम्हारे मुफ़्ती, तुम्हारे वाइ़ज़ वग़ैरा वग़ैरा **कसे बाशिद**(39) जब वोह रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी करें, अस्लन तुम्हारे क़ल्ब में उन की अ़ज़्मत उन की मह़ब्बत का नामो निशान न रहे फ़ौरन उन से अलग हो जाओ, उन को दूध से मख्खी की त़रह़ निकाल कर फेंक दो, उन की सूरत, उन के नाम से नफ़रत खाओ फिर न तुम अपने रिश्ते, अ़लाक़े, दोस्ती, **उल्फ़त का पास**(40) करो न उस की **मौलविय्यत**(41) **मशख़िय्यत**(42) बुज़ुर्गी, फ़ज़ीलत, को **ख़त़रे में लाओ**(43) आख़िर येह जो कुछ था, मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की **ग़ुलामी की बिना पर था**(44) जब येह

---

(34) ख़ालिस ईमान के लिये दो बातें ज़रूरी हैं । (35) आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत को काइनात की हर शै की मह़ब्बत पर फ़ौक़िय्यत देना । (36) वाज़ेह़ । (37) रिश्तए मह़ब्बत । (38) दोस्त, प्यारे । (39) कोई भी हो । (40) मह़ब्बत व अ़क़ीदत का लिह़ाज़, एह़तिराम । (41) मौलवी होना । (42) पीर होना । (43) दिल में जगह देना, तवज्जोह करना या'नी न उस गुस्ताख़ के मौलवी या पीर होने का लिह़ाज़ करो न उस की बुज़ुर्गी या फ़ज़ीलत को दिल में जगह दो । (44) येह सब कुछ या'नी मौलवी, पीर होना, या बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत इसी वजह से थी कि येह आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का ग़ुलाम था । या'नी किसी को कोई रुत्बा मिला तो ग़ुलामिये रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के ज़रीए़ वरना उस की अपनी ह़क़ीक़त कुछ भी नहीं ।

शख़्स उन ही की शान में गुस्ताख़ हुवा फिर हमें इस से **क्या अ़लाक़ा रहा**[45] इस के **जुब्बे इमामे पर क्या जाएं** ?[46] क्या बहुतेरे यहूदी **जुब्बे**[47] नहीं पहनते ? क्या इमामे नहीं बांधते ? उस के नाम व इल्म व ज़ाहिरी फ़ज़्ल को ले कर क्या करें ? क्या बहुतेरे पादरी, बकसरत फ़लसफ़ी बड़े बड़े उ़लूम व फ़ुनून नहीं जानते ? **और अगर येह नहीं**[48] बल्कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के **मुक़ाबिल**[49] तुम ने इस की **बात बनानी चाही**[50] उस ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से गुस्ताख़ी की और तुम ने इस से **दोस्ती निबाही**[51] या इसे हर बुरे से बदतर बुरा न जाना या इसे बुरा कहने पर बुरा माना या इसी क़दर कि तुम ने इस अम्र में **बे परवाई मनाई**[52] या तुम्हारे दिल में इस की त़रफ़ से सख़्त नफ़रत न आई, तो लिल्लाह अब तुम ही इन्साफ़ कर लो कि तुम ईमान के इम्तिह़ान, क़ुरआनो ह़दीस ने जिस पर ह़ुसूले ईमान का **मदार रखा था**[53] उस से कितने दूर निकल गए ? मुसलमानो ! क्या जिस के दिल में मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम होगी वोह उन के **बद गो**[54] की **वुक़्अ़त कर सकेगा** ?[55] अगर्चे इस का **पीर या उस्ताद या पिदर ही क्यूं न हो**[56] क्या जिसे

---

(45) क्या तअ़ल्लुक़ रहा ? या'नी कोई तअ़ल्लुक़ न रहा। (46) इस के जुब्बे या पगड़ी का क्या लिह़ाज़ करे ? या'नी लिह़ाज न करें। (47) लम्बा कुरता। जो आ़म तौ़र पर सूफ़िया या उ़लमा ह़ज़रात पहनते हैं। या'नी सिर्फ़ जुब्बे पहन लेने से ही कोई अल्लाह तआ़ला का वली नहीं बन जाता। (48) अगर तुम ने ऐसा न किया या'नी इस गुस्ताख़ को बुरा न जाना। (49) मुक़ाबले पर। (50) इ़ज़्ज़त रखना चाही। इस गुस्ताख़ की इ़ज़्ज़त का लिह़ाज़ किया। (51) वफ़ादारी की। (52) या'नी तुम ने सिर्फ़ इतना ही किया कि उस गुस्ताख़ के मुआ़मले में ग़फ़्लत की और इस की गुस्ताख़ी को सख़्त बुरा न जाना। (53) या'नी तुम ईमान के इम्तिह़ान में कि जिस पर क़ुरआनो ह़दीस ने ख़ालिस ईमान का दारो मदार रखा था या'नी ता'ज़ीम व मह़ब्बते रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)। (54) गुस्ताख़। गाली देने वाला। बुरा भला कहने वाला। तौहीन करने वाला। (55) क्या वोह गुस्ताख़ की इ़ज़्ज़त कर सकेगा ? (56) चाहे वोह गुस्ताख़ उस का पीर, उस्ताद या बाप ही क्यूं न हो ?

मुह़म्मद, रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तमाम जहान से ज़ियादा प्यारे हों वोह उन के गुस्ताख़ से फ़ौरन सख़्त शदीद नफ़रत न करेगा ? अगर्चे उस का दोस्त या **बरादर**(57) या **पिसर**(58) ही क्यूं न हो, लिल्लाह अपने ह़ाल पर रह़म करो अपने रब की बात सुनो, देखो वोह **क्यूं कर**(59) तुम्हें अपनी रह़मत की त़रफ़ बुलाता है, देखो :

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ط
اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ط وَيُدْخِلُهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوْا عَنْهُ ط اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ط اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾ (پارہ۲۸، المجادلۃ:۲۲)

तर्जमा : तो न पाएगा उन्हें जो ईमान लाते हैं **अल्लाह** और क़ियामत पर कि उन के दिल में उन की मह़ब्बत आने पाए जिन्हों ने ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) और रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से मुख़ालफ़त की, चाहे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या अ़ज़ीज़ ही क्यूं न हों ? येह हैं वोह लोग जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श कर दिया और **अपनी त़रफ़ की रूह़**(60) से उन की मदद फ़रमाई और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा रहेंगे उन में **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी, येही लोग **अल्लाह** वाले हैं। **अल्लाह** वाले ही मुराद को पहुंचे।

---

(57) भाई। (58) बेटा। (59) किस त़रह़ से। (60) सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام

इस आयते करीमा में साफ़ फ़रमा दिया कि जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) या रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जनाब में गुस्ताख़ी करे, मुसलमान उस से दोस्ती न करेगा, जिस का सरीह़ येह **मफ़ाद हुवा कि**[61] जो उस से दोस्ती करे वोह मुसलमान न होगा। फिर इस हुक्म का क़त्अ़न आ़म होना **बित्तसरीह़ इरशाद फ़रमाया**[62] कि बाप, बेटे, भाई, अ़ज़ीज़ सब को गिनाया, या'नी कोई कैसा ही तुम्हारे **ज़ो'म**[63] में **मुअ़ज़्ज़म**[64] या कैसा ही तुम्हें **बित्तबअ़**[65] मह़बूब हो, ईमान है तो गुस्ताख़ी के बा'द उस से मह़ब्बत नहीं रख सकते, उस की वुक़्अ़त नहीं मान सकते वरना मुसलमान न रहोगे। मौला سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى का इतना फ़रमाना ही मुसलमान के लिये **बस था**[66] मगर देखो वोह तुम्हें अपनी रह़मत की त़रफ़ बुलाता, अपनी अ़ज़ीम ने'मतों का लालच दिलाता है कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत के आगे तुम ने किसी का **पास न किया**[67] किसी से अ़लाक़ा न रखा तो तुम्हें क्या क्या फ़ाइदे ह़ासिल होंगे ?

(1) **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) तुम्हारे दिलों में ईमान नक़्श कर देगा जिस में اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ हुस्ने ख़ातिमा की **बिशारते जलीला**[68] है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का लिखा नहीं मिटता।

(2) **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) **रूहुल क़ुदुस**[69] से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।

---

(61) जिन से वाज़ेह़ त़ौर पर ये पता चला कि (62) या'नी इस हुक्म को कि "**मुसलमान कभी गुस्ताख़ से दिली दोस्ती न करेगा**" यक़ीनी त़ौर पर सब के लिये एक सा होना वज़ाह़त से इरशाद फ़रमाया कि गुस्ताख़ ख़्वाह कोई भी हो अगर्चे बाप हो, बेटा हो, दोस्त या रिश्तेदार हो ह़क़ीक़ी मुसलमान वोह है कि जो उन से गुस्ताख़ी की बिना पर तअ़ल्लुक़ तोड़ दे। (63) ख़याल में (64) इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत वाला। (65) फ़ित़री त़ौर पर। (66) काफ़ी था। (67) लिह़ाज़ न रखा। (68) या'नी ईमान पर ख़ातिमे की अ़ज़ीम ख़ुश ख़बरी है। (69) जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام

(3) तुम्हें हमेशगी की जन्नतों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हैं।
(4) तुम ख़ुदा के गुरौह कहलाओगे, ख़ुदा वाले हो जाओगे।
(5) मुंह मांगी मुरादें पाओगे बल्कि उम्मीद व ख़याल व गुमान से **करोड़ों दरजे अफ़ज़ूं**।(70)
(6) सब से ज़ियादा येह कि **अल्लाह** तुम से राज़ी होगा।
(7) येह कि फ़रमाता है : "मैं तुम से राज़ी तुम मुझ से राज़ी" बन्दे के लिये इस से ज़ाइद और क्या ने'मत होती कि उस का रब उस से राज़ी हो मगर **इन्तिहाए बन्दा नवाज़ी**(71) येह कि फ़रमाया **अल्लाह** उन से राज़ी वोह **अल्लाह** से राज़ी।

मुसलमानो ! **ख़ुदा लगती कहना**(72) अगर आदमी करोड़ जानें रखता हो और सब की सब इन अ़ज़ीम दौलतों पर **निसार कर दे**(73) तो **वलिल्लाह**(74) कि **मुफ़्त पाएं**(75) फिर ज़ैद व अ़म्र से अ़लाक़ए ता'ज़ीम व महब्बत, **यक लख़्त क़त्अ़ कर देना**(76) **कितनी (कोई) बड़ी बात है ?**(77) जिस पर **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) इन **बे बहा**(78) ने'मतों का वा'दा फ़रमा रहा है और उस का वा'दा यक़ीनन सच्चा है। कुरआने करीम की आ़दते करीमा है कि जो हुक्म फ़रमाता है जैसा कि उस के मानने वालों को अपनी ने'मतों की बशारत देता है, न मानने वालों पर अपने **अ़ज़ाबों का ताज़ियाना**(79) भी रखता है कि जो **पस्त हिम्मत**(80) ने'मतों की लालच में न आएं, सज़ाओं के डर से, **राह पाएं**।(81) वोह अ़ज़ाब भी सुन लीजिये :

---

(70) करोड़ों दरजे ज़ियादा। (71) गुलामों पर मेहरबानी की इन्तिहा। (72) सच्ची बात (73) फ़िदा कर दे। लुटा दे। (74) **अल्लाह** की क़सम। (75) मुफ़्त में मिल गई। (76) गुस्ताख़ों से महब्बत व ता'ज़ीम का रिश्ता मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर देना। (77) या'नी ज़ियादा बड़ी बात नहीं, (78) अनमोल, इन्तिहाई क़ीमती। (79) अ़ज़ाब की धमकी। अ़ज़ाब का कोड़ा। (80) कम हिम्मत वाले। (81) हिदायत पाएं।

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡۤا اٰبَآءَكُمۡ وَاِخۡوَانَكُمۡ اَوۡلِيَآءَ اِنِ
اسۡتَحَبُّوا الۡكُفۡرَ عَلَى الۡاِيۡمَانِ ؕ وَمَنۡ يَّتَوَلَّهُمۡ مِّنۡكُمۡ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۳﴾ (پارہ ۱۰،التوبہ۲۳)

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अपने बाप, अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वोह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुम में जो कोई इन से रफ़ाक़त पसन्द करे वोही लोग **सितमगार**(82) हैं।

और फ़रमाता है :

"يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡا عَدُوِّىۡ وَعَدُوَّكُمۡ اَوۡلِيَآءَ"

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।

और फ़रमाता है :

تُسِرُّوۡنَ اِلَيۡهِمۡ بِالۡمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعۡلَمُ بِمَاۤ اَخۡفَيۡتُمۡ وَمَاۤ اَعۡلَنۡتُمۡ ؕ
وَمَنۡ يَّفۡعَلۡهُ مِنۡكُمۡ فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيۡلِ ﴿۱﴾

तर्जमा : तुम छुप कर उन से दोस्ती करते हो और मैं ख़ूब जानता हूं जो तुम छुपाते और जो ज़ाहिर करते हो और तुम में जो ऐसा करेगा बेशक वोह ज़रूर सीधी राह से बहका।

मज़ीद फ़रमाता है :

لَنۡ تَنۡفَعَكُمۡ اَرۡحَامُكُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُكُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ۚ يَفۡصِلُ
بَيۡنَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ"

(پارہ ۲۸،سورہ الممتحنۃ ۱تا۳)

(82) ज़ालिम।

तर्जमा : तुम्हारे रिश्ते और तुम्हारे बच्चे तुम्हें कुछ नफ़्अ़ न देंगे। क़ियामत के दिन तुम में और तुम्हारे प्यारों में जुदाई डाल देगा कि तुम में एक, दूसरे के कुछ काम न आ सकेगा और **अल्लाह** तुम्हारे आ'माल देख रहा है।

और फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ۔ (پارہ ٦، المآئدۃ ٥١)

तर्जमा : तुम में जो उन से दोस्ती करेगा तो बेशक वोह उन्हीं में से है। बेशक **अल्लाह** हिदायत नहीं करता ज़ालिमों को।

पहली दो आयतों में तो इन से दोस्ती करने वालों को ज़ालिम व **गुमराह**(83) ही फ़रमाया था, इस आयते करीमा ने बिल्कुल **तस्फ़िया फ़रमा दिया**(84) कि जो उन से दोस्ती रखे वोह भी उन में से है, उन ही की त़रह़ काफ़िर है, उन के साथ एक रस्सी में बांधा जाएगा और वोह कोड़ा भी याद रखिये कि "उन से **मेल रखते हो**(85) और मैं तुम्हारे छुपे और ज़ाहिर सब को जानता हूं।" अब वोह रस्सी भी सुन लीजिये जिस में रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी करने वाले बांधे जाएंगे। والعیاذ باللہ تعالٰی

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ٦١ (پارہ ١٠، التوبۃ ٦١)

तर्जमा : और जो रसूलुल्लाह को **ईज़ा**(86) देते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

---

(83) राह से भटका हुवा। (84) आयते करीमा ने बिल्कुल वाज़ेह़ त़ौर पर फ़ैसला सुना दिया। (85) तअ़ल्लुक़ रखते हो, मुलाक़ातें करते हो। (86) तक्लीफ़।

और फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا

وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا (پارہ ۲۲،الاحزاب۵۷)

तर्जमा : बेशक जो **अल्लाह** व रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ईज़ा देते हैं उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में, और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ईज़ा से पाक है उसे कौन ईज़ा दे सकता है ? मगर ह़बीब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी को अपनी ईज़ा फ़रमाया । इन आयतों से उस शख़्स पर जो रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के **बदगोयों**[87] से मह़ब्बत का बरताव करे, सात कोड़े साबित हुवे। (1) वोह ज़ालिम है। (2) गुमराह है। (3) काफ़िर है। (4) उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (5) वोह आख़िरत में ज़लीलो ख़्वार होगा। (6) उस ने **अल्लाह** वाहि़दे क़ह्हार को ईज़ा दी। उस पर दोनों जहान में ख़ुदा की ला'नत है। والعیاذ باللہ تعالٰی

ऐ मुसलमान ! ऐ मुसलमान ! **ऐ उम्मतिये सय्यिदुल इन्से वल जान्न**[88] (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **ख़ुदारा**,[89] ज़रा इन्साफ़ कर, **वोह सात बेहतर**[90] हैं जो इन लोगों से **यकलख़्त**[91] **तर्के अ़लाक़ा**[92] कर देने पर मिलते हैं कि ﴾1﴿ **दिल में ईमान जम जाए**[93] ﴾2﴿ **अल्लाह** मददगार हो ﴾3﴿ जन्नत मक़ाम हो ﴾4﴿ **अल्लाह** वालों में शुमार हो ﴾5﴿ मुरादें मिलें ﴾6﴿ ख़ुदा तुझ से राज़ी हो ﴾7﴿ तू ख़ुदा से राज़ी हो। या **येह सात भले**[94] हैं ? जो इन लोगों से तअ़ल्लुक़ लगा रहने पर पड़ेंगे कि ﴾1﴿ ज़ालिम

---

(87) गुस्ताख़ों से। (88) ऐ इन्सानों और जिन्नों के सरदार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के उम्मती। (89) **अल्लाह** के वासिते। (90) वोह सात इन्आ़मात बेहतर हैं। (91) फ़ौरन। (92) तअ़ल्लुक़ तोड़ने पर मिलते हैं। (93) दिल में ईमान मज़बूत हो जाए। (94) या येह सात अ़ज़ाब बेहतर हैं ?

﴾2﴿ गुमराह ﴾3﴿ काफ़िर ﴾4﴿ जहन्नमी हो ﴾5﴿ आख़िरत में **ख़्वार**(95) हो ﴾6﴿ ख़ुदा को ईज़ा दे ﴾7﴿ ख़ुदा दोनों जहान में ला'नत करे। **हयहात-हयहात**(96) कौन कह सकता है ? कि **येह सात अच्छे**(97) हैं, कौन कह सकता हैं ? कि **वोह सात**(98) छोड़ने के हैं, मगर **जाने बरादर** !(99) ख़ाली येह कह देना तो काम नहीं देता, वहां तो **इम्तिहान की ठहरी है**(100) अभी आयत सुन चुके الٓمّٓ اَحَسِبَ النَّاس क्या इस **भुलावे**(101) में हो कि बस ज़बान से कह कर छूट जाओगे इम्तिहान न होगा ?

हां येही इम्तिहान का वक़्त है ! देखो येह **अल्लाह** वाहिदे क़हहार की त़रफ़ से तुम्हारी **जांच**(102) है। देखो ! वोह फ़रमा रहा है कि तुम्हारे रिश्ते, अ़लाक़े क़ियामत में काम न आएंगे, मुझ से तोड़ कर **किस से जोड़ते हो**(103) देखो ! वोह फ़रमा रहा है कि मैं ग़ाफ़िल नहीं, मैं बे ख़बर नहीं, तुम्हारे आ'माल देख रहा हूं, तुम्हारे **अक़्वाल**(104) सुन रहा हूं तुम्हारे दिलों की ह़ालत से ख़बरदार हूं, देखो ! बे परवाई न करो, पराए पीछे, **अपनी आक़िबत न बिगाड़ो**(105) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबिल ज़िद से काम न लो, देखो वोह तुम्हें अपने सख़्त अ़ज़ाब से डराता है, उस के अ़ज़ाब से कहीं पनाह नहीं, देखो वोह तुम्हें अपनी रह़मत की त़रफ़ बुलाता है, बे उस की रह़मत के **कहीं निबाह नहीं**(106) देखो और गुनाह तो **निरे गुनाह होते हैं**(107) जिन पर अ़ज़ाब का इस्तिह़क़ाक़ हो, **मगर ईमान नहीं जाता**(108) अ़ज़ाब हो कर ख़्वाह रब की रह़मत, ह़बीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शफ़ाअ़त

---

(95) ज़लील (96) या'नी हरगिज़ नहीं। (97) येह सात अ़ज़ाबात अच्छे हैं ? (98) वोह सात इन्आ़मात जो ऊपर मज़्कूर हुवे। (99) प्यारे भाई। (100) इम्तिहान का फ़ैसला हो चुका है। (101) ग़फ़्लत। (102) आज़्माइश, इम्तिहान। (103) मुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़ कर किस गुस्ताख़ से रिश्ता जोड़ते हो ? (104) बातें। (105) किसी ग़ैर (गुस्ताख़) की वजह से अपनी आख़िरत ख़राब मत करो। (106) उस की रह़मत के बिग़ैर कहीं पनाह नहीं। (107) या'नी कुफ़्रो शिर्क के इलावा (108) या'नी कुफ़्रो शिर्क के इलावा दीगर गुनाह से बन्दा अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो मगर फिर भी काफ़िर नहीं होता।

से, **बे अ़ज़ाब ही छुटकारा हो जाएगा या हो सकता है।**(109) मगर येह मुहम्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम का मक़ाम है उन की अ़ज़्मत, उन की महब्बत, मदारे ईमान है, कुरआने मजीद की आयतें सुन चुके कि जो इस मुआ़मले में कमी करे उस पर दोनों जहान में ख़ुदा की ला'नत है। देखो जब ईमान गया, फिर अस्लन, **अब्दाल आबाद तक**(110) कभी, किसी त़रह हरगिज़, अस्लन, अ़ज़ाबे शदीद से रिहाई न होगी। गुस्ताख़ी करने वाले, जिन का तुम यहां कुछ पास लिहाज़ करो, वहां **अपनी भुगत रहे होंगे**(111) तुम्हें बचाने न आएंगे और आएं तो क्या कर सकते हैं? फिर ऐसों का लिहाज़ कर के, अपनी जान को हमेशा हमेशा ग़ज़बे जब्बार (عَزَّوَجَلَّ) व अ़ज़ाबे नार में फंसा देना, क्या अ़क़्ल की बात है? **लिल्लाह लिल्लाह**(112) ज़रा देर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिवा सब **ई व आं से नज़र उठा कर**(113) आंखें बन्द करो और गर्दन झुका कर अपने आप को **अल्लाह** वाहिदे क़ह्हार के सामने ह़ाज़िर समझो और निरे ख़ालिस सच्चे इस्लामी दिल के साथ मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की **अ़ज़ीम अ़ज़्मत**(114) **बुलन्द इ़ज़्ज़त**(115) **रफ़ीअ़ वजाहत**(116) जो उन के रब ने उन्हें बख़्शी और उन की ता'ज़ीम की, उन की तौक़ीर पर **ईमान व इस्लाम की बिना रखी**(117) उसे दिल में जमा कर इन्साफ़ व ईमान से कहो, क्या **जिस ने कहा**(118) कि शैत़ान को येह वुस्अ़त,

---

(109) या'नी दीगर गुनाहों पर या तो कुछ अ़ज़ाब होने के बा'द या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से अ़ज़ाब के बिग़ैर ही छुटकारा हो जाएगा या हो सकता है। (110) हमेशा हमेशा के लिये किसी सूरत में। (111) ख़ुद अ़ज़ाब का शिकार होंगे। (112) **अल्लाह** के वासित़े। (113) हर ऐरे ग़ैरे से नज़र उठा कर। (114) बहुत बड़ी बुज़ुर्गी। (115) ऊंचा मर्तबा। (116) इन्तिहाई बुलन्द मर्तबा। (117) उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर करने पर ईमान और इस्लाम की बुन्याद रखी या'नी उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर को ईमान की जान क़रार दिया। जो उन की ता'ज़ीम न करे काफ़िर है। (118) येह क़ौल ख़लील अम्बेठवी का है।

नस्स से साबित हुई[119] फ़ख्रे आलम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की **वुस्अ़ते इल्म की कौन सी नस्स क़त्इ है?**[120] उस ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी न की ? क्या उस ने इब्लीसे लईन के इल्म को रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के **इल्मे अक़्दस पर न बढ़ाया** ?[121] क्या वोह रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वुस्अ़ते इल्म से काफ़िर हो कर शैत़ान की वुस्अ़ते इल्म पर ईमान न लाया ? मुसलमानो ! ख़ुद उस बदगो से इतना ही कह देखो कि **ओ इल्म में शैत़ान के हमसर** ![122] देखो ! तो वोह बुरा मानता है या नहीं ह़ालांकि उसे तो इल्म में शैत़ान से कम भी न कहा बल्कि शैत़ान के बराबर ही बताया, फिर कम कहना क्या तौहीन न होगी ? और अगर वोह **अपनी बात पालने को**[123] इस पर नागवारी ज़ाहिर न करे अगर्चे **दिल में क़त्अ़न नागवार मानेगा,**[124] तो उसे छोड़िये और किसी **मुअ़ज़्ज़म**[125] से कह दीजिये और पूरा ही इम्तिह़ान मक़्सूद हो तो क्या कचहरी में जा कर आप किसी ह़ाकिम को इन ही लफ़्ज़ों से **ता'बीर कर सकते हैं**[126] देखिये ! अभी अभी **खुला जाता है**[127] कि तौहीन हुई और बेशक हुई फिर क्या रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तौह़ीन करना कुफ़्र नहीं ? ज़रूर है और बिल यक़ीन है। क्या जिस ने शैत़ान की वुस्अ़ते

---

(119) बक़ौले गुस्ताख़, शैत़ान के इल्म का वसीअ़ (ज़ियादा) होना क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। (120) (गुस्ताख़ हम से पूछता है कि) फ़ख्रे आलम (आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इल्म के वसीअ़ होने का सुबूत क़ुरआनो ह़दीस में कहां मौजूद है ? या'नी इस गुस्ताख़ को शैत़ान के वसीअ़ इल्म की दलील क़ुरआनो ह़दीस में तो नज़र आ गई लेकिन आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इल्म शरीफ़ के वसीअ़ होने का सुबूत न क़ुरआन में मिला न ह़दीस में। ولاحول ولا قوة الا باللّٰه (121) क्या सरकार (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इल्म मुबारक से शैत़ान के इल्म को ज़ियादा क़रार नहीं दिया ? (122) ओ इल्म में शैत़ान के बराबर ! (123) अगर वोह अपनी बात को दुरुस्त क़रार देने के लिये या'नी अपनी बात का भरम रखने के लिये। (124) जब कि वोह (गुस्ताख़) इन अल्फ़ाज़ से पुकारा जाना दिल में यक़ीनन बुरा मानेगा। (125) हर वोह शख़्स जिस की इ़ज़्ज़त की जाती हो। (126) क्या किसी जज को कोर्ट के अन्दर यूं कह सकते हैं कि "ओ इल्म में शैत़ान के बराबर।" (127) वाज़ेह़ हो जाएगा।

इल्म को नस्स से साबित मान कर हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये वुस्अ़ते इल्म मानने वाले को कहा : **"तमाम नुसूस को रद्द कर के एक शिर्क साबित करता है।"**(128) और कहा : **"शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है?"**(129) उस ने इब्लीसे लईन को खुदा का शरीक माना या नहीं ? ज़रूर माना, कि जो बात मख़्लूक़ में एक के लिये साबित करना शिर्क होगी, वोह जिस किसी के लिये साबित की जाए, **क़त्अ़न शिर्क ही रहेगी**(130) कि खुदा جَلَّ جَلَالُہٗ का शरीक कोई नहीं हो सकता, जब रसूलुल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये येह वुस्अ़ते इल्म माननी शिर्क ठहराई, जिस में कोई हिस्सा ईमान का नहीं तो ज़रूर इतनी वुस्अ़त खुदा की वोह ख़ास सिफ़त हुई जिस को **खुदाई लाज़िम है**(131) जब तो नबी के लिये इस का मानने वाला काफ़िर मुशरिक हुवा और **उस ने**(132) वोही वुस्अ़त, वोही सिफ़त खुद अपने मुंह, इब्लीस के लिये साबित मानी तो साफ़ साफ़ शैत़ान को खुदा का शरीक ठहराया। मुसलमानो ! क्या येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) दोनों की तौहीन न हुई ? ज़रूर हुई, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की तौहीन तो ज़ाहिर है कि उस का शरीक बनाया और वोह भी किसे ? इब्लीसे लईन को और रसूलुल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की तौहीन यूं, कि इब्लीस का मर्तबा इतना बढ़ा दिया, कि **वोह**(133) तो खुदा की ख़ास सिफ़त में हिस्सेदार है, और **येह**(134) इस से ऐसे महरूम, कि इन के लिये साबित मानो, तो मुशरिक हो जाओ। मुसलमानो ! क्या

---

(128) बक़ौले गुस्ताख़ अगर जो कोई शख़्स आक़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इल्मे मुक़द्दस को वसीअ़ माने तो वोह कुरआनो ह़दीस को ठुकरा कर एक शिर्क साबित करता है। गोया आक़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का इल्म अगर वसीअ़ माना जाए तो येह (बक़ौले गुस्ताख़) शिर्क हो जाएगा। (129) या'नी हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इल्मे मुक़द्दस को वसीअ़ मानना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है ? (130) या'नी अगर आक़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये इल्म की वुस्अ़त मानना शिर्क है तो शैत़ान के लिये मानना भी शिर्क ही होगा क्यूंकि खुदा का कोई भी शरीक नहीं हो सकता। (131) गोया (बक़ौले गुस्ताख़) जिस किसी में वोह सिफ़त पाई जाए, वोह खुदा ही हो सकता है और कुछ नहीं। (132) उस गुस्ताख़ ने। (133) शैत़ान। (134) या'नी आक़ा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

खुदा और रसूलुल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की तौहीन करने वाला काफ़िर नहीं ? ज़रूर है।

क्या **जिस ने कहा**(135) कि "बा'ज़ उ़लूमे ग़ैबिय्या मुराद हैं तो इस में हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की क्या तख़्सीस है ? ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद व अ़म्र बल्कि **हर सबी**(136) व **मजनून**(137) बल्कि **जमीअ़**(138) **हैवानात व बहाइम**(139) के लिये भी ह़ासिल है" क्या उस ने मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को सरीह़ गाली न दी ? क्या नबिय्ये करीम (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को इतना ही इल्मे ग़ैब दिया गया था, जितना हर पागल और हर चोपाए को ह़ासिल है ?

मुसलमान ! मुसलमान ! ऐ मुह़म्मद रसुलुल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के उम्मती ! तुझे अपने दीन व ईमान का वासिता क्या इस नापाक व **मलऊ़न गाली**(140) के सरीह़ होने में तुझे कुछ शुबा गुज़र सकता है ? مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की अ़ज़्मत तेरे दिल से ऐसी निकल गई हो कि इस शदीद गाली में भी उन की तौहीन न जाने और अगर अब भी तुझे ए'तिबार न आए, तो खुद उन ही बदगोयों से पूछ देख, कि आया तुम्हें और तुम्हारे उस्तादों, पीरजियों को कह सकते हैं कि ऐ फुलां ! तुझे इतना ही इल्म है जितना सुव्वर को है तेरे उस्ताद को ऐसा ही इल्म था जैसे कुत्ते को है तेरे पीर को इसी क़दर इल्म था जैसा गधे को है, या मुख़्तसर तौर पर इतना ही हो कि ओ इल्म में उल्लू, गधे, कुत्ते, सुव्वर के हमसरो ! देखो तो वोह इस में अपनी और अपने उस्ताद, पीर की तौहीन समझते हैं या नहीं ? क़त्अ़न समझेंगे और क़ाबू पाएं तो **सर हो जाएं**(141) फिर क्या सबब कि जो कलिमा उन के ह़क़ में तौहीन व **कस्रे शान**(142) हो

(135) येह क़ौल अशरफ़ अ़ली थानवी का है जो इस ने अपने रिसाले "**हिफ़्ज़ुल ईमान**" के स. 8 पर लिखा है। (136) ज़हर बच्चे। (137) पागल (138) तमाम। (139) जानवर और चोपाए (चार पाउं वाले जानवर)। (140) तौहीन। (141) तंग करें (142) गुस्ताख़ी, शान में कमी।

मुहम्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तौहीन न हो ? क्या مَعَاذَ الله इन की अ़ज़्मत उन से भी **गई गुज़री**(143) है ? क्या इसी का नाम ईमान है ? حَاشَالِلّٰه حَاشَالِلّٰه(144) क्या **जिस ने कहा**(145) क्यूंकि हर शख़्स को किसी न किसी ऐसी बात का इल्म होता है जो दूसरे शख़्स से **मख़्फ़ी**(146) है तो चाहिये कि सब को आ़लिमे ग़ैब कहा जावे, फिर अगर ज़ैद इस का **इल्तिज़ाम कर ले**(147) कि हां मैं सब को आ़लिमुल ग़ैब कहूंगा तो फिर इल्मे ग़ैब को **मिन जुमला कमालाते नबविय्या शुमार क्यूं किया जाता है**?(148) जिस अम्र में मोमिन बल्कि इन्सान की भी खुसूसिय्यत न हो वोह कमालाते नबुव्वत से कब हो सकता है ? और अगर इल्तिज़ाम न किया जावे तो नबी व ग़ैरे नबी, में **वजहे फ़र्क़ बयान करना ज़रूर है**(149) इन्तिहा। क्या रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और जानवरों, पागलों में फ़र्क़ न जानने वाला हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को गाली नहीं देता ? क्या उस ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के कलाम का सराहतन **रद्द व इब्ताल न कर दिया** ?(150) देखो :

---

(143) कमतर। (144) **अल्लाह** की क़सम हरगिज़ नहीं। (145) येह क़ौल भी अशरफ़ अ़ली का ही है। (146) छुपा हुवा है। (147) इक़रार कर ले, इरादा कर ले कि हां ऐसा ही है। (148) या'नी इल्मे ग़ैब अगर सब को ह़ासिल है तो फिर इस को नबुव्वत के कमालात में क्यूं गिना जाता है ? या'नी येह क्यूं कहा जाता है कि फ़ुलां नबी عَلَيْهِ السَّلَام को इल्मे ग़ैब ह़ासिल है क्यूंकि ऐसा इल्मे ग़ैब तो हर बच्चे पागल और हैवान वग़ैरा को ह़ासिल है। (149) (गोया गुस्ताख़ हम से कहता है) अगर सब को आ़लिमुल ग़ैब न कहा जाए तो नबी और ग़ैरे नबी में फ़र्क़ करने की वजह बताना आप पर लाज़िम है या'नी बा'ज़ इल्मे ग़ैब तो सब बच्चों, जानवरों वग़ैरा को ह़ासिल है तो आप (अहले सुन्नत) अम्बिया को तो इस इल्म के जानने की वजह से आ़लिमुल ग़ैब कहते हैं और जानवरों को नहीं कहते तो इस की वजह ज़रूर बताएं ? जब कि हम अहले सुन्नत हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को आ़लिमुल ग़ैब नहीं कहते बल्कि येह अ़क़ीदा रखते हैं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने इन्हें अपने ला महदूद इल्म में से "**कुछ**" इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया है और इस वजह से हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बा कमाल हैं। (150) या'नी क्या इस गुस्ताख़ ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के कलाम को खुल्लम खुल्ला झूटा ठहरा कर इस का इन्कार नहीं किया ?

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا (پارہ ۵، النسآء ۱۱۳)

तर्जमा : ऐ नबी **अल्लाह** ने तुम को सिखाया जो तुम न जानते थे और **अल्लाह** का फ़ज़्ल तुम पर बड़ा है।

यहां ना मा'लूम बातों का इल्म अ़ता फ़रमाने को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने अपने ह़बीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के **कमालात व मदाइह़ में शुमार फ़रमाया**।(151)

और फ़रमाता है :

وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ (پ۱۳، یوسف ۶۸)

तर्जमा : और बेशक या'क़ूब हमारे सिखाए से इल्म वाला है।

और फ़रमाता है :

وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ

तर्जमा : मलाइका ने इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को एक इल्म वाले लड़के इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की बिशारत दी।

और फ़रमाता है :

وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا (پ۱۵، الکھف ۶۵)

तर्जमा : और हम ने ख़िज़्र को अपने पास से एक इल्म सिखाया।

वग़ैरहा(152) आयात, जिन में **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) ने इल्म को कमालाते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में गिना। अब **ज़ैद**(153) की जगह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का **नामे पाक लीजिये**(154) और इल्मे ग़ैब की जगह **मुत़लक़ इल्म**(155) जिस

---

(151) कमाल और ता'रीफ़ के त़ौर पर इरशाद फ़रमाया। (152) और इन आयतों के इलावा दीगर आयतों में। (153) ज़ैद व बक्र मिसाल के त़ौर पर किसी भी शख़्स को कह सकते हैं कोई ख़ास आदमी मुराद नहीं होता। यहां ज़ैद से मुराद कोई सुन्नी शख़्स है। (154) गुस्ताख़ की इबारत में जहां ज़ैद का लफ़्ज़ है वहां **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का नामे पाक रखिये। (155) या'नी गुस्ताख़ की इबारत में इल्मे ग़ैब की जगह सिर्फ़ इल्म। ख़्वाह किसी भी शै का इल्म हो।

का **हर चोपाए को मिलना और भी ज़ाहिर है**(156) और देखिये कि इस **बद गोए मुस्तफ़ा की तक़रीर**(157) किस त़रह़ कलामुल्लाह ﷻ का रद्द कर रही है या'नी येह बदगो खुदा के मुक़ाबिल खड़ा हो कर कह रहा है कि आप (या'नी नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ाते मुक़द्दसा पर **इ़ल्म का इत़लाक़ किया जाना**(158) अगर ब क़ौले खुदा सह़ीह़ हो तो **दरयाफ़्त त़लब येह अम्र है**(159) कि इस इ़ल्म से मुराद बा'ज़ इ़ल्म है या कुल उ़लूम, अगर बा'ज़ उ़लूम मुराद हैं तो इस में हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की **क्या तख़्सीस है** ?(160) ऐसा इ़ल्म तो **ज़ैद** व **अ़म्र** बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीअ़ ह़ैवानात व बहाइम के लिये भी ह़ासिल है क्यूंकि हर शख़्स को किसी न किसी बात का इ़ल्म होता है तो चाहिये कि सब को आ़लिम कहा जाए, फिर अगर खुदा इस का इल्तिज़ाम कर ले कि हां मैं सब को आ़लिम कहूंगा तो फिर इ़ल्म को **मिन जुम्ला कमालाते नबविय्या**(161) शुमार क्यूं किया जाता है ? जिस अम्र में मोमिन बल्कि इन्सान की भी ख़ुसूसिय्यत न हो वोह कमालाते नबुव्वत से कब हो

---

(156) या'नी सिर्फ़ इ़ल्म का लफ़्ज़ रखें कि "**इ़ल्म**" का हर जानवर को मिलना ज़ियादा वाज़ेह़ है कि हर जानवर को कुछ न कुछ बातों का इ़ल्म तो होता है मसलन उड़ना, ख़ूराक की तलाश, दुश्मन से बचने की तदबीरें करना । वग़ैरा तो क्या इन बातों के जानने से येह जानवर आ़लिम कहलाएंगे ? हरगिज़ नहीं जानवर वग़ैरा कभी आ़लिम नहीं कहला सकते । इसी त़रह़ अगर जानवरों को बिलफ़र्ज़ किसी आने वाले ह़ादिसे का अन्दाज़ा हो जाए या येह फ़िरिश्तों को नाज़िल होता देख लें तो क्या مَعَاذَ اللّٰه अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बराबर हो जाएंगे ? (157) उस गुस्ताख़ का कलाम, बातें । (158) या'नी येह कहना कि आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) या दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वसीअ़ इ़ल्म मिला । (159) पूछने के लाइक़ येह बात है । (160) क्या ख़ास ख़ूबी है ? या'नी येह बात (इ़ल्म) सरकार (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही के लिये ख़ास नहीं है (مَعَاذَ اللّٰه) बात करने का अन्दाज़ कितना तौहीन आमेज़ है ? (161) नबुव्वत के कमालात में से एक कमाल

सकता है और अगर इल्तिज़ाम न किया जाए तो नबी और ग़ैरे नबी में वजहे फ़र्क़ बयान करना लाज़िम है, और अगर तमाम उ़लूम मुराद हैं, इस त़रह़ **इस का एक फ़र्द भी ख़ारिज न रहे**(162) तो इस का **बुत़लान**(163) दलीले नक़्ली व अ़क़्ली से साबित है इन्तिहा। पस साबित हुवा कि ख़ुदा के वोह सब अक़्वाल इस की दलील से बात़िल हैं। मुसलमानो देखो ! कि इस बदगो ने फ़क़त़ मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही को गाली न दी बल्कि उन के रब ﷻ के कलामों को भी **बात़िल व मर्दूद कर दिया**(164)

मुसलमानो ! जिस की जुरअत यहां तक पहुंची कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्मे ग़ैब को पागलों और **जानवरों के इ़ल्म से मिला दे**(165) और ईमान व इस्लाम व इन्सानिय्यत से आंखें बन्द कर के साफ़ कह दे कि नबी और जानवर में क्या फ़र्क़ है, उस से क्या तअ़ज्जुब कि **ख़ुदा के कलामों को रद्द करे**(166) **बात़िल बताए**(167) **पसेपुश्त डाले**(168) **ज़ेरे पा मले**(169) बल्कि जो येह सब कुछ कलामुल्लाह के साथ कर चुका वोही रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ इस गाली पर जुरअत कर सकेगा ? मगर हां उस से **दरयाफ़्त करो**(170) कि आप की येह तक़रीर **ख़ुद आप और आप के असातिज़ा में जारी है या नहीं** ?(171) अगर नहीं तो क्यूं ? और अगर है तो क्या जवाब है ? हां इन बदगोयों से कहो ! क्या आप ह़ज़रात अपनी तक़रीर के त़ौर पर जो आप ने

(162) तमाम की तमाम बातें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस त़रह़ मा'लूम हों कि कोई एक चीज़ भी इन के इ़ल्म से बाहर न हो (163) ग़लत़ होना (164) ठुकरा दिया और झूटा क़रार दे दिया। (165) जानवरों के इ़ल्म के बराबर कहे या झुटला दे (166) ख़ुदा की बात का इन्कार करे। (167) झूटा ठहराए। (168) पीठ के पीछे फेंके। क़ाबिले तवज्जोह न समझे। (169) पाउं के नीचे रौंदे, कुचले। (170) पूछो। (171) या'नी येही बातें आप और आप के उस्तादों को कह सकते हैं ?

मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में जारी की, खुद अपने आप से इसे दरयाफ़्त की इजाज़त दे सकते हैं कि आप साहि़बों को **आ़लिम, फ़ाज़िल, मौलवी, मुल्ला, चुनीं, चुनां फुलां फुलां क्यूं कहा जाता है?**[172] और है़वानात व बहाइम मसलन कुत्ते सुव्वर को कोई इन अल्फ़ाज़ से **ता'बीर नहीं करता**[173] इन मुनासिब के **बाइ़स**[174] आप के **अतबाअ़ व अज़्नाब**[175] आप की ता'ज़ीम व तकरीम, तौक़ीर क्यूं करते? **दस्तो पा पर बोसा देते हैं**[176] और जानवरों मसलन उल्लू, गधे के साथ कोई येह बरताव नहीं बरतता इस की वजह क्या है? **कुल इ़ल्म**[177] तो **क़त़्अ़न**[178] आप साहि़बों को भी नहीं और बा'ज़ में आप की क्या तख़्सीस? ऐसा इ़ल्म तो उल्लू, गधे, कुत्ते, सुव्वर सब को ह़ासिल है तो चाहिये कि इन सब को आ़लिम व फ़ाज़िल व **चुनीं व चुनां कहा जाए**[179] फिर अगर आप इस का इल्तिज़ाम करें कि हां हम सब को उ़लमा कहेंगे तो....फिर इ़ल्म को आप के कमालात में क्यूं शुमार किया जाता है? जिस अम्र में मोमिन बल्कि इन्सान की भी खुसूसिय्यत न हो, गधे, कुत्ते, सुव्वर सब को ह़ासिल हो वोह आप के कमालात से क्यूं हुवा? और अगर इल्तिज़ाम न किया जाए तो आप ही के बयान से आप में और गधे, कुत्ते, सुव्वर में वजहे फ़र्क़ बयान करना ज़रूरी है। **फ़क़त़**

---

(172) इ़ज़्ज़त व इकराम के अल्क़ाबात वग़ैरा से क्यूं पुकारा जाता है? (173) या'नी जानवरों मसलन कुत्ते और सुव्वर वग़ैरा को कोई आ़लिम, फ़ाज़िल वग़ैरा क्यूं नहीं कहता? ह़ालांकि इन को कुछ बातों का इ़ल्म तो होता ही है। (174) मौलवी व आ़लिम वग़ैरा होने की वजह से। (175) शागिर्द और पैरूकार या'नी दुम छिले। (176) हाथ और पाउं चुमते हैं। (177) ग़ैब और ज़ाहिर की तमाम बातें। (178) यक़ीनन। (179) अच्छे अच्छे अल्क़ाबात से क्यूं पुकारा जाता है?

मुसलमानो ! यूं दरयाफ़्त करते ही بعونہٖ تعالی(180) **साफ़ खुल जाएगा**(181) कि इन बदगोयों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को कैसी सरीह़ शदीद गाली दी और इन के रब (عَزَّوَجَلَّ) के कुरआने मजीद को **जा बजा**(182) कैसा रद्दो बाति़ल कर दिया। मुसलमानो ! ख़ास इस बदगो और इस के साथियों से पूछो, इन पर खुद इन के इक़रार से कुरआने अ़ज़ीम की येह आयात चस्पां हुई या नहीं।

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۫ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ (پارہ ۹، اعراف ۱۷۹)

तर्जमा : और बेशक ज़रूर हम ने जहन्नम के लिये फैला रखे हैं बहुत से जिन्न और आदमी उन के वोह दिल हैं जिन से ह़क़ को नहीं समझते और वोह आंखें जिन से ह़क़ का रास्ता नहीं सूझते और वोह कान जिन से ह़क़ बात नहीं सुनते। वोह **चोपायों की त़रह़ हैं**(183) बल्कि इन से भी बढ़ कर बहके हुवे। वोही गुमराह वोही लोग ग़फ़्लत में पड़े हैं।"

और फ़रमाता है :

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۙ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْيَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۴۴﴾ (پارہ ۱۹ الفرقان ۴۳-۴۴)

---

(180) अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से। (181) साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा। (182) जगह जगह। (183) जानवरों की त़रह़ हैं।

तर्जमा : क्या भला देख तो, जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना खुदा बना लिया तो क्या तू उस का ज़िम्मा लेगा ? या तुझे गुमान है उन में बहुत कुछ सुनते या अ़क्ल रखते हैं सो वोह नहीं मगर जैसे चोपाए बल्कि वोह तो उन से भी बढ़ कर गुमराह हैं।

इन बदगोयों ने चोपायों का इ़ल्म तो अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इ़ल्म के बराबर माना। अब इन से पूछिये क्या तुम्हारा इ़ल्म अम्बिया या खुद हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया علیه والصلوٰة والثناء के बराबर है ? ज़ाहिरन इस का दा'वा न करेंगे और अगर कह भी दें कि जब चोपायों से बराबरी कर दी, **आप तो दो पाए हैं**[184] बराबरी मानते **क्या मुश्किल है ?**[185] तो यूं पूछिये तुम्हारे उस्तादों, पीरों, मुल्लाओं में कोई भी ऐसा गुज़रा जो तुम से इ़ल्म में ज़ियादा हो या सब एक बराबर हो ?

आख़िर **कहीं तो फ़र्क़ निकालेंगे**[186] तो इन के वोह उस्ताद वग़ैरा तो उन के इक़रार से इ़ल्म में चोपायों के बराबर हुवे और येह उन से इ़ल्म में कम हैं, **जब तो उन की शागिर्दी की,**[187] और जो **एक मुसावी से कम हो दूसरे से भी ज़रूर कम होगा तो येह ह़ज़रात खुद अपनी तक़रीर की रू से चोपायों से बढ़ कर गुमराह हुवे**[188] और इन आयतों के **मिस्दाक़ ठहरे**।[189]

---

(184) या'नी खुद येह गुस्ताख़ तो दो पाउं वाले हैं। (185) या'नी जब अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इ़ल्म में जानवरों के बराबर कह दिया तो खुद अपने बराबर कहना उन के लिये कोई बात मुश्किल बात नहीं। (186) किसी को तो अपने से ज़ियादा इ़ल्म वाला कहेंगे (187) इसी लिये तो इन गुस्ताख़ों ने उन की शागिर्दी इख़्तियार की। (188) या'नी दो मिक़्दारें अगर बराबर हों तो जो कोई इन दोनों में से एक से कम होगा वोह दूसरे से भी कम होगा। तो इन के उस्ताद तो इ़ल्म में जानवरों के बराबर हुवे और येह अपने उस्तादों से इ़ल्म में कम हैं तो गोया येह लोग जानवरों से इ़ल्म में कम हुवे और जब जानवरों से इ़ल्म में कम हुवे तो जानवरों से बढ़ कर गुमराह और बदतर हुवे। (189) या'नी येह कुरआनी आयतें पूरी त़रह़ इन की ह़ालत बता रही हैं। या इन का ह़ाल इन आयतों के मुत़ाबिक़ हो गया।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾(پارہ۲۹،القلم۳۳)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मार ऐसी होती है और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी, क्या अच्छा था अगर वोह जानते ।)

मुसलमानो ! येह ह़ालतें तो उन कलिमात की थीं जिन में अम्बियाए किराम व हुज़ूरे पुरनूर **सय्यिदुल अनाम**(190) عَلَيْهِ السَّلَام पर **हाथ साफ़ किये गए**(191) फिर उन इ़बारात का क्या पूछना जिन में **इसालतन बिल क़स्द**(192) रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ की इ़ज़्ज़त पर ह़म्ला किया गया हो ।

ख़ुदारा(193) इन्साफ़ ! क्या **जिस ने कहा**(194) **:** "मैं ने कब कहा है कि मैं **वुक़ूए़ किज़्बे बारी का**(195) क़ाइल नहीं हूं ?" या'नी वोह शख़्स इस का **क़ाइल**(196) है कि ख़ुदा **बिल फ़े'ल**(197) झूटा है झूट बोला, झूट बोलता है । **उस की निस्बत**(198) येह फ़तवा देने वाला कि "अगर्चे उस ने तावीले आयात में ख़त़ा की मगर ताहम उस को काफ़िर या बिदअ़ती या ज़ाल्ल कहना नहीं चाहिये" जिस ने कहा कि "उस को **कोई सख़्त कलिमा न कहना चाहिये**"(199)

---

(190) ज़माने भर के इमाम, आक़ा व मौला (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) । (191) बे इ़ज़्ज़ती व तौहीन की गई । (192) यक़ीनी तौर पर जान बूझ कर (193) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के वासित़े । (194) येह कोई दूसरा शख़्स है । (195) **अल्लाह** तआ़ला के (مَعَاذَ اللّٰه) झूट बोलने का, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को झूटा कहने वाला । (196) इक़रार करने वाला । या'नी कोई शख़्स कहता है **:** "मैं कब कहता हूं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने झूट नहीं बोला" या'नी मैं तो कहता हूं कि झूट बोला है । (197) अ़मली त़ौर पर । (198) उस के बारे में (उस ख़ुदा को झूटा कहने वाले के बारे में) माजरा येह है कि किसी शख़्स ने कहा **:** "मैं ने कब कहा है कि मैं वुक़ूए़ किज़्बे बारी का क़ाइल नहीं ?" उस शख़्स के बारे में रशीद अह़मद गंगोही से फ़तवा पूछा गया तो उस ने फ़तवा दिया कि अगर्चे उस शख़्स ने आयात के मत़लब को बयान करने में ग़लत़ी की है लेकिन उस को न तो काफ़िर कहना चाहिये न बिदअ़ती और न गुमराह बल्कि वोह **पक्का मोमिन** है । (199) कोई सख़्त बात, बुरा भला नहीं कहना चाहिये या'नी फ़तवा दिया कि जो शख़्स ख़ुदा को झूटा कहे उसे कुछ मत कहो न वोह काफ़िर है न गुनहगार बल्कि **पक्का मोमिन** है । مَعَاذَ اللّٰه

जिस ने कहा कि **"इस में तक्फ़ीर उ़लमाए सलफ़ की लाज़िम आती है**[200] **ह़नफ़ी, शाफ़ेई पर ता'न व तज़्लील नहीं कर सकता"**[201] या'नी खुदा को مَعَاذَاللّٰه झूटा कहना बहुत से उ़लमाए सलफ़ का भी मज़्हब था। येह इख़्तिलाफ़ ह़नफ़ी शाफ़ेई का सा है। किसी ने हाथ नाफ़ से ऊपर बांधे, किसी ने नीचे, ऐसा ही उसे भी समझो कि किसी ने खुदा को सच्चा कहा, किसी ने झूटा, लिहाज़ा **"ऐसे को तज़्लील व तफ़्सीक़ से मामून करना चाहिये"**[202] या'नी जो खुदा को झूटा कहे उसे गुमराह क्या मा'नी ? गुनहगार न कहो, क्या जिस ने येह सब तो उस मुकज़्ज़िब **खुदा की निस्बत बताया**[203] और येही खुद अपनी त़रफ़ से बावस्फ़ इस **बे मा'ना इक़रार**[204] कि "कुदरत अ़लल किज़्ब मअ़ इम्तिनाउ़ल वुकूअ़ **मस्अलए इत्तिफ़ाक़िया है"**[205] साफ़ सरीह़ कह दिया कि **वुक़ूए़ किज़्ब के मा'ना दुरुस्त हो गए**[206] या'नी येह बात ठीक हो गई कि खुदा से किज़्ब वाक़ेअ़ हुवा, क्या येह शख़्स मुसलमान रह सकता है ? क्या जो ऐसे को मुसलमान समझे खुद मुसलमान हो सकता है ?

मुसलमानो ! खुदारा इन्साफ़, **ईमान नाम काहे का था** ?[207] **तस्दीक़े इलाही का** ![208] तस्दीक़ का सरीह़ मुख़ालिफ़ क्या है ?

---

(200) या'नी अगर उसे काफ़िर कहें तो गुज़श्ता ज़माने के उ़लमाए किराम भी काफ़िर क़रार पाएंगे (गोया ब क़ौले गुस्ताख़ वोह सब भी खुदा को مَعَاذَاللّٰه झूटा कहते थे) अगर उस शख़्स को (जिस ने खुदा को झूटा कहा) काफ़िर कहते हैं तो इन उ़लमा को भी काफ़िर मानना पड़ेगा। (201) ह़नफ़ी येह नहीं कह सकता कि इमामे शाफ़ेई के मानने वाले गुमराह हैं। (202) या'नी ऐसे शख़्स को (जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को مَعَاذَاللّٰه झूटा माने) न तो गुमराह कहना चाहिये न गुनाहगार। (203) या'नी येह फ़तवा तो उस शख़्स के बारे में दिया जिस ने खुदा को झूटा कहा (कि उसे न तो गुमराह कहेंगे न गुनहगार)। (204) इस इक़रार के बा वुजूद जिस की कोई ह़ैसिय्यत नहीं। (205) (वोह गुस्ताख़ कहता है) कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) झूट बोल सकता है मगर बोलता नहीं फिर इस के साथ ही कहता है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने झूट बोला مَعَاذَاللّٰه (206) या'नी येह बात साबित हो गई कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने مَعَاذَاللّٰه झूट बोल दिया। (207) ईमान किस चीज़ का नाम था ? (208) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को सच्चा मानने का।

तक्ज़ीब(209) तक्ज़ीब के क्या मा'ना हैं ? किसी की त़रफ़ किज़्ब **मन्सूब करना**(210) जब सराह़तन ख़ुदा को काज़िब कह कर भी ईमान बाक़ी रहे तो ख़ुदा जाने ईमान किस जानवर का नाम है ? ख़ुदा जाने मजूस व हुनूद व नसारा व यहूद क्यूं काफ़िर हुवे ? इन में तो कोई साफ़ अपने मा'बूद को झूटा भी नहीं बताता। हां मा'बूदे बरह़क़ की बातों को यूं नहीं मानते कि इन्हें उस की बातें ही नहीं जानते या तस्लीम नहीं करते। ऐसा तो दुन्या के पर्दे पर कोई **काफ़िर सा काफ़िर भी शायद न निकले**(211) कि ख़ुदा को ख़ुदा मानता, उस के कलाम को उस का कलाम जानता और फिर बे धड़क कहता हो कि उस ने जूट कहा, उस से वुक़ूए़ किज़्ब की मा'ना दुरुस्त हो गए।

गरज़ कोई **ज़ीइन्साफ़**(212) शक नहीं कर सकता कि इन तमाम बदगोयों ने मुंह भर कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गालियां दी हैं, अब येही वक़्त इम्तिह़ाने इलाही है, वाहि़दे क़ह्हार जब्बार جَلَّ جَلَالُهٗ से डरो और वोह आयतें कि ऊपर गुज़रीं, पेशे नज़र रख कर अ़मल करो। **आप तुम्हारा ईमान**(213) तुम्हारे दिलों में तमाम बदगोयों से नफ़रत भर देगा। हरगिज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबिल तुम्हें उन की हि़मायत न करने देगा। तुम को उन से **घिन आएगी**(214) न कि उन की **पच करो**(215) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबिल उन की गालियों में मोहमल व **बेहूदा तावील घड़ो**।(216)

लिल्लाह इन्साफ़ ! अगर कोई शख़्स तुम्हारे मां-बाप, उस्ताद, पीर को गालियां दे और न सिर्फ़ ज़बानी बल्कि लिख

---

(209) झूटा मानना। (210) किसी को झूटा कहना। (211) पूरी दुन्या में शायद बड़े से बड़ा काफ़िर भी ऐसा न हो कि जो अपने ख़ुदा (मा'बूद) को झूटा कहता हो। (212) इन्साफ़ करने वाला। (213) तुम्हारा ईमान ख़ुद ब ख़ुद। (214) नफ़रत मह़सूस होगी। बुरा लगेगा। (215) बात बदलने की कोशिश करो। (216) बे मा'ना और बेकार गन्दी बहाना बाज़ी करो। यूं कि नहीं नहीं हमारे ह़ज़रत का येह मत़लब नहीं वोह मत़लब नहीं वग़ैरा वग़ैरा।

लिख कर छापे, शाएअ़ करे। क्या तुम उस का साथ दोगे या उस की बात बनाने को तावीलें घड़ोगे या उस के बकने से बे परवाही कर के उस से **बदस्तूर साफ़ रहोगे**?(217) नहीं नहीं ! अगर तुम में इन्सानी ग़ैरत, इन्सानी ह़मिय्यत, मां बाप की इ़ज़्ज़त ह़ुरमत अ़ज़मत मह़ब्बत का **नाम-निशान भी लगा रह गया**(218) है तो उस बदगो दुश्नामी की सूरत से नफ़रत करोगे, उस के साए से दूर भागोगे, उस का नाम सुन कर ग़ैज़ लाओगे जो उस के लिये **बनावटें गढ़े**(219) उस के भी दुश्मन हो जाओगे, फिर ख़ुदा के लिये मां बाप को एक पल्ले में रखो **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार व मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत पर ईमान को दूसरे पल्ले में, अगर मुसलमान हो तो मां-बाप की इ़ज़्ज़त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त से **कुछ निस्बत न मानोगे**(220) मां बाप की मह़ब्बत व ह़िमायत को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व ख़िदमत के आगे नाचीज़ जानोगे। तो वाजिब वाजिब वाजिब, लाख लाख वाजिब से बढ़ कर वाजिब कि इन बदगो से वोह नफ़रत व दूरी व ग़ैज़ व जुदाई हो कि मां-बाप के **दुश्नाम दहिन्दा**(221) के साथ इस का हज़ारवां ह़िस्सा न हो। येह हैं वोह लोग जिन के लिये उन सात ने'मतों की बशारत है। मुसलमानो ! **तुम्हारा येह ज़लील**(222)

---

(217) पहले की त़रह़ तअ़ल्लुक़ात रखोगे। (218) बराए नाम भी मां-बाप की मह़ब्बत दिल में हो तो। (219) झूटे बहाने बनाए। (220) या'नी येह तस्लीम करोगे कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की इ़ज़्ज़त के सामने हमारे मां-बाप की इ़ज़्ज़त की कोई ह़ैसिय्यत नहीं। (221) गाली बकने वाले। (222) यहां आ़शिक़े माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) आ़जिज़ी फ़रमाते हुवे अपने आप को ज़लील कहते हैं ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को वोह इ़ज़्ज़त दी कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को करोड़ों सुन्नियों का इमाम, चौदहवीं सदी का मुजद्दिद और अ़रबो अ़जम के उ़लमाए ह़क़्क़ का पेशवा बना दिया। वाह क्या ख़ूब ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई है कि करोड़ों सुन्नियों का ईमान बचाया और इन्हें अंग्रेज़ों के एजन्टों के दाम में आने से ख़बरदार किया جزاه الله عنا احسن الجزاء

ख़ैरख़्वाह[223] उम्मीद करता है कि **अल्लाह** वाहिदे क़हहार की आयात और इस **बयाने शाफ़ी वाज़ेहुल बय्यिनात**[224] के बा'द इस बारे में आप से ज़ियादा अ़र्ज़ की ह़ाजत न हो तुम्हारे ईमान ख़ुद ही इन बदगोयों से वोही पाक मुबारक अल्फ़ाज़ बोल उठेंगे जो तुम्हारे रब (عَزَّوَجَلَّ) ने क़ुरआने अ़ज़ीम में तुम्हारे सिखाने को क़ौमे इब्राहीम علیه الصّلٰوة والتسلیم से नक़्ल फ़रमाए।

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ (پاره۲۸،الممتحنۃ)

तर्जमा : बेशक तुम्हारे लिये इब्राहीम और उस के साथ वाले मुसलमानों में अच्छी **रीस**[225] है जब वोह अपनी क़ौम से बोले बेशक हम तुम से बेज़ार हैं और उन सब से जिन को **अल्लाह** के सिवा पूजते हो। **हम तुम्हारे मुन्किर हुवे**[226] और हम में और तुम में दुश्मनी और अ़दावत हमेशा को ज़ाहिर हो गई जब तक तुम एक **अल्लाह** पर ईमान न लाओ।

और फ़रमाता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۶﴾ (پاره۲۸،الممتحنۃ:۶)

तर्जमा : बेशक ज़रूर उन में तुम्हारे लिये उ़म्दा रीस थी। उस के लिये जो **अल्लाह** और क़ियामत के दिन की उम्मीद रखता हो और जो मुंह फेरे तो बेशक **अल्लाह** ही बे परवाह **सराहा गया है**।[227]

---

(223) भलाई चाहने वाला। (224) वाज़ेह़ दलीलों वाले शिफ़ा बख़्श बयान के बा'द। (225) नुमूना। (226) हम ने तुम्हारा इन्कार किया। (227) ता'रीफ़ किया गया है।

या'नी वोह जो तुम से येह फ़रमा रहा है कि जिस त़रह़ मेरे ख़लील और उन के साथ वालों ने किया कि मेरे लिये अपनी क़ौम के साफ़ दुश्मन हो गए और **तन्का तोड़ कर**(228) उन से जुदाई कर ली और कह दिया कि हम से तुम्हारा **कुछ अ़लाक़ा नहीं**(229) हम तुम से क़त़ई बेज़ार हैं तुम्हें ऐसा ही करना चाहिये येह तुम्हारे भले को तुम से फ़रमा रहा है, मानो तो तुम्हारी ख़ैर है न मानो तो **अल्लाह** को तुम्हारी कुछ परवाह नहीं जहां वोह मेरे दुश्मन हुवे उन के साथ तुम भी सही, मैं **तमाम जहान से ग़नी हूं** (230) और तमाम ख़ूबियों से मौसूफ़, جَــلَّ وَعَــلَا

येह कुरआने ह़कीम के अह़काम थे **अल्लाह** سبحانہ وتعالٰی जिस से भलाई चाहेगा उन पर अ़मल की तौफ़ीक़ देगा मगर यहां दो फ़िर्क़े हैं जिन को इन अह़काम में **उ़ज़्र**(231) पेश आते हैं अव्वल बे इल्म नादान, इन के उ़ज़्र दो क़िस्म के हैं :

उ़ज़्रे अव्वल : फ़ुलां(232) तो हमारा उस्ताद या बुज़ुर्ग या दोस्त है उसे **काफ़िर क्यूं कर मानें ?**(233) इस का जवाब तो कुरआने अ़ज़ीम की मुतअ़द्दिद आयात सुन चुके कि रब جَلَّ جَلَالُہٗ ने बार बार बता कर **सराह़तन**(234) फ़रमा दिया कि ग़ज़बे इलाही से बचना चाहते हो तो **इस बाब में**(235) अपने बाप की भी रिआ़यत न करो ।

---

(228) मुकम्मल तौ़र पर तअ़ल्लुक़ क़त़अ़ कर के। (येह जुम्ला मुह़ावरतन बोला जाता है) । (229) कोई तअ़ल्लुक़ नहीं । (230) तमाम जहानों से बेपरवाह हूं किसी का मोह़ताज नहीं । (231) रुकावटें (232) गुस्ताख़ (233) उसे काफ़िर कैसे मानें ? (234) साफ़ साफ़, खुल्लम खुल्ला । (235) इस बारे में ।

उ़ज़्रे दुवुम : "साहि़ब येह बदगो लोग भी तो मौलवी हैं, भला मौलवियों को क्यूं कर काफ़िर समझें या बुरा जानें ?"

इस का जवाब.........

तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اَفَرَءَیۡتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰـهَهٗ هَوٰىهُ وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلۡمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمۡعِهٖ وَ قَلۡبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنۡ يَّهۡدِيۡهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۲۳﴾ (پاره ۲۵، جاثیہ۲۳)

तर्जमा : भला देखो तो जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना खुदा बना लिया और **अल्लाह** ने **इल्म होते साते**(236) उसे गुमराह किया और उस के कान और दिल पर मुहर लगा दी और उस की आंखों पर पट्टी चढ़ा दी तो कौन उसे राह पर लाए **अल्लाह** के बा'द तो क्या तुम ध्यान नहीं करते ?

और फ़रमाता है :

مَثَلُ الَّذِيۡنَ حُمِّلُوا التَّوۡرٰىةَ ثُمَّ لَمۡ يَحۡمِلُوۡهَا كَمَثَلِ الۡحِمَارِ يَحۡمِلُ اَسۡفَارًا ؕ بِئۡسَ مَثَلُ الۡقَوۡمِ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۵﴾ (جمعہ۵)

तर्जमा : "वोह जिन पर तौरेत का बोझ रखा गया फिर उन्हों ने उसे न उठाया उन का ह़ाल उस गधे का सा है जिस पर किताबें लदी हों, क्या बुरी मिसाल है उन की जिन्हों ने खुदा की आयतें झुटलाईं और **अल्लाह** ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता ।"

और फ़रमाता है :

(236) इल्म होने के बा वुजूद ।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّیْطٰنُ فَكَانَ
مِنَ الْغٰوِیْنَ﴿۱۷۵﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَ
اتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَیْهِ یَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ یَلْهَثْ
ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ
یَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ مَثَلَاِ الْقَوْمُ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ
كَانُوْا یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِیْ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ فَاُو
لٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ﴿۱۷۸﴾ (پارہ۹،اعراف۱۷۵تا۱۷۷)

तर्जमा : "उन्हें पढ़ कर सुना उस की ख़बर जिसे हम ने अपनी आयतों का इ़ल्म दिया था वोह उन से साफ़ निकल गया तो शैत़ान उस के पीछे लगा कि गुमराह हो गया और हम चाहते तो इस इ़ल्म के बाइ़स उसे गिरे से **उठा लेते**(237) मगर वोह तो **ज़मीन पकड़ गया**(238) और अपनी ख़्वाहिश का पैरू हो गया तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तो उस पर बोझ लादे तो ज़बान निकाल कर हांपे और छोड़ दे तो हांपे येह उन का ह़ाल है जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं। तो हमारा येह इरशाद बयान करो शायद येह लोग सोचें। क्या बुरा ह़ाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं वोह अपनी ही जानों पर सितम ढाते थे। जिसे ख़ुदा हिदायत करे वोही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो वोही सरासर नुक़्सान में हैं।

या'नी हिदायत कुछ इ़ल्म पर नहीं, ख़ुदा के इख़्तियार में है। येह आयतें हैं और ह़दीसें जो गुमराह आ़लिमों की मज़म्मत में हैं इन का शुमार ही नहीं यहां तक कि एक ह़दीस में है।

दोज़ख़ के फ़िरिश्ते बुत परस्तों से पहले इन्हें पकड़ेंगे, येह कहेंगे क्या हमें बुत पूजने वालों से भी पहले लेते हो ? जवाब मिलेगा :

لَیسَ مَن یَعلَم کَمَن لّا یَعلَم(239)

(237) संभाल लेते। (238) अपनी बात पर अड़ गया। (239) जानने वाले और अन्जान बराबर नहीं।

भाइयो ! आ़लिम की इ़ज़्ज़त तो इस बिना पर थी कि वोह नबी का वारिस है, नबी का वारिस वोह जो हिदायत पर हो और जब गुमराही पर है तो नबी का वारिस हुवा या शैत़ान का ? उस वक़्त उस की ता'ज़ीम नबी की ता'ज़ीम होती। अब उस की ता'ज़ीम शैत़ान की ता'ज़ीम होगी। येह उस सूरत में है कि आ़लिम, कुफ़्र से **नीचे**(240) किसी गुमराही में हो जैसे बद मज़हबों के उ़लमा फिर उस को क्या पूछना जो **ख़ुद कुफ़्रे शदीद में हो**(241) उसे आ़लिमे दीन जानना ही कुफ़्र है न कि आ़लिमे दीन जान कर उस की ता'ज़ीम।

भाइयो ! इ़ल्म उस वक़्त नफ़्अ़ देता है कि दीन के साथ हो वरना पंडित या पादरी क्या अपने यहां के आ़लिम नहीं। इब्लीस कितना बड़ा आ़लिम था फिर क्या कोई मुसलमान उस की ता'ज़ीम करेगा ? उसे तो मुअ़ल्लिमुल मलकूत कहते हैं या'नी फ़िरिश्तों को इ़ल्म सिखाता था। जब से उस ने मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम से मुंह मोड़ा। हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का **नूर कि पेशानिये आदम** عَلَيْهِ السَّلَام **में रखा गया,**(242) उसे

---

(240) या'नी कम (241) या'नी जो ख़ुद पक्का काफ़िर हो उस के बारे में ता'ज़ीम का ख़याल कैसा ? (242) या'नी आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) की मुबारक पेशानी में हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मुबारक नूर को रखा गया था। येह ह़दीस त़बरानी ने **मोअ़जमे कबीर** और अबू नुऐ़म ने **ह़िल्या** में अनस (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) से रिवायत की नीज़ तफ़्सीरे कबीर में इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी जि. 455 ज़ेरे قوله تعالی تلک الرسل ....ان الملئکة امروا بالسجود لادم لاجل ان نور محمد رَسُول اللّٰہ علیه وسلم فی جبهة ادم तफ़्सीरे नैशापूरी जि. 3 स. 7 سجود الملئكة لادم انما كان لاجل نور محمد صلى الله عليه وسلم الذى فى جبهته दोनों इ़बारतों का ह़ासिल येह है कि फ़िरिश्तों का आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करना इस लिये था कि उन की पेशानी में नूरे मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) था।

सजदा न किया(243) उस वक़्त से **ला'नते अबदी**(244) का तौक़ उस के गले में पड़ा, देखो जब से उस के **शागिर्दाने रशीद**(245) उस के साथ क्या बरताव करते हैं, हमेशा उस पर ला'नत भेजते हैं। हर रमज़ान में महीना भर उसे ज़न्जीरों में जकड़ते हैं, क़ियामत के दिन खींच कर जहन्नम में धकेलेंगे। यहां से इल्म का जवाब भी वाज़ेह हो गया और **उस्ताज़ी** का भी।

भाइयो ! करोड़ अफ़्सोस है उस **इद्दिआ़ए मुसलमानी**(246) पर कि **अल्लाह** वाहिदे क़ह्हार और मुह़म्मद रसूलुल्लाह सय्यिदुल अबरार (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा उस्ताद की वुक़्अ़त हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर भाई या दोस्त, या दुन्या में किसी की मह़ब्बत हो।

ऐ रब ! हमें सच्चा ईमान दे सदक़ा अपने ह़बीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सच्ची रह़मत का, आमीन।

फ़िर्क़ए दुवुम

मुआ़निदीन(247) वो दुश्मनाने दीन कि ख़ुद इन्कारे **ज़रूरियाते दीन**(248) **रखते हैं**(249) और सरीह़ कुफ़्र कर के अपने ऊपर से नामे कुफ़्र को मिटाने को इस्लाम व क़ुरआन व ख़ुदा

---

(243) गुज़श्ता हाशिया (244) हमेशा हमेशा के लिये **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत से दूरी या'नी कभी भी उस पर रह़मते रब न होगी। (245) मलाइका। (होनहार शागिर्द) (246) मुसलमान होने का दा'वा। (247) दुश्मन। (248) वोह बातें जिन पर ईमान लाना मुसलमान होने के लिये ज़रूरी है अगर कोई इन्कार करे तो काफ़िर हो जाए मसलन **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को एक मानना, हर ऐ़ब से पाक मानना, तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नबी मानना, आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को आख़िरी नबी मानना, येह अ़क़ीदा कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को बा'ज़ इल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाया। (249) ख़ुद तो इन अ़क़ाइद से इन्कार करते हैं।

और रसूल व ईमान के साथ **तमस्खुर**(250) करते हैं और **बराहे इग़वा व तल्बीस**(251) व **शेवए इब्लीस**(252) वोह बातें बनाते हैं कि किसी त़रह़ **ज़रूरियाते दीन मानने की क़ैद उठ जाए।**(253) इस्लाम फ़क़त़ तोते की त़रह़ ज़बान से कलिमा रट लेने का नाम रह जाए, बस कलिमे का नाम लेता हो फिर चाहे ख़ुदा को झूटा कज़्ज़ाब कहे, चाहे रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को सड़ी सड़ी गालियां दे, इस्लाम किसी त़रह़ न जाए : بَلْ لَّعَنَہُمُ اللّٰہُ بِکُفْرِہِمْ فَقَلِیْلًا مَّا یُؤْمِنُوْنَ (پارہ ۱،آیت ۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि **अल्लाह** ने उन पर ला'नत फ़रमा दी उन के कुफ़्र के सबब तो उन में थोड़े ईमान लाते हैं

येह मुसलमानों के दुश्मन, इस्लाम के अ़दू, **अ़वाम को छिलने**(254) और ख़ुदाए वाह़िदे क़ह्हार का दीन बदलने के लिये चन्द शैत़ानी मक्र पेश करते हैं।

मक्रे अव्वल

इस्लाम नाम कलिमा गोई का है। ह़दीस में फ़रमाया : مَنْ قَالَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ دَخَلَ الْجَنَّۃَ **तर्जमा :** "जिस ने لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कह लिया जन्नत में जाएगा।" फिर किसी क़ौल या फ़े'ल की वजह से काफ़िर कैसे हो सकता है ? मुसलमानो ! ज़रा होशयार ख़बरदार,

---

(250) मज़ाक़। (251) गुमराह करने और शैत़ानी चालें चलने के लिये। (252) इब्लीस के त़रीक़े पर चलते हुवे। (253) ज़रूरियाते दीन को मानना ज़रूरी न रहे। या'नी अपनी मरज़ी से जिस शरई बात पर चाहा अ़मल कर लिया और जिसे चाहा छोड़ दिया। जिस नबी عَلَیْہِ السَّلَام की चाही तौहीन कर डाली (254) अ़वाम को धोका देने के लिये।

इस मक्रे मलऊ़न का ह़ासिल येह है(255) कि ज़बान से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कह लेना गोया खुदा का बेटा बन जाना है, आदमी का बेटा अगर उसे गालियां दे, जूतियां मारे, **कुछ करे उस के बेटे होने से नहीं निकल सकता**(256) यूंही जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कह लिया अब वोह चाहे खुदा (عَزَّوَجَلَّ) को झूटा कज़्ज़ाब कहे, चाहे रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को सड़ी सड़ी गालियां दे, उस का **इस्लाम** नहीं बदल सकता।

इस मक्र(257) का जवाब

इसी आयते करीमा اَلٓمّٓ اَحَسِبَ النَّاس में गुज़रा, क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि निरे इद्दिआ़ए इस्लाम पर छोड़ दिये जाएंगे और इम्तिह़ान न होगा ? इस्लाम अगर फ़क़त़ कलिमा गोई का नाम था तो वोह बेशक ह़ासिल थी फिर लोगों का घमन्ड क्यूं ग़लत़ था जिसे कुरआने अ़ज़ीम रद्द फ़रमा रहा है, नीज़ :

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا

وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِیْ قُلُوْبِكُمْ ۔ (پ٢٦،سورہ حجرات ١٤)

तर्जमा : येह **गंवार**(258) कहते हैं : हम ईमान लाए। तुम फ़रमा दो : ईमान तो तुम न लाए, हां यूं कहो कि हम **मुत़ीअ़ुल इस्लाम**(259) हुवे और ईमान अभी तुम्हारे दिलों में कहां दाख़िल हुवा ?

---

(255) इस चालबाज़ी और धोका देही का मत़लब येह है। (256) या'नी ख़्वाह कुछ भी करे, रहेगा उस का बेटा ही। (257) धोके। चालबाज़ियां। (258) जाहिल, देहाती। (259) इस्लामी हुकूमत के (महकूम) ताबेअ़ हो गए।

और फ़रमाता है :

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱﴾ (پارہ ۲۸، منافقون ۱)

तर्जमा : मुनाफ़िक़ीन जब तुम्हारे हुज़ूर होते हैं, कहते हैं : हम गवाही देते हैं कि बेशक हुज़ूर यक़ीनन ख़ुदा के रसूल हैं और **अल्लाह** ख़ूब जानता है कि बेशक तुम ज़रूर उस के रसूल हो और **अल्लाह** गवाही देता है कि बेशक येह मुनाफ़िक़ ज़रूर झूटे हैं।

देखो कैसी लम्बी चोड़ी कलिमा गोई, कैसी कैसी ताकीदों से मुअक्कद, कैसी कैसी **क़समों से मुअय्यद हरगिज़ मूजिबे इस्लाम न हुई**(260) और **अल्लाह** वाहिदे क़ह्हार ने इन के झूटे कज़्ज़ाब होने की गवाही दी तो مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ का येह **मत़लब गढ़ना**(261) सराह़तन क़ुरआने अ़ज़ीम का रद्द करना है। हां, जो कलिमा पढ़ता, अपने आप को मुसलमान कहता हो उसे मुसलमान जानेंगे जब तक उस से कोई कलिमा, कोई ह़रकत, कोई फ़े'ल **मनाफ़िये इस्लाम**(262) सादिर न हो, **बा'दे सुदूरे मनाफ़ी**(263) हरगिज़ कलिमा गोई काम न देगी।

---

(260) इन क़समों से इन का ईमान साबित न हुवा। (261) येह मत़लब अपनी त़रफ़ से बयान करना (कि कलिमा पढ़ लो फिर चाहे कुछ भी करो मुसलमान ही रहोगे)। (262) इस्लाम के ख़िलाफ़। (263) या'नी ईमान के ख़िलाफ़ कुछ कहने या करने के बा'द सिर्फ़ कलिमा पढ़ना फ़ाइदा न देगा बल्कि इस ईमान के मुख़ालिफ़ अ़क़ीदे से तौबा भी करनी होगी। अगर इस अ़क़ीदे से तौबा न करे और ज़बान से कलिमे की रट लगाए जाए फिर भी काफ़िर ही रहेगा। मसलन कोई शख़्स कहे कि مَعَاذَ اللّٰه ख़ुदा ज़ालिम है और उस के साथ कलिमा भी पढ़ता जाए तो **काफ़िर** ही रहेगा।

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

يَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوۡا ؕ وَلَقَدۡ قَالُوۡا كَلِمَةَ الۡكُفۡرِ وَكَفَرُوۡا بَعۡدَ اِسۡلَامِهِمۡ (پارہ۱۰، توبہ۷۴)

तर्जमा : खुदा की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने नबी की शान में गुस्ताख़ी न की और अलबत्ता बेशक वोह येह **कुफ़्र का बोल** बोले और मुसलमान हो कर काफ़िर हो गए।"

इब्ने जरीर व त़बरानी व अबुश्शैख़ व इब्ने मर्दविय्या अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं : रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) एक पेड़ के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे इरशाद फ़रमाया अ़न क़रीब एक शख़्स आएगा तुम्हें शैत़ान की आंखों से देखेगा वोह आए तो उस से बात न करना। कुछ देर न हुई थी कि एक **करन्जी**(264) आंखों वाला सामने से गुज़रा, रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने उसे बुला कर फ़रमाया : "तू और तेरे रफ़ीक़ किस बात पर मेरी शान में गुस्ताख़ी के लफ़्ज़ बोलते हैं ?" वोह गया और अपने रफ़ीक़ों को बुला लाया। सब ने आ कर क़समें खाईं कि हम ने कोई कलिमा हुज़ूर की शान में बे अदबी का न कहा, इस पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने येह आयत उतारी कि खुदा की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने गुस्ताख़ी न की और बेशक ज़रूर येह कुफ़्र का कलिमा बोले और तेरी शान में बे अदबी कर के इस्लाम के बा'द काफ़िर हो गए। देखो **अल्लाह** गवाही देता है कि नबी की शान में बेअदबी का लफ़्ज़, कलिमए कुफ़्र है और इस का कहने वाला अगर्चे लाख **मुसलमानी का मुद्दई**(265) करोड़ बार का कलिमा गो हो, काफ़िर हो जाता है......

(264) नीली आंखों वाला। (265) मुसलमान होने का दा'वेदार

और फ़रमाता है :

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ
وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۵﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ
بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ (پارہ۱۰التوبہ۶۵-۶۶)

तर्जमा : "और अगर तुम उन से पूछो तो बेशक ज़रूर कहेंगे कि हम तो यूंही **हंसी खेल में थे**(266) तुम फ़रमा दो क्या **अल्लाह** और उस की आयतों और उस के रसूल से ठठ्ठा करते थे ? बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके अपने ईमान के बा'द ।"

इब्ने अबी शैबा व इब्ने अबी जरीर व इब्ने अल मुन्ज़िर व इब्ने हातिमुश्शैख़ इमाम मुजाहिद **तलमीज़े ख़ास**(267) सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत फ़रमाते हैं :

انَّهُ قَالَ فِى قَوْلِهٖ تعالى "وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَ
نَلْعَبُ" ؕ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْمُنَافِقِيْنَ يُحَدِّ ثُنَا مُحَمَّدٌ اَنَّ نَاقَةَ فُلَانٍ
بِوَادِى كَذَا وَمَا يَدْرِيْهِ بِالْغَيْبِ۔

तर्जमा : किसी की ऊंटनी गुम हो गई, उस की तलाश थी, रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया ऊंटनी फ़ुलां जंगल में फ़ुलां जगह है इस पर एक मुनाफ़िक़ बोला : "मुहम्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) बताते हैं कि ऊंटनी फ़ुलां जगह है, मुहम्मद ग़ैब क्या जानें ?"

इस पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने येह आयते करीमा उतारी कि क्या **अल्लाह** व रसूल से **ठठ्ठा करते हो** ?(268) बहाने न बनाओ, तुम मुसलमान कहला कर इस **लफ़्ज़** के कहने से काफ़िर हो गए । (**देखो :** तफ़्सीरे इमाम इब्ने ज़रीर मत़बए़ मिस्र, जिल्द दुहुम सफ़्हा 105 व तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ जिल्द सिवुम सफ़्हा 254)

(266) ऐसे ही मज़ाक़ कर रहे थे । (267) ख़ास शागिर्द (268) मज़ाक़ उड़ाते हो ।

मुसलमानो ! देखो मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी करने से कि वोह ग़ैब क्या जानें ? कलिमा गोई काम न आई और **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) ने साफ़ फ़रमा दिया कि बहाने न बनाओ, तुम इस्लाम के बा'द काफ़िर हो गए। यहां से वोह ह़ज़रात भी सबक़ लें **जो रसूलुल्लाह के उ़लूमे ग़ैब से मुत़लक़न मुन्किर हैं**(269) देखो येह क़ौल मुनाफ़िक़ का है और इस के **क़ाइल**(270) को **अल्लाह** तआ़ला व क़ुरआन व रसूल से ठठ्ठा करने वाला बताया और साफ़ साफ़ काफ़िर मुर्तद ठहराया और क्यूं न हो ? ग़ैब की बात जाननी शाने नबुव्वत है जैसा कि इमाम हुज्जतुल इस्लाम मुह़म्मद ग़ज़ाली अह़मद क़स्त़लानी मौलाना अ़ली क़ारी व अ़ल्लामा मुह़म्मद ज़ुरक़ानी **वग़ैरहुम अकाबिर**(271) ने तसरीह़ फ़रमाई जिस की तफ़्सील रसाइले इल्मे ग़ैब में بفضله تعالى **बरवजहे आ'ला मज़्कूर हुई**(272) फिर इस की सख़्त **शामत**(273) कमाले **ज़लालत**(274) का क्या पूछना ? जो ग़ैब की एक बात भी, ख़ुदा के बताए से भी, नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मा'लूम होना **मुह़ाल व नामुमकिन बताता है**(275) इस के नज़्दीक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से सब चीज़े ग़ाइब हैं और **अल्लाह** को इतनी क़ुदरत नहीं कि किसी को एक ग़ैब का इल्म दे सके, **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) शैत़ान के धोकों से पनाह दे। **आमीन**

---

(269) कहते हैं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने आक़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को बिल्कुल भी इल्मे ग़ैब नहीं दिया। (270) कहने वाला। (271) और इन के इलावा दीगर बुज़ुर्गों ने वाज़ेह़ त़ौर पर इरशाद फ़रमाया। (272) बेहतरीन त़रीक़े से लिखी गई है। (273) बद बख़्ती। बद नसीबी। (274) गुमराही। (275) या'नी कहता है कि अगर ख़ुदा भी बताए तब भी नबी عَلَيْهِ السَّلَام को मा'लूम नहीं हो सकता (**استغفر الله** कैसा बुरा अ़क़ीदा है !)

हां **बे खुदा के बताए**[(276)] किसी को ज़र्रा भर का इ़ल्म मानना, ज़रूर कुफ्र है और **जमीअ़ मा'लूमाते इलाहिय्या को इ़ल्मे मख़्लूक़ का मुह़ीत़ होना भी बात़िल**[(277)] और अकसर उ़लमा के ख़िलाफ़ है।

लेकिन रोज़े अज़ल से रोज़े आख़िर तक का مَاكَانَ وَمَا يَكُوْنُ **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) के मा'लूमात से वोह निस्बत भी नहीं रखता जा एक ज़र्रे के लाखवें, करोड़वें हि़स्से बराबर, **तरी को, करोड़हा करोड़ समन्दरों से हो**[(278)] बल्कि येह खुद उ़लूमे मुह़म्मदिय्या علىٰ صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام का **एक छोटा सा टुकड़ा है**[(279)] इन तमाम उमूर की तफ़्सील "**अद्दौलतुल मक्किय्या**" वग़ैरहा में है।

ख़ैर तो **येह जुमला मो'तरिज़ा था**[(280)] और اِن شآءَ اللّٰهُ العظيم बहुत मुफ़ीद था, अब बह़्से साबिक़ की त़रफ़ **औ़द कीजिये**[(281)]

(**276**) खुदा के बताए बिग़ैर (**277**) और येह अ़क़ीदा रखना भी ग़लत़ है कि किसी मख़्लूक़ का इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म के बराबर हैं या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने किसी को अपने सारे उ़लूम मुकम्मल त़ौर पर अ़त़ा फ़रमा दिये येह अ़क़ीदा ग़लत़ है और अकसर उ़लमाए किराम इस अ़क़ीदे को ग़लत़ फ़रमाते हैं। हां येह दुरुस्त है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अपने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने ला मह़दूद इ़ल्म में से "**कुछ इ़ल्म**" अ़त़ा फ़रमाता है लेकिन येह "**कुछ इ़ल्म**" दीगर मख़्लूक़ के इ़ल्म से बहुत ज़ियादा होता है। और हमारे आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को **अल्लाह** तआ़ला ने दुन्या के पहले दिन से ले कर इस के आख़िरी दिन तक का तमाम इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया और इस के इ़लावा भी बहुत सा इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया जिस की तफ़्सील, लेने वाला जाने या देने वाला, हां इतना ज़रूर है कि आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का येह इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला के ला मह़दूद इ़ल्म के सामने गोया ऐसा ही है जैसे करोड़ों समन्दरों के सामने एक क़त़रे का छोटे से छोटा हि़स्सा और दीगर मख़्लूक़ात का इ़ल्म आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म के सामने ऐसा है जैसे गोया समन्दरों के सामने क़त़रा। (**278**) या'नी इस दुन्या के पहले दिन से ले कर आख़िरी दिन तक जो कुछ हुवा या होने वाला है इस का इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म के सामने वोह ह़ैसिय्यत भी नहीं रखता जो क़त़रे को करोड़ो समन्दरों से है। (**279**) या'नी इस दुन्या के रोज़े अव्वल से आख़िर दिन तक जो कुछ हुवा या होने वाला है इस का इ़ल्म खुद आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के उ़लूम का एक छोटा सा हि़स्सा है। (**280**) येह तो ज़िमनी त़ौर पर एक बात थी जो अस्ल मौज़ूअ़ से अ़लाह़िदा थी (कि अस्ल मौज़ूअ़ तो गुस्ताख़ों की गुस्ताख़ाना इ़बारतें हैं) (**281**) या'नी जो बह़्स हम कर चुके हैं इसी की त़रफ़ दोबारा तवज्जोह फ़रमाएं।

मक्रे दुवुम

इस फ़िर्क़ए बातिला का मक्रे दुवुम येह है कि इमामे आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का मज़्हब है कि لَا نُكَفِّرُ اَحَدًا مِنْ اَهْلِ الْقِبْلَةِ
तर्जमा : हम अहले क़िब्ला में से किसी को काफ़िर नहीं कहते और हदीस में है जो हमारी नमाज़ पढ़े और हमारे क़िब्ले को मुंह करे और हमारा ज़बीहा खाए, वोह मुसलमान है।

मुसलमानो ! इस मक्रे ख़बीस में इन लोगों ने निरी कलिमा गोई से अ़दूल कर के **सिर्फ़ क़िब्ला रूई का नाम ईमान रख दिया**(282) या'नी जो क़िब्ला रू हो कर नमाज़ पढ़ ले, मुसलमान है अगर्चे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को झूटा कहे, मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को गालियां दे, किसी सूरत किसी त़रह़ ईमान नहीं टलता।

चूं वुज़ूए मुह़कमे बीबी तमीज़(283)

अव्वलन इस मक्र का जवाब

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ
وَالنَّبِيّٖنَ۔ (پارہ۲،البقرۃ ۱۷۷)

तर्जमा : अस्ल नेकी येह नहीं कि अपना मुंह पूरब (मशरिक़) पश्चिम (मग़रिब) की त़रफ़ करो बल्कि अस्ल नेकी येह है कि आदमी ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों और कुरआन और तमाम अम्बिया पर।

---

(282) इन लोगों ने सिर्फ़ कलिमा पढ़ने और मुसलमान कहलाने से बात बदल कर सिर्फ़ क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करने का नाम ईमान रख दिया। (283) जिस त़रह़ कि एक जाहिल औ़रत येह नहीं समझती कि रीह़ वग़ैरा ख़ारिज होने से वुज़ू कैसे टूट सकता है ? इसी त़रह़ येह गुस्ताख़ नहीं समझते कि कुफ़्रिय्या कलिमे से ईमान कैसे जा सकता है।

देखो साफ़ फ़रमा दिया कि ज़रूरियाते दीन पर ईमान लाना ही अस्ल कार है बिग़ैर इस के नमाज़ में क़िब्ला को मुंह करना कोई चीज़ नहीं,

और फ़रमाता है :

وَمَامَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۵۴﴾ (التوبۃ۵۴،پارہ۱۰ ع ۱۳)

तर्जमा : और वोह जो ख़र्च करते हैं उस का क़बूल होना बन्द न हुवा मगर इस लिये कि उन्हों ने अल्लाह व रसूल के साथ कुफ़्र किया और **नमाज़ को नहीं आते मगर जी हारे**(284) और ख़र्च नहीं करते मगर बुरे दिल से।

देखो इन का नमाज़ पढ़ना बयान किया और फिर इन्हें काफ़िर फ़रमाया : क्या वोह क़िब्ला को नमाज़ नहीं पढ़ते थे ? फ़क़त क़िब्ला कैसा ? क़िब्लए दिलो जां, का'बए दीनो ईमान, सरवरे आ़लमिय्यान (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पीछे जानिबे क़िब्ला नमाज़ पढ़ते थे,

और फ़रमाता है :

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَاِنْ نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِىْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا اَئِمَّةَ الْكُفْرِۙ اِنَّهُمْ لَاۤ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴿۱۲﴾ (پارہ ۱۰،التوبۃ۸۴)

तर्जमा : फिर अगर वोह तौबा करें और नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें तो वोह तुम्हारे दीनी भाई हैं और हम पते की बात (आयतें) साफ़ बयान करते हैं इल्म वालों के लिये और अगर क़ौलो क़रार कर के फिर अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर ता'न करें तो कुफ़्र के पेशवाओं से लड़ो, बेशक उन की क़समें कुछ नहीं शायद बाज़ आए।

(284) नमाज़ पढ़ना तो नहीं चाहते मगर लोगों को दिखाने के लिये पढ़ते हैं।

देखो **नमाज़-ज़कात** वाले अगर दीन पर ता'ना करें तो उन्हें कुफ़्र का पेश्वा, **काफ़िरों का सरग़ना**(285) फ़रमाया। क्या ख़ुदा और रसूल की शान में वोह गुस्ताख़ियां दीन पर ता'न नहीं, इस का बयान भी सुनिये :

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ ۙ وَلَٰكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾ (پارہ ۵، النسآء ۴۶)

तर्जमा : कुछ यहूदी बात को उस की जगह से बदलते हैं और कहते हैं हम ने सुना और न माना और सुनिये आप सुनाए न जाएं और राइना कहते हैं ज़बान फेर कर और दीन में ता'ना करने को और अगर वोह कहते हम ने सुना और माना और सुनिये और मोहलत दीजिये तो उन के लिये बेहतर और बहुत ठीक होता लेकिन उन के कुफ़्र के सबब **अल्लाह** ने उन पर ला'नत की है तो ईमान नहीं लाते मगर कम।

कुछ यहूदी जब दरबारे नबुव्वत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में हाज़िर होते और हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से कुछ अ़र्ज़ करना चाहते तो यूं कहते : "आप सुनाए न जाएं !" जिस से ज़ाहिर तो दुआ़ होती या'नी हुज़ूर को कोई, नागवार बात न सुनाए और दिल में बद दुआ़ का इरादा करते कि सुनाई न दे और जब हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कुछ इरशाद फ़रमाते और येह बात समझ लेने के लिये मोहलत चाहते तो **राइना** कहते जिस का एक **पहलूए ज़ाहिर**(286) येह कि

(285) काफ़िरों के सरदार। (286) ज़ाहिरी मा'ना।

हमारी रिआ़यत फ़रमाएं[287] और **मुरादे ख़फ़ी**[288] रखते, या'नी **रऊ़नत वाला**[289] और बा'ज़ ज़बान दबा कर राईना कहते या'नी हमारा चरवाहा।

जब **पहलूदार बात**[290] दीन में ता'ना हुई, तो सरीह़ व साफ़ कितना सख़्त ता'ना होगी बल्कि इन्साफ़ कीजिये तो इन बातों का सरीह़ भी उन कलिमात की **शनाअ़त**[291] को नहीं पहुंचता। **बहरा होने की दुआ़ या रऊ़नत या बकरियां चराने की निस्बत को उन अल्फ़ाज़ से क्या निस्बत कि शैत़ान से इल्म में कमतर या पागलों चौपायों से इल्म में हमसर ?**[292] और ख़ुदा की निस्बत वोह कि झूटा है, झूट बोलता है जो उसे झूटा बताए मुसलमान सुन्नी सालेह़ है وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی

सानियन : इस **वहमे शनीअ़**[293] को मज़हबे सय्यिदुना इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) बताना ह़ज़रते इमाम पर **सख़्त इफ़्तिरा**[294] व **इतहाम**[295] जब कि इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) अपने अ़क़ाइदे करीमा की **किताबे मुत़ह्हर**[296] फ़िक़्हे अक्बर में फ़रमाते हैं :

صِفَاتُہٗ تعالٰی فِی الْاَزَلِ غَیْرُ مُحْدَثَۃٍ وَلَا مَخْلُوْقَۃٍ فَمَنْ قَالَ اِنَّھَا مَخْلُوْقَۃ اَوْمُحْدَثَۃ اَوْوَقَفَ فِیْہَا اَوْشَکَّ فِیْہَا فَھُوَ کَافِرٌ بِاللّٰہِ تَعَالٰی۔

---

(287) येह बात दोबारा इरशाद फ़रमा दें ताकि हम बात को पूरी त़रह़ समझ लें। (288) ख़ुफ़िया इरादा (289) तकब्बुर करने वाला। (290) वोह बात जिस के कई मा'ना बनते हों कुछ वाज़ेह़ हों कुछ मख़्फ़ी (291) बुराई (292) या'नी उन मुनाफ़िक़ों की गुस्ताख़ियां (ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बहरा होने की दुआ़ करना या तकब्बुर वाला कहना या बकरियां चराने वाला कहना) अगर्चे कुफ़्र है लेकिन येह अल्फ़ाज़ उन गुस्ताख़ों के गुस्ताख़ाना कलिमात से बहुत हल्के हैं जिन्हों ने आक़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को इल्म में शैत़ान से भी कम बताया और आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को इल्म में مَعَاذَ اللّٰہ जानवरों के बराबर ठहरा दिया। (293) इन्तिहाई बुरे ख़याल। (294) झूट। (295) तोहमत। झूटा इल्ज़ाम। (296) पाक किताब।

तर्जमा : अल्लाह तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) की सिफ़तें **क़दीम हैं**(297) न तो पैदा हैं न किसी की बनाई हुई तो जो इन्हें **मख़्लूक़**(298) या **हादिस**(299) कहे या इस बाब में **तवक्कुफ़**(300) करे या शक लाए वोह काफ़िर है और ख़ुदा का मुन्किर। नीज़ इमामे हुमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) किताबुल वसिय्या में फ़रमाते हैं :

مَنْ قَالَ بِاَنَّ کَلَامَ اللّٰہِ تعالیٰ مَخْلُوْق فَھُوَ کَافِربِاللّٰہِ العظیم۔

तर्जमा : "जो शख़्स कलामुल्लाह को मख़्लूक़ कहे उस ने अ़ज़्मत वाले ख़ुदा के साथ कुफ़्र किया।"

शर्हे फ़िक़हे अक्बर में है :

قَالَ فَخرُ الْاِسْلَام قَدْ صَحَّ عَنْ اَبِی یُوسُفَ اَنَّہٗ قَال نَاظَرْتُ اَبَا حَنِیفَۃَ فِی مَسئَلَۃِ خَلقِ القُراٰن فَا تَّفَقَ رَأیِی ورَأیُہٗ عَلٰی اَنَّ مَنْ قَالَ بِخَلقِ القُراٰنِ فَھو کَافِروصَحَّ ھٰذا الْقَوْلُ اَیْضَاعَنْ مُّحمدٍ رحمہ اللّٰہ تعالٰی۔

तर्जमा : "इमाम फ़ख़रुल इस्लाम (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़रमाते हैं : इमाम यूसुफ़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) से सिह्हत के साथ साबित है कि इन्हों ने फ़रमाया : मैं ने इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से मस्अलए ख़ल्क़े क़ुरआन में **मुनाज़रा किया**(301) मेरी और उन की राए इस पर मुत्तफ़िक़ हुई कि जो क़ुरआने मजीद को मख़्लूक़ कहे वोह काफ़िर है और येह क़ौल इमाम मुह़म्मद (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) से भी **ब सिह्हते सुबूत को पहुंचा**।"(302)

---

(297) हमेशा से है। (298) जिसे किसी ने बनाया हो। (299) जो हमेशा से न हो बल्कि बा'द में बनाया जाए, मख़्लूक़। (300) सोच बिचार (न इन्कार न इक़रार)। **फ़ाइदा :** सच्चा होना **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की सिफ़त है तो जो इस का इन्कार करे या'नी इसे झूटा माने वोह काफ़िर है। (301) आपस में दलाइल के साथ बात चीत की, कि क़ुरआने पाक मख़्लूक़ है या नहीं ? (302) और येही बात इमाम मुह़म्मद (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) से भी साबित है या'नी आप ने भी येही फ़रमाया

या'नी हमारे **अइम्मए सलासा**(304) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का **इजमाअ़**(305) व इत्तिफ़ाक़ है कि कुरआने अ़ज़ीम को मख़्लूक़ कहने वाला काफ़िर है। क्या **मो'तज़िला व करामिय्या व रवाफ़िज़**(306) कि कुरआन को मख़्लूक़ कहते हैं उस क़िब्ले की त़रफ़ नमाज़ नहीं पढ़ते, **नफ़्से मस्अला का जुज़इय्या लीजिये**(307) इमाम मज़हबे ह़नफ़ी सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) "**किताबुल ख़िराज**" में फ़रमाते हैं :

اَیُّمَا رَجُل مُسْلِم سَبَّ رَسُولَ اللّٰہ (ﷺ) اَوْکَذَّ بَہٗ اَوْعَابَہٗ اَوْ تَنَقَّصَہٗ

فَقَدْ کَفَرَ بِاللّٰہِ تَعَالٰی بَانَتْ مِنْہُ اِمْرَاَتُہٗ ۔

तर्जमा : "जो शख़्स मुसलमान हो कर रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को **दुश्नाम**(308) दे या हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ झूट की निस्बत करे या हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को किसी त़रह़ का ऐ़ब लगाए या किसी वजह से हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान घटाए वोह यक़ीनन काफ़िर और ख़ुदा का मुन्किर हो गया और उस की **जोरू**(309) उस के निकाह़ से निकल गई।"

देखो कैसी साफ़ तसरीह़ है कि हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की **तन्क़ीसे शान**(310) करने से मुसलमान काफ़िर हो जाता है, उस की जोरू निकाह़ से निकल जाती है। क्या मुसलमान अहले क़िब्ला नहीं होता या अहले का'बा नहीं होता ? मगर मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी के साथ क़िब्ला क़बूल न कलिमा मक़्बूल, والعیاذ باللّٰہ رب العالمین

---

(304) इमामे आ'ज़म व इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (305) उम्मत के बड़े बड़े इमामों का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला है (306) येह तीनों गुमराह फ़िर्क़े हैं जो कुरआन को मख़्लूक़ मानते हैं। (307) जिस मस्अले में हम बह़स कर रहे हैं (या'नी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की गुस्ताख़ी करने वाला चाहे क़िब्ला की त़रफ़ नमाज़ पढ़े, काफ़िर है) इस मस्अले का उसूल देखिये। (308) गाली। ऐ़ब लगाना। (309) बीवी। (310) शान में कमी करने।

सालिसन(311) : अस्ल बात येह है कि **इस्तिलाहे अइम्मा**(312) में अहले क़िब्ला वोह है कि तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान रखता हो, इन में से एक बात का भी मुन्किर हो तो क़त्अ़न इजमाअ़न काफ़िर मुर्तद है ऐसा कि जो इसे काफ़िर न कहे खुद काफ़िर है। शिफ़ा शरीफ़ व बज़्ज़ाज़िय्या व दुर्रर व गुरर व फ़तावा ख़ैरिय्या वग़ैरहा में है :

اَجْمَعَ الْمُسْلِمُوْنَ اِنْ شَاتِمَهٗ (ﷺ) كَافِرٌ وَمَنْ شَكَّ فِي عَذَابِهٖ وكُفْرِهٖ كَفَرَ۔

तर्जमा : "तमाम मुसलमानों का इजमाअ़ है कि जो हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शाने पाक में गुस्ताख़ी करे वोह काफ़िर है और जो इस के **मुअ़ज़्ज़ब**(313) या काफ़िर होने में शक करे वोह भी काफ़िर है।" मजमउ़ल अन्हुर व दुर्रे मुख़्तार में है :

وَاللَّفْظُ لَهٗ۔ اَلْكَافِرُ بِسَبِّ نَبِيٍّ مِنَ الْاَنْبِيَاءِ لَاتُقْبَلُ تَوْبَتُهٗ مُطْلَقًا مَنْ شَكَّ فِيْ عَذَابِهٖ وَكُفْرِهٖ كَفَرَ۔

तर्जमा : "जो किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी के सबब काफ़िर हुवा उस की तौबा किसी त़रह़ क़बूल नहीं और जो उस के अ़ज़ाब या कुफ़्र में शक करे खुद काफ़िर है।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह **नफ़्से मस्अला**(314) का वोह **गिरां बहा जुज़इय्या**(315) है जिस में **इन बदगोयों के कुफ़्र पर इजमाए़ तमाम उम्मत की तसरीह़ है**(316) और येह भी कि जो इन्हें काफ़िर न जाने खुद काफ़िर है।

---

(311) तीसरी बात (312) अइम्मा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की मख़्सूस, फ़न्नी बोलचाल (313) अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ होने में। (314) ज़ेरे नज़र सुवाल। (315) क़ीमती उसूल। क़ीमती इबारत। (316) वज़ाहत से लिखा है कि गुस्ताख़े रसूल का काफ़िर होना तमाम उम्मत का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला है।

शर्हे फ़िक़्हे अक्बर में है :

فِی الْمَوَاقِفِ لَا یُکَفَّرُ اَهلُ الْقِبْلَةِ اِلَّا فِیمَا فِیهِ اِنْکَارُ مَا عُلِمَ مَجِیئُهُ بِالضَّرُورَةِ اَوِالْمُجمَع عَلَیهِ کَاِسْتِحَلَالِ الْمُحَرَّمَاتِ اه وَلَا یَخفٰی اَنَّ الْمُرَادَ بِقَولِ عُلَمَائِنَالَا یَجُوزُتَکْفِیرُ اَہلِ الْقِبْلَةِ بِذَنْبٍ لَیسَ مُجَرَّدَ التَّوَجُّهِ اِلَی الْقِبْلَةِ فَاِنَّ الْغُلَاةَ مِنَ الرَّوَافِضِ الَّذِینَ یَدَّعُونَ اَنَّ جِبرِیلَ عَلَیهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ غَلَطَ فِی الْوَحیِ فَاِنَّ اللّٰهَ تعالٰی اَرسَلَهُ اِلٰی عَلِیٍّ رضی اللّٰه تعالٰی عنه وَ بَعْضُهُمْ قَالُوا اِنَّهُ اِلٰهٌ وَاِنْ صَلُّوْااِلَی الْقِبْلَةِ لَیسُوا بِمُؤْمِنِینَ وَهٰذَاهُوَالْمُرَادُ بِقَولِهٖ (ﷺ) مَنْ صَلَّ صَلٰوتَنَا وَاسْتَقْبَلَ قِبْلَتَنَا وَاَکَلَ ذَبِیحَتَنَا فَذٰلِکَ مُسْلِمٌ اه مختصراً

तर्जमा : “या’नी मुवाक़िफ़ में है कि **अहले क़िब्ला**(317) को काफ़िर न कहा जावेगा मगर जब ज़रूरियाते दीन या **इजमाई बातों**(318) से किसी बात का इन्कार करें जैसे ह़राम को ह़लाल जानना और मख़्फ़ी नहीं कि हमारे उ़लमा जो फ़रमाते हैं कि किसी गुनाह के बाइस अहले क़िब्ला की तक्फ़ीर, **रवा नहीं**(319) इस से निरा क़िब्ला को मुंह करना मुराद नहीं कि **ग़ाली राफ़िज़ी**(320) जो **बकते हैं**(321) कि जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام को वह़ी में धोका हुवा। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم की त़रफ़ भेजा था और बा’ज़ तो मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم को ख़ुदा

---

(317) क़िब्ला की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ने वाले (318) वोह बातें जिन्हें सारी उम्मत तस्लीम करती है। (319) किसी गुनाह की वजह से अहले क़िब्ला को काफ़िर कहना दुरुस्त नहीं। (320) राफ़िज़ियों का एक फ़िर्क़ा जो अपनी बद मज़हबी में ह़द से बढ़ा हुवा है और कुफ़्रियात बकता है। (321) बकवास करते हैं।

कहते हैं येह लोग अगर्चे क़िब्ला की त़रफ़ नमाज़ पढ़ें, मुसलमान नहीं और इस ह़दीस की भी येही मुराद है जिस में फ़रमाया कि जो हमारी सी नमाज़ पढ़े और हमारे क़िब्ले को मुंह करे और हमारा ज़बीह़ा खाए वोह मुसलमान है।" या'नी जब कि तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान रखता हो और कोई बात मनाफ़िये ईमान न करे....., इसी में है :

اِعْلَمْ اَنَّ الْمُرَادَ بِاَهْلِ الْقِبْلَةِ الَّذِيْنَ اتَّفَقُوْا عَلٰى مَاهُوَ مِنْ ضَرُوْرِيَاتِ الدِّيْنِ كَحُدُوْثِ الْعَالَمِ وَحَشْرِ الْاَ جْسَادِ وَعِلْمِ اللّٰهِ تعالٰی بِالْكُلِّيَّاتِ وَالْجُزْئِيَّاتِ وَمَا اَشْبَهَ ذٰلِكَ مِنَ الْمَسَائِلِ الْمُهِمَّاتِ فَمَنْ وَاظَبَ طُوْلَ عُمْرِهٖ عَلَى الطَّاعَاتِ وَالْعِبَادَاتِ مَعَ اِعْتِقَادِ قِدَمِ الْعَالَمِ اَوْنَفْيِ الْحَشْرِ اَوْنَفْيِ عِلْمِهٖ سُبْحٰنَهٗ بِالْجُزْئِيَّاتِ لَايَكُوْنُ مِنْ اَهْلِ الْقِبْلَةِ وَاَنَّ الْمُرَادَ بِعَدَمِ تَكْفِيْرِ اَحَدٍ مِنْ اَهْلِ الْقِبْلَةِ عِنْدَ اَهْلِ السُّنَّةِ اَنَّهٗ لَايُكَفَّرُ مَالَمْ يُوْجَدْ شَیْءٌ مِنْ اَمَارَاتِ الْكُفْرِ وَعَلَامَاتِهٖ وَلَمْ يَصْدُرْ عَنْهُ شَیْءٌ مِنْ مُوْجِبَاتِهٖ۔

तर्जमा : "या'नी जान लो कि अहले क़िब्ला से मुराद वोह लोग हैं जो तमाम ज़रूरियाते **दीन में मुवाफ़िक़ हैं**(322) जैसे **आ़लम का ह़ादिस होना**(323) **अजसाम का ह़श्र होना**(324) **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) का इल्म तमाम कुल्लियात व जुज़्इय्यात को **मुह़ीत़ होना**(325) और जो **मुहिम** ★ मस्अले इन की मानिन्द हैं, तो जो तमाम उ़म्र त़ाअ़तों और इबादतों में रहे उस के साथ येह

---

(322) तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान रखते हैं। (323) येह ईमान रखना कि दुन्या हमेशा से नहीं है बल्कि इसे **अल्लाह** तआ़ला ने बा'द में पैदा फ़रमाया। (324) क़ियामत में जिस्म का दोबारा ज़िन्दा होना। (325) येह अ़क़ीदा रखना कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को हर बड़ी और छोटी बात का तफ़्सीलन इल्म है। ★ अहम

ए'तिक़ाद रखता हो कि **आ़लम क़दीम**[326] है या ह़श्र न होगा या **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) जुज़्इय्यात को नहीं जानता वोह अहले क़िब्ला से नहीं और अहले सुन्नत के नज़्दीक अहले क़िब्ला में किसी को काफ़िर न कहने से येह मुराद है कि उसे काफ़िर न कहेंगे जब तक उस में कुफ़्र की कोई अ़लामत व निशानी न पाई जाए और कोई बात मूजिबे कुफ़्र उस से सादिर न हो।"

इमामे अजल सय्यिदिल अ़ज़ीज़ बिन मुह़म्मद बुख़ारी ह़नफ़ी (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) तह़क़ीक़े शर्ह़े उसूले हुसामी में फ़रमाते हैं :

اِنْ غَلَافِيْهِ (اَىْ فِىْ هَوَاهُ) حَتّٰى وَجَبَ اِكْفَارُهٗ بِهٖ لَا يُعْتَبَرُ خِلَافُهٗ وَوِفَاقُهٗ اَيْضًا لِعَدَمِ دُخُوْلِهٖ فِىْ مُسَمّٰى الْاُمَّةِ الْمَشْهُوْدُلَهَا بِالْعِصْمَةِ وَاِنْ صَلّٰى اِلَى الْقِبْلَةِ وَاعْتَقَدَ نَفْسَهٗ مُسْلِمًا لِاَنَّ الْاُمَّةَ لَيْسَتْ عِبَارَةً عَنِ الْمُصَلِّيْنَ اِلَى الْقِبْلَةِ بَلْ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَهُوَ كَافِرٌ وَاِنْ كَانَ لَا يَدْرِىْ اَنَّهٗ كَافِرٌ۔

तर्जमा : "बद मज़्हब अगर अपनी बद मज़्हबी में **ग़ाली**[327] हो जिस के सबब उसे काफ़िर कहना वाजिब हो तो इजमाअ़ में उस की मुख़ालफ़त, मुवाफ़क़त का कुछ ए'तिबार न होगा[328] कि ख़त़ा से मा'सूम होने की शहादत तो उम्मत के लिये आई है और वोह उम्मत ही से नहीं अगर्चे क़िब्ला की त़रफ़ नमाज़ पढ़ता और अपने आप को मुसलमान ए'तिक़ाद करता हो इस लिये कि उम्मत क़िब्ला की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने वालों का नाम नहीं बल्कि मुसलमान का नाम है और येह शख़्स काफ़िर है अगर्चे अपनी जान को काफ़िर न जाने" रद्द में है :

(326) مَعَاذَاللّٰه येह अ़क़ीदा रखना कि दुन्या हमेशा से है जिस त़रह़ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हमेशा से है। जब कि ऐसा नहीं या'नी दुन्या हमेशा से नहीं है बल्कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने इसे बा'द में बनाया है। (327) ह़द से बढ़ा हुवा हो। (328) येह फ़िर्क़े

لَاخِلَافَ فِی کُفْرِ الْمُخَالِفِ فِیْ ضَرُوْرِیَاتِ الْاِسْلَامِ وَاِنْ کَانَ مِنْ اَھْلِ الْقِبْلَۃِ الْمُوَاظِبِ طُوْلَ عُمْرِہٖ عَلَی الطَّاعَاتِ کَمَافِیْ شَرْحِ التَّحْرِیْرِ۔

तर्जमा : ज़रूरियाते इस्लाम से किसी चीज़ में ख़िलाफ़ करने वाला बिल इज्माअ़ काफ़िर है अगर्चे अहले क़िब्ला से हो और उ़म्र भर **ताअ़ात**(329) में बसर करे जैसा कि शर्हे तहरीर में इमाम बिन अल हुमाम ने फ़रमाया। कुतुबे अ़क़ाइद व फ़िक़्ह व उसूल इन तस्रीहात से माला माल हैं।

राबिअ़न : ख़ुद मस्अला **बदैही है**(330) क्या जो शख़्स पांच वक़्त क़िब्ला की त़रफ़ नमाज़ पढ़ता और एक वक़्त **महादेव**(331) को सजदा कर लेता हो, किसी आ़क़िल के नज़्दीक मुसलमान हो सकता है? हा़लांकि **अल्लाह** को झूटा कहना या मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी करना, महादेव के सजदे से कहीं बदतर है अगर्चे कुफ़्र होने में **बराबर है**(332) وَذٰلِکَ اَنَّ الْکُفْرَ بَعْضَہٗ اَخْبَثُ مِنْ بَعْضٍ(333) वजह येह कि बुत को सजदा **अ़लामते तक्ज़ीबे ख़ुदा है**(334) और अ़लामते तक्ज़ीब ऐन **तक्ज़ीब के बराबर नहीं**(335) हो सकती और सजदे में येह एह़तिमाल भी निकल सकता है कि मह़्ज़ तहि़य्यत व मुजरा

---

(329) इबादतों (330) या'नी जिसे समझने के लिये किसी दलील की ज़रूरत न हो (331) बड़ा बुत। (332) या'नी दोनों अ़क़ीदे कुफ़्र ही हैं। (333) और येह इस लिये कि कुछ कुफ़्र दूसरे कुफ़्रियात से ज़ियादा ख़बीस होते हैं। (334) बुत को सजदा करना ख़ुदा को झूटा कहने की अ़लामत है। (335) झूटा कहने की अ़लामत (बुत को सजदा करना) ख़ुद ख़ुदा को झूटा कहने से, कुफ़्र में कमतर है। या'नी बुत को सजदा करना छोटा कुफ़्र है और ख़ुदा को झूटा कहना बड़ा कुफ़्र है।

मक़्सूद हो, न **इ़बादत**।(336) और महूज़ तहि़य्यत **फ़ी नफ़्सिही कुफ़्र नहीं**(337) व लिहाज़ा अगर मसलन किसी **आ़लिम या आ़रिफ़ को तहि़य्यतन सजदा करे, गुनहगार होगा, काफ़िर न होगा**(338) इमसाले बुत में शरअ़ ने मुत़लक़न हुक्मे कुफ़्र बर बनाए शिआ़र **ख़ास कुफ़्र रखा है**(339) ब ख़िलाफ़े बदगोई हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) कि **फ़ी नफ़्सिही कुफ़्र है**(340)

---

(336) किसी को बुत के आगे सजदा करते देख कर येह भी सोचा जा सकता है कि शायद येह इ़बादत की निय्यत से सजदा नहीं कर रहा बल्कि महूज़ अदब की वजह से झुक रहा है अलबत्ता इस पर कुफ़्र का हुक्म इस सूरत में इस वजह से लगेगा कि बुत को सजदा करना काफ़िरों का ख़ास मज़्हबी त़रीक़ा है और येह शख़्स उन की मुशाबहत कर रहा है। (337) अदब से झुकना बज़ाते ख़ुद कुफ़्र नहीं है। किसी आ़लिम या आ़रिफ़ को तहि़य्यतन सजदा करे, गुनहगार होगा काफ़िर न होगा जब कि ख़ुदा को झूटा कहना बड़ा कुफ़्र है क्यूंकि ग़ैरुल्लाह को सजदा करना सिर्फ़ अ़लामते कुफ़्र है। और येह (ख़ुदा को झूटा कहना) बज़ाते ख़ुद कुफ़्र है इसे यूं समझें कि जैसे खांसी होना, टीबी की अ़लामत है तो बीमारी तो खांसी भी है और टीबी भी, लेकिन खांसी जो कि टीबी की अ़लामत है ख़ुद टीबी से छोटी बीमारी है। (338) कोई किसी आ़लिम या बुज़ुर्ग को महूज़ ता'ज़ीम के त़ौर पर सजदा करे तो वोह सख़्त गुनहगार तो होगा लेकिन काफ़िर नहीं होगा क्यूंकि येह बुज़ुर्ग या आ़लिम बुत नहीं और इन्हें सजदा करना काफ़िरों का ख़ास मज़्हबी त़रीक़ा भी नहीं है फिर अगर उस शख़्स ने सजदा महूज़ अदब की वजह से किया हो तो ह़राम है कुफ़्र नहीं और अगर इ़बादत की निय्यत से करता तो काफ़िर हो जाता गोया बुत को सजदा करने में निय्यत नहीं देखी जाएगी और उसे काफ़िर क़रार दिया जाएगा क्यूंकि बुत को सजदा करना काफ़िरों का ख़ास मज़्हबी त़रीक़ा है और किसी बुज़ुर्ग को सजदा करे तो निय्यत का लिह़ाज़ रखा जाएगा या'नी अगर निय्यते इ़बादत है तो काफ़िर और अगर निय्यत महूज़ अदब करना है तो सख़्त गुनाहगार है लेकिन काफ़िर नही है। (339) या'नी बुतों वग़ैरा को सजदा करने से जो शरीअ़त काफ़िर क़रार देती है ख़्वाह अदबन सजदा करे या इ़बादत की निय्यत से, वोह इस वजह से कि बुतों वग़ैरा को सजदा करना काफ़िरों का ख़ास मज़्हबी त़रीक़ा है। (340) या'नी किसी को सजदा करना तो उस सूरत में कुफ़्र होगा जब कि इ़बादत की निय्यत से करे या जिसे सजदा कर रहा है काफ़िरों का झूटा मा'बूद हो या'नी सजदा बज़ाते ख़ुद कुफ़्र नहीं है बल्कि बुत या काफ़िरों से मुशाबहत की बिना पर सजदा कुफ़्र हो गया है और सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की गुस्ताख़ी बज़ाते ख़ुद कुफ़्र है तो इन दोनों में "**गुस्ताख़ी**" ज़ियादा ख़बीस कुफ़्र है।

जिस में कोई **एह्तिमाले इस्लाम नहीं**(341) और मैं यहां इस फ़र्क़ पर **बिना नहीं रखता**(342) कि साजिदे सनम की तौबा **बइजमाए़ उम्मत मक़्बूल है**(343) मगर सय्यिदे आ़लम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ी करने वाले की तौबा हज़ारहा अइम्मए दीन के नज़्दीक **अस्लन क़बूल नहीं**(344) और इसी को हमारे उ़लमाए ह़नफ़िय्या से इमाम बज़ाज़ी व इमाम मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ इब्नुल हुमाम व अ़ल्लामा उ़मर बिन नजीम साहि़बे नहरुल फ़ाइक़ व अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ग़ज़्ज़ी साहि़बे तन्वीरुल अब्सार व अ़ल्लामा मौला ख़ुसरू साहि़बे दुरर व ग़ुरर व अ़ल्लामा ज़ैन बिन नजीम साहि़बे बह़्रुर्राइक़ व अश्बाह वन्नज़ाइर व अ़ल्लामा ख़ैरुद्दीन रमली साहि़बे फ़तावा ख़ैरिय्या व अ़ल्लामा शैख़ी ज़ादा साहि़बे मजमउ़ल अन्हुर व अ़ल्लामा मुदक़्क़िक़ मुह़म्मद बिन अ़ली ह़स्कफ़ी साहि़बे दुर्रे मुख़्तार वग़ैरहुम **अ़माइदे किबार** عليهم رحمة الله العزيز الغفّار **ने इख़्तियार फ़रमाया :**(345) بِيَدَ اَنَّ تَحْقِيْقَ الْمَسْئَلَةِ فِى الْفَتَاوٰى الرَّضَوِيَّه(346) इस लिये कि अ़दमे क़बूले तौबा सिर्फ़ **ह़ाकिमे इस्लाम के यहां है कि वोह इस मुआ़मले में बा'दे तौबा भी सज़ाए मौत दे वरना अगर तौबा सिद्क़े दिल से है तो इन्दल्लाह मक़्बूल है,**(347) कहीं येह बदगो, इस मस्अले को

---

(341) या'नी सरकार (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की गुस्ताख़ी हर पहलू से कुफ़्र ही है सन्जीदगी से करे ख़्वाह मज़ाक़ से क़ौल से, करे ख़्वाह फे़'ल से हर त़रह़ कुफ़्र ही है इस्लाम किसी त़रह़ नहीं। (342) या'नी मैं येह नहीं कहता कि बुत को सजदा करने वाले और गुस्ताख़े रसूल में बस इतना ही फ़र्क़ है। (343) क्यूंकि बुत को सजदा करने वाला अगर तौबा करे तो सारी उम्मत का फ़ैसला है कि उस की तौबा क़बूल हो जाएगी। (344) बिल्कुल क़बूल नहीं। (345) बड़े बड़े बुज़ुर्गों ने इख़्तियार (346) वाज़ेह़ हो कि इस मस्अले की तह़क़ीक़ फ़तावा रज़विय्या में है। (347) या'नी येह तौबा का क़बूल न होना इस त़रह़ है कि ह़ाकिमे इस्लाम उसे तौबा के बा'द भी क़त्ल करेगा वरना अगर तौबा सच्चे दिल से है तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हां मक़्बूल है। अलबत्ता ह़ाकिमे इस्लाम अब भी उसे क़त्ल करेगा ताकि दूसरों को इ़ब्रत हो।

दस्तावेज़(348) न बना लें कि आख़िर तौबा क़बूल नहीं फिर क्यूं ताइब होऊं ? नहीं नहीं तौबा से कुफ़्र मिट जाएगा, मुसलमान हो जाओगे, जहन्नमे अबदी से नजात पाओगे, **इस क़दर पर इजमाअ़**(349) है। (350)كمافى رَدُّ الْمُحْتَارِ وغيره (351) واللہ تعالٰی اعلم

तीसरा मक्र

इस फ़िर्क़ए बे दीन का तीसरा मक्र येह है कि फ़िक़ह में लिखा है जिस में निनानवे बातें कुफ़्र की हों और एक बात इस्लाम की तो उस को काफ़िर न कहना चाहिये।

अव्वलन : येह मक्रे ख़बीस सब मक्रों से बद तर व ज़ईफ़ **जिस का ह़ासिल**(352) येह (है) कि जो शख़्स दिन में एक बार अज़ान दे या दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ ले और निनानवे बार बुत पूजे, **संख फूंके**(353) घन्टी बजाए वोह मुसलमान है कि इस में निनानवे बातें कुफ़्र की हैं तो एक इस्लाम की भी है। येही काफ़ी है ह़ालांकि मोमिन तो मोमिन कोई आ़क़िल उसे मुसलमान नहीं कह सकता।

सानिय्यन : इस की रू से सिवा दहरिये के कि सिरे से ख़ुदा के वुजूद ही का मुन्किर हो, तमाम काफ़िर, मुशरिक, मजूस, हुनूद व नसारा यहूद वग़ैरहुम दुन्या भर के कुफ़्फ़ार सब मुसलमान ठहर जाते हैं कि और बातों के मुन्किर सही आख़िर वुजूदे ख़ुदा के तो क़ाइल हैं ! एक येही बात सब से बढ़ कर इस्लाम की बात बल्कि तमाम इस्लामी बातों की **अस्लुल उसूल** है(354) ख़ुसूसन कुफ़्फ़ारे फ़लासिफ़ा व आरिया वग़ैरहूम कि **बज़ो 'मे ख़ुद**(355) **तौह़ीद के भी क़ाइल हैं**(356) और यहूदो नसारा तो बड़े भारी मुसलमान ठहरेंगे कि तौह़ीद के साथ साथ

---

(348) तह़रीरी सुबूत। (349) या'नी इतनी ही बात पर उम्मत का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला है (350) जैसा कि रद्दुल मुह़तार वग़ैरा में है। (351) और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ज़ियादा जानने वाला है (352) जिस का ख़ुलासा। (353) बुत परस्तों का ख़ास मज़हबी बाजा बजाए। (354) तमाम उसूलों की बुन्याद (ख़ुदा को मानना है) (355) ख़ुद अपने ख़याल में। (356) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को एक भी मानते हैं।

अल्लाह तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) के बहुत से कलामों और हज़ारों नबियों और क़ियामत व ह़श्र व ह़िसाब व सवाब व अ़ज़ाब व जन्नत व नार वग़ैरा बकसरत इस्लामी बातों के क़ाइल हैं।

सालिसन : इस के रद्द में कु़रआने अ़ज़ीम की वोह आयतें कि ऊपर गुज़रीं काफ़ी वाफ़ी हैं जिन में बावस्फ़ **कलिमा गोई व नमाज़ ख़्वानी**(357) सिर्फ़ एक एक बात पर हुक्मे तक्फ़ीर फ़रमा दिया कहीं इरशाद हुवा كَفَرُوۡا بَعۡدَ اِسۡلَامِهِمۡ **तर्जमा :** वोह मुसलमान हो कर इस कलिमे के सबब काफ़िर हो गए। कहीं फ़रमाया لَا تَعۡتَذِرُوۡا قَدۡ كَفَرۡتُمۡ بَعۡدَ اِيۡمَانِكُمۡ (پارہ ۱۰ التوبہ ۲٦) **तर्जमा :** "बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके ईमान के बा'द"। ह़ालांकि इस मक्रे ख़बीस की बिना पर जब तक **99** से ज़ियादा कुफ़्र की बातें जम्अ़ न हो जातीं, सिर्फ़ एक कलिमे पर हुक्मे कुफ़्र सह़ीह़ न था। हां शायद इस का येह जवाब दें कि ख़ुदा की ग़लती या जल्दबाज़ी थी कि उस ने दाइरए इस्लाम को तंग कर दिया, कलिमा गोयों, अहले क़िब्ला को धक्के दे दे कर, सिर्फ़ एक एक लफ़्ज़ पर, इस्लाम से निकाला और फिर ज़बरदस्ती येह कि لَاتَعۡتَذِرُوۡا उ़ज़्र भी न करने दिया न उ़ज़्र सुनने का क़स्द किया। अफ़्सोस कि ख़ुदा ने **पीरे नीचर**(358) या **नदविय्या लेकचर**(359) या इन के **हम ख़याल**(360) किसी **वसीउ़ल इस्लाम**(361) **रीफ़ार्मर**(362) से मश्वरा न लिया। (363) اَلَا لَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيۡنَ۔

---

(357) कलिमा व नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद। (358) जिसे लोग सर सय्यिद कहते हैं इस शख़्स ने दरजनों ऐसी बातों का इन्कार किया जिन का इन्कार कुफ़्र है। (359) "**नदवतुल उ़लमा**" जो कि देवबन्दी इदारा है इस के मुदर्रिस। (360) इन जैसे ख़यालात रखने वाले। (361) इस्लाम की ऐसी ता'रीफ़ करने वाला जिस से काफ़िर भी मुसलमान क़रार पाएं। (362) अंग्रेज़ी का लफ़्ज़ है लुग़वी मा'ना है इस्लाह़ और बेहतरी करने वाला इस्लाह़ पसन्द (तन्ज़ के तौर पर फ़रमाया) उस दौर में और मौजूदा दौर में भी बा'ज़ लोग ऐसे हैं जो दीन की बुन्यादें गिरा कर मह़्ज़ सियासी बुन्यादों पर गुस्ताख़ों और दीन की धज्जियां उड़ाने वालों को भी मुसलमान तस्लीम करवाना चाहते हैं। (363) (ख़बरदार ज़ालिमों पर अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की ला'नत है)

राबिअ़न : इस मक्र का जवाब :

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ج فَمَاجَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ
ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْىٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰى
اَشَدِّالْعَذَابِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّاتَعْمَلُوْنَ ﴿۸۵﴾اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ زفَلَايُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ﴿۸۶﴾(پاره ۱ البقرة ۸۵تا۸۶)

तर्जमा : तो क्या **अल्लाह** के कलाम का कुछ हिस्सा मानते हो और कुछ हिस्से से मुन्किर हो तो जो कोई तुम में से ऐसा करे उस का बदला नहीं मगर दुन्या की ज़िन्दगी में रुस्वाई और क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा सख़्त अ़ज़ाब की त़रफ़ पलटे जाएंगे और **अल्लाह** तुम्हारे **कौतकों**(364) से ग़ाफ़िल नहीं येही लोग हैं जिन्हों ने **उ़क़्बा**(365) बेच कर दुन्या ख़रीदी तो उन पर से कभी अ़ज़ाब हल्का हो न उन को मदद पहुंचे।

कलामे इलाही में फ़र्ज़ कीजिये अगर हज़ार बातें हो तो उन में से हर एक बात का मानना एक इस्लामी अ़क़ीदा है। अब अगर कोई शख़्स **999** माने और सिर्फ़ एक न माने तो क़ुरआने अ़ज़ीम फ़रमा रहा है कि वोह इन **999** के मानने से मुसलमान नहीं बल्कि सिर्फ़ इस एक के न मानने से काफ़िर है, दुन्या में उस की रुस्वाई होगी और आख़िरत में उस पर सख़्त तर अ़ज़ाब जो **अबदल आबाद**(366) तक कभी **मौक़ूफ़**(367) होना क्या मा'ना ? एक आन को हल्का भी न किया जाएगा न कि **999** का इन्कार करे और एक को मान ले तो मुसलमान ठहरे, येह मुसलमानों का अ़क़ीदा नहीं बल्कि ब शहादते क़ुरआने अ़ज़ीम ख़ुद सरीह़ कुफ़्र है।

---

(364) करतूतों, बुरे आ'माल (365) आख़िरत। (366) हमेशा हमेशा तक। (367) रुक जाना, ख़त्म हो जाना।

ख़ामिसन : अस्ल बात येह है कि फ़ुक़हाए किराम पर इन लोगों ने **जीता इफ़्तिरा**(368) उठाया, उन्हों ने हरगिज़ कहीं ऐसा नहीं फ़रमाया बल्कि इन्हों ने ब **ख़स्लते यहूद**(369) يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ (پارہ۵النسآء۴۶) यहूदी बात को उस के ठिकानों से फेरते हैं। तह़रीफ़ तब्दील कर के कुछ का कुछ बना लिया, फ़ुक़हा ने येह नहीं फ़रमाया कि जिस शख़्स में निनानवे बातें कुफ़्र की और एक इस्लाम की हो वोह मुसलमान है। (370)حاشَالِلّٰہ बल्कि उम्मत का इजमाअ़ है कि जिस में निनानवे हज़ार बातें इस्लाम की और एक कुफ़्र की हो वोह यक़ीनन क़त़्अ़न काफ़िर है। 99 क़त़रे गुलाब में एक बूंद पेशाब का पड़ जाए, सब पेशाब हो जाएगा मगर येह जाहिल कहते हैं निनानवे क़त़रे पेशाब में एक बूंद गुलाब का डाल दो, सब त़य्यिबो त़ाहिर हो जाएगा। ह़ाशाकि (ह़ालांकि) फ़ुक़हा तो फ़ुक़हा कोई अदना तमीज़ वाला भी ऐसी जहालत बके??? बल्कि फ़ुक़हाए किराम ने येह फ़रमाया है कि "जिस मुसलमान से कोई लफ़्ज़ ऐसा सादिर हो जिस में सो पहलू निकल सकें, उन में 99 पहलू कुफ़्र की त़रफ़ जाते हों और एक इस्लाम की त़रफ़ तो जब तक साबित न हो जाए कि उस ने ख़ास कोई पहलू कुफ़्र का मुराद रखा है हम उसे काफ़िर न कहेंगे कि आख़िर एक पहलू इस्लाम भी तो है ! क्या मा'लूम शायद उस ने येही पहलू मुराद रखा हो !" और साथ ही फ़रमाते हैं कि अगर वाक़ेअ़ में उस की मुराद कोई पहलूए कुफ़्र है तो हमारी तावील

---

(368) साफ़ झूटा इल्ज़ाम। (369) या'नी यहूदियों जैसी आ़दत से काम ले कर कि **तर्जमा : "जिस त़रह़ यहूदी बात को उस की अस्ल जगह से बदल कर वहां रखते हैं जहां उन्हें अपना फ़ाइदा नज़र आता है"** इसी त़रह़ येह गुस्ताख़ भी उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की इ़बारतों में रद्दो बदल करते रहते हैं। (370) **अल्लाह** की क़सम हरगिज़ ऐसी बात नहीं है।

से उसे **फ़ाइदा न होगा**(371) वोह **इन्दल्लाह काफ़िर ही होगा**(372) इस की मिसाल येह है कि मसलन **ज़ैद**(373) कहे : “**अ़म्र**(374) को **इल्मे क़त़ई यक़ीनी ग़ैब का है**”(375) इस कलाम में इतने पहलू हैं : ﴾1﴿ अ़म्र **अपनी ज़ात से ग़ैबदान है**(376) येह सरीह़ कुफ़्रे शिर्क है (377)قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ﴾2﴿ अ़म्र आप तो ग़ैबदान नहीं मगर जिन्न इल्मे ग़ैब रखते हैं। उन के बताए से इसे ग़ैब का इल्म यक़ीनी हासिल है, येह भी कुफ़्र है (378)تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَالَبِثُوْا فِى الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴾3﴿ अ़म्र नुजूमी है। ﴾4﴿ **रम्माल**(379) है। ﴾5﴿ **सामुन्दरक**(380) जानता, हाथ देखता है। ﴾6﴿ कव्वे वग़ैरा की आवाज़। ﴾7﴿ ह़शरातुल अर्ज़ के बदन पर गिरने ﴾8﴿ किसी परन्दे या वह़शी चरिन्दे के दाहिने या बाएं निकल कर जाने ﴾9﴿ आंख या दीगर

---

(371) या'नी अगर उस शख़्स ने कुफ़्री मा'ना का इरादा किया था और हम ने हुस्ने ज़न की वजह से कुफ़्र का फ़तवा न दिया तो इस का उसे कोई फ़ाइदा न होगा या'नी काफ़िर तो वोह हो ही गया। (372) **अल्लाह** के दरबार में वोह अपनी निय्यत के मुत़ाबिक़ काफ़िर ही गिना जाएगा। (373) कोई शख़्स, बत़ौरे मिसाल। (374) कोई शख़्स। बत़ौरे मिसाल। (375) अ़म्र को इल्मे क़त़ई यक़ीनी ग़ैब का है, या'नी ज़ैद कहता है कि अ़म्र ग़ैब की बात जानता है इस त़रह से कि इस के वाक़ेअ़ होने में ज़र्रा बराबर शक व शुबा की गुन्जाइश नहीं। मसलन कल बारिश होने वाली है या हो कर रहेगी। (376) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बताए बिग़ैर ख़ुद ही ग़ैब जान लेता है। (377) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ग़ैब नहीं जानते जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं मगर **अल्लाह** (پارہ۲۰،النمل ۶۵) (378) **तर्जमा :** जिन्नों की ह़क़ीक़त खुल गई अगर ग़ैब जानते होते तो इस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते (پارہ۲۲،سبا۱۴) (379) नुजूमी (380) हाथ देखने का इल्म।

आ'ज़ा के फड़कने से **शगून लेता**[381] है। «10» पांसा फेंकता है। «11» फ़ाल देखता है। «12» **ह़ाज़िरात**[382] से किसी को मा'मूल बना कर उस से अह़्वाल पूछता है। «13» मिस्मरीज़्म जानता है। «14» जादू की मेज़ «15» रूहों की तख़्ती से ह़ाल दरयाफ़्त करता है। «16» क़ियाफ़ादान है। «17» **इल्मे ज़ाइरजा**[383] से वाक़िफ़ है इन ज़राएअ़ से उसे ग़ैब का इल्मे यक़ीनी **क़त़ई मिलता है**[384] येह सब भी कुफ़्र हैं रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं :

☆:مَنْ اَتٰى عَرَّافًا اَوْ كَاهِنًا فَصَدَّقَهٗ بِمَا يَقُوْلُ فَقَدْ كَفَرَ بِمَا اُنْزِلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ (ﷺ)رَوَاهُ اَحْمَدُ وَالْحَاكِمُ بِسَنَدٍ صَحِيْحٍ عَنْ اَبِى هريرة رضى اللّٰه تعالىٰ عنه وَلِاَحْمَدَ وَاَبِى دَاوٗد عنه رضى اللّٰه تعالىٰ عنه فَقَدْ بَرِئَ مِمَّا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ (ﷺ)۔

«18» अम्र पर **वह़्ये रिसालत**[385] आती है इस के सबब ग़ैब का इल्म यक़ीनी पाता है जिस त़रह़ रसूलों को मिलता था, येह **अशद्द कुफ़्र है** ।[386]

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا[387]

---

(381) अन्दाज़ा लगाता है मसलन काली बिल्ली रास्ता काट जाए तो ज़रूर कोई बुरी बात होगी। (382) मुर्दों की रूहों को बुलाने का अ़मल करता है। (383) ज़ाइचा बनाता है। ★ ह़ज़रते अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) से मरवी है : "जो किसी नुजूमी या काहिन के पास आए और इन के क़ौल की तस्दीक़ करे तह़क़ीक़ उस ने उस का इन्कार किया जो मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर नाज़िल हुवा (या'नी क़ुरआने मजीद) (अह़मद ह़ाकिम)। अह़मद और अबी दावूद की रिवायत है कि वोह शख़्स बेज़ार हुवा उस से जो मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर नाज़िल हुवा। (384) जब कि इन की वजह से ग़ैब के इल्मे क़त़ई यक़ीनी का दा'वा किया जाए जैसा कि पहले ज़िक्र किया जा चुका है। (385) वह़ी जो सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई थी। (386) बड़ा कुफ़्र है। (387) **तर्जमा :** और लेकिन (मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं और आख़िरी नबी हैं और **अल्लाह** हर शै को जानने वाला है।

﴾19﴿ वह़ी तो नहीं आती मगर बज़रीअ़ए इल्हाम जमीअ़ ग़ुयूब उस पर **मुन्कशिफ़ हो गए हैं**(388) उस का इ़ल्म **तमाम मा 'लूमाते इलाही को मुह़ीत़ हो गया**(389) येह यूं कुफ़्र है (कि) उस ने अम्र को इ़ल्म में हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर तरजीह़ दे दी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का इ़ल्म भी जमीअ़ मा'लूमाते इलाही को मुह़ीत़ नहीं।

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ(390)

(नसीमुर्रियाज़) مَنْ قَالَ فُلَانٌ اَعْلَمُ مِنْهُ(ﷺ) فَقَدْ عَابَهٗ فَحُكْمُهٗ حُكْمُ السَّاب(391)

﴾20﴿ **जमीअ़ का इह़ात़ा न सही**(392) मगर जो उ़लूमे ग़ैब उसे इल्हाम से मिले उन में ज़ाहिरन बात़िनन किसी त़रह़ किसी रसूल इन्सो मलक की **वसात़त व तबइय्यत नहीं**(393) **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) ने बिला वासित़ए रसूल **असालतन**(394) उसे ग़ुयूब पर मुत्त़लअ़ किया, येह भी कुफ़्र है :

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ (آلِ عمران۱۷۹، پارہ۴)

---

(388) गोया **अल्लाह** तआ़ला ने उस के दिल में तमाम छुपी हुई बातों की मा'लूमात डाल दी हैं। (389) उसे **अल्लाह** के बराबर इ़ल्म ह़ासिल हो गया। (390) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान (پارہ۲۳،سورۃ الزمر،آیت۹) (391) **तर्जमा :** जिस ने कहा : फ़ुलां शख़्स सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से ज़ियादा इ़ल्म वाला है यक़ीनन उस ने सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को ऐ़ब लगाया या'नी आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान घटा दी और येह शान घटाना तौहीन है और उस के बारे में वोही मुआ़मला किया जाएगा जो सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को गाली देने वाले के साथ किया जाएगा। (392) उस शख़्स का इ़ल्म इतना तो नहीं कि तमाम मा'लूमाते इलाही के बराबर हो। (393) उस शख़्स को किसी फ़िरिश्ते या रसूल के वसीले के बिग़ैर ही येह उ़लूम ह़ासिल हुवे। न ज़ाहिरी त़ौर पर इ़ल्म देने का कोई वसीला न बात़िनी त़ौर पर। (394) बराहे रास्त।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की शान येह नहीं कि ऐ लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म दे दे हां **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ۙ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (پ۲۹، الجن ۲۶،۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।

﴾21﴿ अ़म्र को रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के वासित़े से **समअ़न या ऐ़नन या इल्हामन**(395) बा'ज़ ग़ुयूब का इल्मे क़त़ई **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने दिया या देता है, येह ख़ालिस इस्लाम है तो मोहक़्क़िक़ीन फ़ुक़हा इस क़ाइल को काफ़िर न कहेंगे अगर्चे इस की बात के इक्कीस पहलूओं में बीस कुफ़्र हैं मगर एक इस्लाम का भी है **एह़तियात़ व तह़सीने ज़न के सबब**(396) उस का कलाम उसी पहलू पर **ह़म्ल करेंगे**(397) जब तक साबित न हो कि उस ने कोई पहलूए कुफ़्र ही मुराद लिया, न कि एक मलऊ़न कलाम, **तक्ज़ीबे ख़ुदा**(398) या तन्क़ीसे शान **सय्यिदुल अम्बिया**(399) عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में साफ़, सरीह़, नाक़ाबिले **तावील व तौजीह हो**(400) और फिर भी हुक्मे कुफ़्र न हो, अब तो इसे कुफ़्र न कहना, कुफ़्र को इस्लाम मानना

---

(395) सुना कर। दिखा कर या दिल में बात डाल कर। (396) एह़तियात़ और मोमिन से अच्छा गुमान करने की वजह से (या'नी येह सोच कर कि मोमिन भला कुफ़्र की बात कैसे कह सकता है?) (397) इसी इस्लामी मा'ना को शुमार करेंगे। इसी मा'ना पर गुमान करेंगे। (398) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को झूटा कहने में। (399) या'नी अम्बियाए किराम के सरदार عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुबारक शान घटाने में (400) इस क़ाबिल नहीं कि उस के कलाम का कोई और इस्लामी मत़लब शुमार कर सकें जिस का कोई इस्लामी मा'ना ही न हो।

होगा, और जो कुफ़्र को इस्लाम माने ख़ुद काफ़िर है। इसी शिफ़ा व बज़ाज़िया दुरर व बह्‌रो नह्‌र व फ़तावा ख़ैरिय्या व मजमउ़ल अन्हुर व दुर्रे मुख़्तार वग़ैरा **कुतुबे मो'तमदा**[401] से सुन चुके कि जो शख़्स हुज़ूरे अक्दस (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की तन्क़ीसे शान करे, काफ़िर है और जो उस के कुफ़्र में शक करे वोह भी काफ़िर है मगर **यहूद मन्श लोग**[402] फ़ुक़हाए किराम पर **इफ़्तिराए सख़ीफ़**[403] और उन के कलाम में **तब्दील**[404] व **तह्‌रीफ़**[405] करते हैं।

وَ سَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ [406]

शर्हे फ़िक़्हे अक्बर में है :

قَدْ ذَکَرُوْا اَنَّ الْمَسْاَلَۃَ الْمُتَعَلِّقَۃَ بِالْکُفْرِ اِذَاکَانَ لَھَا تِسْعٌ وَّ تِسْعُوْنَ اِحْتِمَالًا لِلْکُفْرِ وَ اِحْتِمَالٌ وَاحِدٌ فِیْ نَفْیِہٖ فَالْاَوْلٰی لِلْمُفْتِیْ وَالْقَاضِیْ اَنْ یَعْمَلَ بِالْاِحْتِمَالِ النَّافِیْ [407]

फ़तावा ख़ुलासा व जामेउ़ल फ़ुसव्वलीन व मुहीत़ व फ़तावा आ़लमगीर वग़ैरहा में है :

اِذَا کَانَتْ فِی الْمَسْاَلَۃِ وُجُوْہٌ تُوْجِبُ التَّکْفِیْرَ وَ وَجْہٌ وَاحِدٌیَمْنَعُ التَّکْفِیْرَ فَعَلَی الْمُفْتِیْ وَ الْقَاضِیْ اَنْ یَمِیْلَ اِلٰی ذٰلِکَ الْوَجْہِ وَلَا یُفْتِیْ بِکُفْرِہٖ تَحْسِیْنًا لِلظَّنِّ بِالْمُسْلِمِ ثُمَّ اِنْ کَانَتْ نِیَّۃُ الْقَائِلِ الْوَجْہَ الَّذِیْ یَمْنَعُ التَّکْفِیْرَ فَھُوَ مُسْلِمٌ وَاِنْ لَمْ

---

(401) ऐसी किताब जिन पर ए'तिमाद (भरोसा) किया जाता है। (402) ऐसे लोग जिन का मिज़ाज यहूदियों की त़रह़ है कि जिस त़रह़ यहूदी कलाम में रद्दो बदल करते थे येह भी करते हैं। (403) नाक़िस व कमज़ोर झूटा इल्ज़ाम। (404) बदलाव। (405) रद्दो बदल। कमी बेशी। (406) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे" (پارہ۱۹،الشعرآء۲۲۷) (407) या'नी उ़लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने कुफ़्र के मुतअ़ल्लिक़ एक मस्अले का तज़्किरा फ़रमाया है कि जिस में 99 मआ़नी कुफ़्र के हों और एक मा'ना इस्लाम का हो तो मुफ़्ती और क़ाज़ी को चाहिये कि इस्लामी मा'ना को मद्दे नज़र रखे और कुफ़्र का फ़तवा न दे।

يَكُنْ لَايَنْفَعُهُ حَمَلَ الْمُفْتِيْ كَلَامَهُ عَلٰى وَجْهٍ لَايُوْجِبُ التَّكْفِيْرَ (408)

इसी त़रह़ **फ़तावा बज़ाज़िया**(409) व **बह़रुर्राइक़**(410) व मजमउ़ल अन्हुर व ह़दीक़ए नदिया वग़ैरहा में है । नीज़ तातार ख़ानिया व बह़्‌रे वुसुलुल ह़िसाम व तम्बीहुल विलाह वग़ैरहा में है :

لَايُكَفَّرُ بِالْمُحْتَمَلِ لِاَنَّ الْكُفْرَ نِهَايَةٌ فِى الْعُقُوْبَةِ فَيَسْتَدْعِيْ نِهَايَةً فِى الْجِنَايَةِ وَمَعَ الْاِحْتِمَالِ لَانِهَايَةَ۔

बह़रुर्राइक़ व तन्वीरुल अब्सार व ह़दीक़ए नदिया व तम्बीहुल विलाह वुसुलुल ह़िसाम वग़ैरहा में है :

وَالَّذِيْ تَحَرَّرَ اَنَّهُ لَايُفْتٰى بِكُفْرِ مُسْلِمٍ اَمْكَنَ حَمْلُ كَلَامِهٖ عَلٰى مَحْمَلٍ حَسَنٍ الخ

देखो एक लफ़्ज़ के चन्द एह़तिमाल में कलाम है न कि एक शख़्स के चन्द **अक़्वाल में**(411) मगर यहूदी बात को तह़रीफ़ कर देते हैं ।

---

(408) जब किसी मस्अले में कई मा'ना हों जो कुफ़्र को साबित करें और एक मा'ना ऐसा हो जो कुफ़्र से रोकता हो तो मुफ़्ती व क़ाज़ी को लाज़िम है कि इसी मा'ना की त़रफ़ तवज्जोह करे और मुसलमान से ह़ुस्ने ज़न रखते हुवे कुफ़्र का ह़ुक्म न दे फिर अगर कहने वाले की निय्यत इसी मा'ना की थी जो कुफ़्र से रोकता है (इस्लामी मा'ना) तो वोह मुसलमान है और अगर उस की निय्यत इस्लामी मा'ना की न थी (बल्कि कुफ़्री मा'ना की थी) तो मुफ़्ती का उस के कलाम को इस्लामी समझना उसे कोई फ़ाइदा न देगा (और अल्लाह के यहां काफ़िर ही होगा । انما الاعمال بالنيات) (409) किसी के काफ़िर होने का फ़तवा इस सूरत में न दिया जाए कि जब उस के कलाम के कुछ अच्छे मा'ना भी हों इस लिये कि सज़ाओं में सब से बड़ी सज़ा (सज़ाओं की इन्तिहा) कुफ़्र है और येह तक़ाज़ा करती है कि जुर्म भी इन्तिहाई बड़ा हो और जब कि उस के कलाम में कोई अच्छा मा'ना भी है तो जुर्म की इन्तिहा न हुई (इस वजह से कुफ़्र का फ़तवा जारी न किया जाए) । (410) (बह़रुर्राइक़ में है) और येह बात साबित हो गई कि किसी ऐसे मुसलमान को काफ़िर न कहा जाए जिस के कलाम में किसी अच्छे मा'ना का तलाश करना मुमकिन हो । (411) या'नी उन किताबों में जो गुफ़्तगू है वोह इस सूरत में है कि जब एक लफ़्ज़ बोला जाए और उस के (अच्छे बुरे) कई मत़लब बनते हों अगर बोलने वाला मुसलमान है तो उस के ह़ुस्ने ज़न की बिना पर काफ़िर न कहा जाएगा । येह बात नहीं कि एक शख़्स चन्द बातें बोले उन में कोई कुफ़्र हो और कोई इस्लाम फिर भी उसे काफ़िर न कहें । ولاحول ولاقوة الا بالله जब तक कलिमए कुफ़्र से तौबा न करे और नए सिरे से कलिमा पढ़ कर मुसलमान न हो उसे काफ़िर ही जानेंगे ।

फ़ाइदए जलीला[412]

इस तह़क़ीक़ से येह भी रोशन हो गया कि बा'ज़ फ़तावे मिस्ले फ़तावे क़ाज़ी ख़ान वग़ैरा में जो उस शख़्स पर कि अल्लाह व रसूल की गवाही से निकाह़ करे या कहे **अरवाहे मशाइख़ हाज़िर व वाक़िफ़ हैं**[413] या कहे मलाइका ग़ैब जानते हैं बल्कि कहे मुझे ग़ैब मा'लूम है, हुक्मे कुफ़्र दिया, इस से मुराद वोही **सूरते कुफ़्रिया**[414] **मिस्ले इद्दिआ़ए इल्मे ज़ाती**[415] वग़ैरा है। वरना इन अक़्वाल में तो एक छोड़ मुतअ़द्दिद व **एह़तिमाल इस्लाम के हैं**[416] कि यहां इल्मे ग़ैबे क़त़्ई, **यक़ीनी की तस्रीह़ नहीं**[417] और इल्म का इत़्लाक़ **ज़न्न पर शाएअ़ व ज़ाएअ़ है**[418] तो इल्मे ज़न्नी की शिक़ भी पैदा हो कर

---

(412) इन्तिहाई अहम और काम की बात। (413) बुज़ुर्गों की अरवाह़ हाज़िर हैं और जो कुछ हम कर रहे हैं इन्हें जानती हैं। या'नी येह अक़्वाल उसी सूरत में कुफ़्र है जब कहने वाला येह यक़ीन करें कि येह सब लोग अल्लाह की अ़त़ा के बिग़ैर येह सब कुछ जानते हैं مَعَاذَ اللّٰه (और ऐसा अ़क़ीदा किसी मुसलमान का नहीं है) (414) कुफ़्र की सूरत। (415) या'नी येह दा'वा करना कि येह अरवाह़ व मलाइका वग़ैरहा ख़ुद ब ख़ुद अल्लाह की अ़त़ा के बिग़ैर ही सब कुछ जान लेते हैं। (416) वरना इन अक़्वाल में तो एक नहीं बल्कि कई इस्लामी मा'ना पाए जाते हैं। यक़ीनी व क़त़्ई इल्म वोह है जिस में किसी त़रह़ से किसी क़िस्म के शक व शुबे की गुन्जाइश न हो और इल्मे ज़न्नी वोह इल्म है जिस में थोड़ा बहुत शुबा हो सकता है इसी त़रह़ जो इल्म अन्दाज़े से ह़ासिल होता है उसे भी ज़न्नी कहते हैं अलबत्ता आ़म बोल चाल में इस का फ़र्क़ नहीं करते बल्कि आ़म तौर पर इल्म का लफ़्ज़ यक़ीनी और ज़न्नी दोनों के लिये बोला जाता है। (417) या'नी इन अक़्वाल में येह नहीं कहा गया कि इन (अरवाह़ या मलाइका वग़ैरा) को ग़ैब का ऐसा इल्म मिला है जिस में शक व शुबे की कोई गुन्जाइश नहीं है। (418) या'नी ज़न (अन्दाज़े) को भी आ़म बोल चाल में इल्म कह दिया जाता है।

इक्कीस की जगह **बयालीस एह्तिमाल निकलेंगे**(419)

और इन में बहुत से कुफ़्र से जुदा होंगे कि ग़ैब के इ़ल्मे ज़न्नी का **इद्दिआ़**(420) कुफ़्र नहीं।

बह़्रुर्राइक़ व दुर्रे मुख़्तार में है :

عُلِمَ مِنَ مَسَائِلِهِمْ هُنَا اَنَّ مَنِ اسْتَحَلَّ مَا حَرَّمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی وَجْهِ الظَّنِّ لَا يُكَفَّرُ وَ اِنَّمَا يُكَفَّرُ اِذَا اِعْتَقَدَ الْحَرَامَ حَلَالًا وَ نَظِيْرُهُ مَا ذَكَرَهُ الْقُرْطُبِیُّ فِیْ شَرْحِ مُسْلِمٍ اَنَّ ظَنَّ الْغَيْبِ جَائِزٌ كَظَنِّ الْمُنَجِّمِ وَ الرَّمَّالِ بِوُقُوْعِ شَیْءٍ فِی الْمُسْتَقْبِلِ بِتَجْرِبَةِ اَمْرٍ عَادِیٍّ فَهُوَ ظَنٌّ صَادِقٌ وَالْمَمْنُوْعُ اِدِّعَاءُ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالظَّاهِرُ اَنَّ اِدِّعَاءَ ظَنِّ الْغَيْبِ حَرَامٌ لَا كُفْرٌ بِخِلَافِ اِدِّعَاءِ الْعِلْمِ اھ زَادَ فِی الْبَحْرِ اَلَا تَرٰی اَنَّهُمْ قَالُوْا فِیْ نِكَاحِ الْمُحْرِمِ لَوْ ظَنَّ الْحِلَّ لَا يُحَدُّ بِالْاِجْمَاعِ وَ يُعَزَّرُ كَمَا فِی الظَّهِيْرِيَّةِ وَ غَيْرِهَا وَ لَمْ يَقُلْ اَحَدٌ اِنَّهُ يُكَفَّرُ وَ كَذَا فِیْ نَظَائِرِهٖ اھ .....(421)

---

(419) या'नी पीछे जो 21 एह्तिमालात का ज़िक्र हुवा वोह उस सूरत में थे जब कहने वाला इ़ल्मे यक़ीनी का दा'वा करे और अगर येह दा'वा न करे तो येही तमाम 21 मा'ना इ़ल्मे ज़न्नी (अन्दाज़े से ह़ासिल होने वाले इ़ल्म या ऐसा इ़ल्म जिस में कोई शुबा हो) के तौ़र पर निकलेंगे और ज़ैद के क़ौल कि (अ़म्र को इ़ल्मे ग़ैब है) में दोनों पहलूओं इ़ल्मे यक़ीनी (21 मा'ना) और इ़ल्मे ज़न्नी का लिह़ाज़ रखते हुवे (21 मा'ना) या'नी कुल बयालीस मा'ना निकलेंगे जिन में से कई एक इस्लामी होंगे और इन सूरतों में कुफ़्र का फ़तवा नहीं दिया जाएगा और येही बयालीस मा'ना अरवाह़े बुज़ुर्गाने दीन और मलाइका के इ़ल्मे ग़ैब जानने में निकलेंगे तो कुफ़्र का फ़तवा न लगेगा मगर उसी सूरत में जो ख़ास कुफ़्री मा'ना हैं या'नी ख़ुदा के बताए बिग़ैर ख़ुद ब ख़ुद जान लेना। (420) दा'वा (421) ग़ैब का अन्दाज़ा लगा कर येह दा'वा करना कि ऐसा ऐसा होगा येह कुफ़्र नहीं है। मसलन आ़म तौ़र पर बादल जब मग़रिब की सम्त से आते हैं तो बारिश होती है तो अगर कोई शख़्स बादलों को मग़रिब की सम्त से आता देख कर कहे कि मेरे इ़ल्म के मुत़ाबिक़ बारिश होने वाली है तो ऐसा दा'वा कुफ़्र नहीं क्यूंकि मह़्ज़ अन्दाज़े की बात है क़त़्ई इ़ल्म का दा'वा नहीं। यहां उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के मसाइल से पता चला कि जिस ने अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की किसी ह़राम की हुई शै को ज़न्नी तौ़र पर ह़लाल ठहराया तो उसे काफ़िर न कहा जाएगा उसे तो सिर्फ़ इस सूरत में काफ़िर कहेंगे कि जब वोह ह़रामे (क़त़्ई) को ह़लाल यक़ीन कर ले और इस की मिसाल वोह है जो क़ुर्तुबी ने मुस्लिम की शर्ह़ में ज़िक्र की है कि ग़ैब का ज़न जाइज़ है जैसे नुजूमी और सितारों का इ़ल्म जानने वाले का आ़दत और तजरिबे की वजह से किसी शै के आइन्दा वाक़ेअ़ होने का ज़न.............

तो **क्यूंकर**(422) मुमकिन है कि ड़लमा बा वस्फ़ इन तसरीहात के कि एक एह्तिमाल इस्लाम भी **नाफ़िये कुफ़्र है**(423) जहां बकसरत एह्तिमालाते इस्लाम मौजूद हैं। हुक्मे कुफ़्र लगाएं **ला जरम**(424) इस से मुराद ही ख़ास एह्तिमाले कुफ़्र है मिस्ल **इद्दिआ़ए इल्मे ज़ाती**(425) वग़ैरा वरना येह अक़्वाल **आप ही बातिल**(426) और अइम्मए किराम की अपनी ही तह्क़ीक़ाते आ़लिया के मुख़ालिफ़ हो कर खुद ज़ाहिब व **ज़ाइल होंगे,**(427) इस की तह्क़ीक़ जामेड़ल फ़ुसव्वलीन व रद्दुल मोह्तार व हाशिया अ़ल्लामा नूह़ व मुलतक़त व फ़तावा हुज्जत व तातार ख़ानिया मजमड़ल अन्हुर व ह़दीक़ए नदिया वग़ैरहा कुतुब में है। **नुसूसे इबारात**(428) रसाइले इल्मे ग़ैब मिस्ल (429)اَللُّؤْلُؤُ الْمَكْنُوْن वग़ैरहा में मुलाह़ज़ा हों, व बिल्लाहित्तौफ़ीक़, यहां सिर्फ़ ह़दीक़ए नदिया शरीफ़ के येह कलिमात शरीफ़ा **बस हैं**(430)

...........पस वोह सच्चा गुमान है हां इल्मे ग़ैब का दा'वा करना बुरा है और ज़ाहिर येह है कि ग़ैब के ज़न का दा'वा ह़राम है कुफ़्र नहीं जब कि इल्म (ग़ैबे ज़ाती यक़ीनी) का दा'वा कुफ़्र है। बह़र में येह अल्फ़ाज़ ज़ियादा हैं कि क्या तू नहीं देखता कि ड़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने फ़रमाया कि हालते एह्राम में निकाह़ करने वाला अगर उस के ह़लाल होने का ज़न रखे तो इसे ह़द्द (ह़द्दे ज़िना) न लगाई जाएगी अलबत्ता कोई दूसरी छोटी सज़ा (ता'ज़ीर) दी जाएगी जिस त़रह़ ज़हरिया वग़ैरहा में है और किसी एक ने भी येह न कहा कि उसे काफ़िर कहा जाएगा और इसी त़रह़ इस की दूसरी मिसालें हैं। (422) किस त़रह़ मुमकिन है? (423) या'नी उन वज़ाह़तों के बा वुजूद कि किसी लफ़्ज़ में एक इस्लामी मा'ना भी कुफ़्र का हुक्म लगने से रोक देगा। (424) यक़ीनन। (425) अल्लाह की अ़त़ा के बिग़ैर खुद ब खुद किसी शै को जान लेने का दा'वा करना। (426) खुद ब खुद ग़लत़ क़रार पाएंगे या'नी वोह अक़्वाल जिन में अरवाहे़ बुज़ुर्गाने दीन और मलाइका के ग़ैब जानने का दा'वा करने वालों पर हुक्मे कुफ़्र है वोह हुक्मे कुफ़्र का अ़दम क़रार पाएगा। (427) ख़त्म हो जाएगा (या'नी हुक्मे कुफ़्र उन ड़लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की अपनी तह्क़ीक़ात के मुख़ालिफ़ होने की वजह से खुद ब खुद ख़त्म हो जाएगा) (428) इबारतों के अल्फ़ाज़। (429) येह एक रिसाला है जिस में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इल्मे ग़ैब पर दलाइल हैं। (430) काफ़ी हैं।

جَمِيْعُ مَا وَقَعَ فِىْ كُتُبِ الْفَتَاوٰى مِنْ كَلِمَاتٍ صَرَّحَ الْمُصَنِّفُوْنَ فِيْهَا بِالْجَزْمِ بِالْكُفْرِ يَكُوْنُ الْكُفْرُ فِيْهَا مَحْمُوْلاً عَلٰى اِرَادَةِ قَائِلِهَا مَعْنًى عَلَّلُوْا بِهِ الْكُفْرَ وَ اِذَا لَمْ تَكُنْ اِرَادَةُ قَائِلِهَا ذٰلِكَ فَلَا كُفْرَ

तर्जमा : "कुतुबे फ़तावा में जितने अल्फ़ाज़ पर हुक्मे कुफ़्र का जज़्म किया है इन से मुराद वोह सूरत है कि क़ाइल ने इन से पहलूए कुफ़्र मुराद लिया हो वरना हरगिज़ कुफ़्र नहीं ।" **ज़रूरी तम्बीह**(431) एह़तिमाल वोह मो'तबर है जिस की **गुन्जाइश हो**(432) **सरीह़ बात**(433) में तावील नहीं सुनी जाती वरना कोई बात भी कुफ़्र न रहे। मसलन ज़ैद ने कहा : ख़ुदा दो (2) हैं, इस में येह तावील हो जाए कि लफ़्ज़े ख़ुदा से बह़ज़्फ़े मुज़ाफ़ हुक्मे ख़ुदा मुराद है या'नी क़ज़ा दो हैं, **मुबरम व मुअ़ल्लक़**(434) जैसे कुरआने अ़ज़ीम में फ़रमाया (435)اَلْآنَ يَاْتِيْهُمُ اللّٰهُ اَىْ اَمْرُ اللّٰهِ अम्र कहे : मैं रसूलुल्लाह हूं, इस में येह

(431) ज़रूरी नोटिस। (432) या'नी एक लफ़्ज़ कह कर उस के वोही मा'ना मुराद ले सकते हैं जो मा'ना उस लफ़्ज़ के वाक़ेई बनते भी हों। (433) या'नी वाज़ेह़ बात में कोई ऐसा मत़लब नहीं निकाल सकते जो उस के उ़र्फ़ी मत़लब के ख़िलाफ़ हो, लफ़्ज़े ख़ुदा का मत़लब है वोह ज़ात जो ख़ुद ब ख़ुद हो जिसे किसी ने पैदा न किया हो तो अब अगर कोई शख़्स कहे : "मैं ख़ुदा हूं" या'नी ख़ुद आया हूं तो उस का येह दा'वा नहीं माना जाएगा और उसे काफ़िर कहा जाएगा क्यूंकि शरीअ़त में लफ़्ज़े ख़ुदा से मा'बूद मुराद है और येही मा'ना मश्हूर है तो अब किसी दूर के मा'ना का दा'वा क़बूल नहीं किया जाएगा। यूंही लफ़्ज़े सलात का लफ़्ज़ी मा'ना सुरीन हिलाना भी है तो अगर कोई शख़्स कहे कि कुरआन में اقيموا الصلوة से मुराद डान्स करते रहो तो उस की बक्वास नहीं सुनी जाएगी क्यूंकि शरीअ़त में सलात का मा'ना है मख़्सूस त़रीक़े से नमाज़ पढ़ना। (434) या'नी कहा कि ख़ुदा दो हैं तो क़त़अ़न काफ़िर है उस का येह क़ौल नहीं माना जाएगा कि मेरे क़ौल में ख़ुदा से मुराद हुक्मे ख़ुदा है या'नी ख़ुदा का हुक्म दो त़रह़ से है एक वोह जो तै शुदा (मुबरम) है और दूसरा किसी शर्त़ से मशरूत़ है। (435) मगर येह कि अल्लाह तआ़ला आए या'नी अल्लाह का हुक्म तशरीफ़ लाए।

तावील गढ़ ली जाए कि **लुग़वी मा'ना मुराद हैं**(436) या'नी खुदा ही ने उस की रूह बदन में भेजी, ऐसी तावीलें **ज़िन्हार मस्मूअ़ नहीं**(437)

शिफ़ा शरीफ़ में है : اِدَّعاؤُہٗ التَّاوِيلَ فِیْ لَفْظٍ صَرَاحٍ لَا يُقْبَلُ

तर्जमा : सरीह़ लफ़्ज़ में तावील का दा'वा **नहीं सुना जाता**।(438)

शर्हे शिफ़ा क़ारी में है : هُوَ مَرْدُوْدٌ عِنْدَ الْقَوَاعِدِ الشَّرْعِيَّةِ

"ऐसा दा'वा शरीअ़त में मर्दूद है।"

नसीमुर्रियाज़ में है لَايُلْتَفَتُ لِمِثْلِهٖ وَ يُعَدُّ هِذْيَانًا۔

तर्जमा : "ऐसी तावील की त़रफ़ **इल्तिफ़ात न होगा**(439) और **हज़यान समझी जाएगी**"(440)

---

(436) (या'नी लफ़्ज़ी मा'ना कि) अल्लाह ने मुझे भेजा है (437) हरगिज़ सुनने के क़ाबिल नहीं हरगिज़ न मानी जाएंगी। (438) वाज़ेह़ लफ़्ज़ से उस के ज़ाहिरी मा'ना ही समझे जाते हैं ज़ाहिरी मा'ना के ख़िलाफ़ मत़लब लेने का दा'वा क़ाबिले क़बूल नहीं। मसलन कोई शख़्स कहे : "मैं खुदा हूं फिर उस की तावील येह करे कि मेरा मत़लब येह था कि मैं खुदा का बन्दा हूं। तो उस का दा'वा दुरुस्त नहीं माना जाएगा। यूं ही जो अल्फ़ाज़ आ़म बोल चाल या शरीअ़त में किसी ख़ास मा'ना के लिये बोले जाते हैं तो उन अल्फ़ाज़ से वोही मत़लब लिया जाएगा मसलन किसी शख़्स ने अपनी बीवी से कहा : तुझे त़लाक़ है तो इस से त़लाक़ ही समझी जाएगी और अगर वोह येह दा'वा करे कि त़लाक़ से मेरा मत़लब था कि तेरे मैके जाने पे पाबन्दी नहीं तू आज़ाद है क्यूंकि त़लाक़ का लफ़्ज़ी मत़लब आज़ादी है तो उस का येह दा'वा नहीं सुना जाएगा क्यूंकि शरीअ़त में लफ़्ज़े त़लाक़ से ख़ास मा'ना (निकाह़ का ख़ातिमा) ही मुराद लिये जाते हैं चुनान्चे, अगर किसी ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में ऐसे अल्फ़ाज़ कहे जो तौहीन के लिये बोले जाते हैं तो उस पर हुक्मे कुफ़्र लगेगा चाहे इन का लफ़्ज़ी तर्जमा कुछ और बनता हो। (439) ऐसे क़ौल की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न की जाएगी। (440) और वोह तावील बकवास समझी जाएगी।

फ़तावा ख़ुलासा व फ़ुसूले इमादिया जमाउ़ल फ़ुसव्वलीन व फ़तावा हिन्दिया वग़ैरहा में है :

وَاللَّفْظُ لِلْعَمَادِی قَالَ اَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ اَوْ قَالَ بِالْفَارْسِیَّةِمن پیغمبرم یُرِیْدُ بِهٖ من پیغام می برم یُکَفَّر

तर्जमा : "अगर कोई शख़्स अपने आप को अल्लाह का रसूल या पैग़म्बर कहे और मा'ना येह ले कि मैं पैग़ाम ले जाता हूं, क़ासिद हूं तो वोह काफ़िर हो जाएगा" येह तावील न सुनी जाएगी, फ़ह्फ़ज़्।

मक्रे चहारुम

इन्कार, या'नी जिस ने इन बदगोयों की किताबें न देखीं उस के सामने साफ़ **मुकर जाते हैं**(441) कि इन लोगों ने येह कलिमात कहीं न कहे और जो इन की छपी हुई किताबें, तह़रीरें दिखा देता है। अगर **ज़ी इल्म हुवा तो**(442) नाक चढ़ा कर मुंह बना कर चल दिये या आंखों में आंखें डाल कर बकमाले बे ह़याई साफ़ कह दिया कि आप **मा'क़ूल भी कर दीजिये तो मैं वोही कहे जाऊंगा**(443) और बेचारा बे इ़ल्म हुवा तो उस से कह दिया इन इ़बारतों का येह मत़लब नहीं और आख़िर में है क्या येह दर बत़्ने क़ाइल (या'नी इन इ़बारतों का मत़लब तो कहने वाला ही जानता है), इस के जवाब को वोही आयते करीमा काफ़ी है कि

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَاقَالُوْا ط وَلَقَدْقَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِوَكَفَرُوْابَعْدَ اِسْلَامِهِمْ (پاره ۱۰،توبه ۷۴)

तर्जमा : ख़ुदा की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा ह़ालांकि बेशक ज़रूर वोह येह कुफ़्र के बोल बोले और **मुसलमान हुवे पीछे काफ़िर हो गए**।(444)

---

(441) साफ़ इन्कार कर देते हैं। (442) या'नी अगर इन गुस्ताख़ों की इ़बारतों को दिखाने वाला साह़िबे इ़ल्म हो तो येह गुस्ताख़ों के पैरूकार, मुंह बना कर नाक चढ़ा कर ढीट बन कर चले जाते हैं। (443) साफ़ इन्कार कर देते हैं। (444) ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए।

होती आई है कि इन्कार क्या करते हैं(445)

इन लोगों की **वोह किताबें**(446) जिन में कलिमाते कुफ़्रिय्या हैं मुद्दतों से इन्हों ने खुद अपनी ज़िन्दगी में छाप कर शाएअ़ कीं और इन में बा'ज़ दो दो बार छपीं **मुद्दतहा मुद्दत**(447) से उ़लमाए अहले सुन्नत ने इन के रद्द छापे, **मुआख़ज़े**(448) किये वोह **फ़तवे**(449) जिस में **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) को साफ़ साफ़ काज़िब (झूटा) माना है और जिस की अस्ल महरी व दस्तख़ती इस वक़्त तक मह़फ़ूज़ है और इस के फ़ोटो भी लिये गए जिन में से एक फ़ोटो कि उ़लमाए ह़रमैन शरीफ़ैन को दिखाने के लिये मअ़ दीगर कुतुबे दुश्नामियां गया था सरकार मदीनए त़य्यिबा में भी मौजूद है।

येह तक्ज़ीबे खुदा का नापाक फ़तवा अठ्ठारह बरस हुवे रबीउ़ल आख़िर 1308 हि. में रिसालए सियानुन्नास के साथ मत़बअ़ ह़दीक़तुल उ़लूम मेरठ में **मअ़ रद्द के शाएअ़ हो चुका**(450) फिर 1318 हि. मत़बए़ गुलज़ार ह़सनी बम्बई में इस का और **मुफ़स्सल रद्द**(451) छपा, फिर 1320 हि. में पटना अ़ज़ीमाबाद मत़बए़ तोह़फ़ए ह़नफ़िया में इस का और **क़ाहिर रद्द**(452) छपा और फ़तवे देने वाला जमादल आख़िर 1323 हि. में मरा, और **मरते दम तक साकित रहा**(453) न येह कहा कि वोह फ़तवा मेरा

---

(445) येह इन लोगों की पुरानी आ़दत है कि येह लोग इन्कार कर देते हैं या'नी कह कर मुकर जाते हैं। (446) या'नी बराहीने क़ातिआ़ व ह़िफ़्ज़ुल ईमान व तह़ज़ीरुन्नास व कुतुबे क़ादियानी वग़ैरहा फ़तवाए गंगोही। (447) बहुत अ़रसे तक। (448) बाज़पुर्स की। पूछगछ की। (449) बराहीने क़ात़िआ़ व ह़िफ़्ज़ुल ईमान। (450) जवाब के साथ छप चुका है। (451) तफ़्सीली जवाब। (452) ज़बरदस्त जवाब। (453) मरने तक ख़ामोश रहा।

नहीं ह़ालांकि खुद छापी हुई किताबों से फ़तवा का इन्कार कर देना सहल था, न येही बताया कि मत़लब वोह नहीं जो उ़लमाए अहले सुन्नत बता रहे हैं बल्कि मेरा मत़लब येह है, न कुफ़्रे सरीह़ की निस्बत, कोई सहल बात थी ? जिस पर **इल्तिफ़ात न किया !**(454) जै़द से उस का एक मोहरी फ़तवा उस की जि़न्दगी व तन्दुरुस्ती में अ़लानिय्या नक़्ल किया जाए और वोह क़तअ़न यक़ीनन सरीह़ कुफ़्र हो और सालहा साल उस की इशाअ़त होती रहे, लोग उस का रद्द छापा करें, जै़द को इस की बिना पर काफ़िर बताया करें, जै़द इस के बा'द पन्दरह बरस जिये और येह सब कुछ देखे सुने और इस फ़तवा की अपनी त़रफ़ निस्बत से इन्कार अस्लन शाएअ़ न करे बल्कि दम साधे रहे यहां तक कि दम निकल जाए, क्या कोई **आ़क़िल गुमान कर सकता है ?**(455) कि इस निस्बत से **उसे इन्कार था**(456) या उस का मत़लब कुछ और था और इन में के जो जि़न्दा हैं आज के दम तक साकित हैं, न अपनी छापी किताबों से मुन्किर हो सकते हैं न अपनी दुश्नामों का और मत़लब घड़ सकते हैं !

1320 हि. में इन के तमाम कुफ़्रिय्यात का मजमूए़ **यक्जाई रद्द**(457) शाएअ़ हुवा। फिर इन दुश्नामियों के मुतअ़ल्लिक़, कुछ अ़माइदे मुस्लिमीन इल्मी सुवालात इन में के **सरग़ना**(458) के पास ले गए, सुवालों पर जो **ह़ालते सरा सीमगी**(459) बेह़द पैदा हुई, देखने वालों से उस की कैफ़िय्यत पूछिये मगर उस वक़्त भी इन

(454) और उ़लमाए अहले सुन्नत ने इसे काफ़िर कहा, क्या येह कोई छोटी सी बात थी जिस की त़रफ़ तवज्जोह न की ? या'नी इस त़रफ़ लाजि़मी त़ौर पर तवज्जोह करना चाहिये थी मगर न की। (455) अ़क़्लमन्द सोच सकता है ? (456) उसे इस फ़तवे के उस का होने से इन्कार था। (457) तमाम कुफ़्रिय्यात का एक ही किताब में जवाब छपा। (458) गुरू घन्टाल या'नी थानवी साहि़ब। (459) घबराहट व ख़ौफ़।

तह़रीरात से इन्कार हो सका **न कोई मत़लब गढ़ने पर कुदरत पाई**(460) बल्कि कहा तो येह कि : "मैं मुबाह़से के वासित़े नहीं आया, न मुबाह़सा चाहता हूं, मैं इस फ़न में जाहिल हूं और मेरे असातिज़ा भी जाहिल हैं **मा'क़ूल भी कर दीजिये**(461) मैं तो वोही कहे जाऊंगा।"

वोह सुवालात और इस वाक़िए़ का मुफ़स्सल ज़िक्र भी जभी **15** जमादल आख़िर **1323** हि. को छाप कर सरग़ना व **अत्बाअ़**(462) सब के हाथ में दे दिया गया, इसे भी चौथा साल है **सदाए बर नख़ास्त**(463) इन तमाम ह़ालात के बा'द वोह इन्कारी मक्र ऐसा ही है कि सिरे से येही कह दीजिये कि **अल्लाह** व रसूल को येह दुश्नाम दहिन्दा लोग दुन्या में पैदा ही न हुवे, येह सब बनावट है। इस का इलाज क्या हो सकता है ? **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) ह़या दे।

मक्रे पन्जुम

जब ह़ज़रात को कुछ बन नहीं पड़ती, किसी त़रफ़ **मफ़र**(464) नज़र नहीं आती और येह तौफ़ीक़ **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार नहीं देता कि तौबा करें **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ) और मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की शान में जो गुस्ताख़ियां बकीं, जो गालियां दीं, इन से बाज़ आएं जैसे गालियां छापीं इन से **रुजूअ़**(465) का भी ऐ'लान दें कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं :

إِذَا عَمِلْتَ سَيِّئَةً فَاَحْدِثْ عِنْدَهَا تَوْبَةً اَلسِّرَّ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِيَّةَ بِالْعَلَانِيَّةِ

तर्जमा : "जब तू बदी करे तो फ़ौरन तौबा कर, ख़ुफ़्या की ख़ुफ़्या और अ़लानिया की अ़लानिया"

(رواہ الامام احمد فی الزھدو الطبرانی فی الکبیر والبیھقی فی الشعب عن معاذ بن جبل رضی تعالی عنہ بسند حسن جید)

---

(460) कोई दूसरा मत़लब न बना सके। (461) अ़क़्लन साबित भी कर दें कि मैं ग़लत़ हूं (استغفر الله येह हटधर्मी)। (462) चेलों चमचों (463) कोई शुनवाई न हुई। (464) भागने या फ़रार होने की जगह भागने का रास्ता। (465) तौबा।

और **बफ़ह्‌वाए करीमा**(466) , (467) يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا राहे ख़ुदा से रोकना ज़रूर। **नाचार**(468) अ़वामे मुस्लिमीन को भड़काने और दिन दहाड़े उन पर **अन्धेरी डालने को**(469) येह चाल चलते हैं कि उ़लमाए अहले सुन्नत के **फ़तावाए तक्फ़ीर**(470) का क्या ए'तिबार ? येह लोग ज़रा ज़रा सी बात पर काफ़िर कह देते हैं, इन की मशीन में हमेशा कुफ़्र ही के फ़तवे छपा करते हैं। इस्माईल देहलवी को काफ़िर कह दिया....मौलवी इस्ह़ाक़ साहिब को कह दिया....मौलवी अ़ब्दुल ह़य्य साहिब को कह दिया....,फिर **जिन की ह़या और बढ़ी हुई है**(471) वोह इतना और मिलाते हैं कि مَعَاذَ اللّٰه ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहिब को कह दिया.....शाह वलियुल्लाह साहिब को कह दिया....ह़ाजी इम्दादुल्लाह साहिब को कह दिया....मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान साहिब को कह दिया....फिर जो **पूरे ही ह़द्दे ह़या से ऊंचा गुज़र गए**(472) वोह यहां तक बढ़ते हैं कि (473)عِياذاً باللّٰه ह़ज़रते शैख़ मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कह दिया। ग़रज़ जिसे जिस का ज़ियादा **मो'तक़िद**(474) पाया उस के सामने उसी का नाम ले दिया कि इन्हों ने उसे काफ़िर कह दिया यहां तक कि इन में के बा'ज बुज़ुर्गों ने मौलाना शाह मुह़म्मद हुसैन साहिब इलाहबादी मर्ह़ूम व मग़फ़ूर से **जा कर जड़ दी**(475) مَعَاذَ اللّٰه ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह़िय्युद्दीन अ़रबी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को **काफ़िर** कह दिया। मौलाना को **अल्लाह** तआ़ला (عَزَّوَجَلَّ)

---

(466) इस आयते त़य्यिबा के ऐ़न मुत़ाबिक़। (467) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** की राह से रोकते हैं और इस में कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं پارہ۱۲،ھود۱۹) (468) बेबसी से। (469) धोका देने के लिये। (470) कुफ़्र के फ़तवों। (471) जिन की ह़या ख़त्म हो चुकी होती है। (472) पूरे ही बेह़या हो चुके हैं (473) **अल्लाह** की पनाह। (474) अ़क़ीदत मन्द। (475) जा कर झूटी चुग़ली लगा दी।

जन्नते आ़लिय्या अ़ता फ़रमाए। उन्हों ने आयते करीमा اِنۡ جَآءَکُمۡ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَیَّنُوۡۤا(476) पर अ़मल फ़रमाया। ख़त़ लिख कर दरयाफ़्त किया जिस पर यहां से रिसाला اِنۡجَاءُ الۡبَرِیۡ عَنۡ وَسۡوَاسِ الۡمُفۡتَرِی लिख कर इरसाल हुवा और मौलाना ने मुफ़तरी कज़्ज़ाब पर **लाह़ौल शरीफ़ का तोह़फ़ा भेजा**(477) ग़रज़ हमेशा ऐसे ही **इफ़्तरा उठाया करते हैं**(478) जिस का जवाब वोह है जो :

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

اِنَّمَا یَفۡتَرِی الۡکَذِبَ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ (پ۱۴، النحل ۱۰۵)

तर्जमा : झूटे इफ़्तरा वोही बांधते हैं जो ईमान नहीं रखते।

और फ़रमाता है :

فَنَجۡعَلۡ لَّعۡنَتَ اللّٰہِ عَلَی الۡکٰذِبِیۡنَ ﴿۶۱﴾ (پارہ۳، آلِ عمران ۶۱)

तर्जमा : हम अल्लाह की ला'नत डालें झूटों पर

मुसलमानो ! इस **मक्रे सख़ीफ़**(479) **वकीदे ज़ईफ़**(480) का फ़ैसला कुछ दुश्वार नहीं, इन साह़िबों से सुबूत मांगो कि कह दिया कह दिया फ़रमाते हो, कुछ सुबूत दिखाते हो ? कहां कह दिया ? किस किताब, किस रिसाले, किस फ़तवे, किस पर्चे में कह दिया ? हां हां सुबूत रखते हो तो **किस दिन के लिये उठा रखा है ?**(481) दिखाओ और नहीं दिखा सकते और अल्लाह जानता है कि नहीं दिखा सकते तो देखो क़ुरआने अ़ज़ीम तुम्हारे कज़्ज़ाब होने की गवाही देता है, मुसलमानो !

---

(476) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो" (پارہ۲۶، حجرات۶)) (477) या'नी ह़ज़रत ने उस झूटा इल्ज़ाम लगाने वाले कज़्ज़ाब पर **लाह़ौल** पढ़ी। (478) झूटे इल्ज़ाम लगाया करते हैं। (479) कमज़ोर और ज़ईफ़ चालबाज़ी। (480) कमज़ोर धोके। (481) किस दिन के इन्तिज़ार में वोह सुबूत संभाल कर रखा है ?

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

فَاِذْ لَمْ یَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَاللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾ (پارہ ۱۸،النور۱۳)

तर्जमा : जब सुबूत न ला सकें तो **अल्लाह** के नज़्दीक वोही झूटे हैं।

मुसलमानो ! आज़्माए को क्या आज़्माना ? बारहा हो चुका इन ह़ज़रात ने बड़े ज़ोरो शोर से येह दा'वे किये और जब किसी मुसलमान ने सुबूत मांगा, फ़ौरन पीठ फैर गए और फिर मुंह न दिखा सके मगर ह़या इतनी है कि वोह रट, जो मुंह को लग गई है, नहीं छोड़ते, और छोड़ें क्यूंकर कि **मरता क्या न करता** ?(482) अब ख़ुदा और रसूल को गालियां देने वालों के कुफ़्र पर पर्दा डालने का आख़िरी ह़ीला येही रह गया है कि किसी त़रह़ अ़वाम भाइयों के ज़ेह्न में जम जाए कि उ़लमाए अहले सुन्नत यूंही बिला वजह लोगों को काफ़िर कह दिया करते हैं ऐसा ही इन दुश्नामियों को भी कह दिया होगा। मुसलमानो ! इन मुफ़्तरियों के पास सुबूत कहां से आया ? कि मनघड़त का सुबूत ही क्या وَاَنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ كَیْدَ الْخَآئِنِیْنَ(483) इन का **इद्दिआ़ए बात़िल**(484) तो इसी क़दर से बात़िल हो गया।

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ (پارہ ۲۰،النمل ۶۴)

तर्जमा : "लाओ अपनी **बुरहान**(485) अगर सच्चे हो"

---

(482) मरने वाला अपनी जान बचाने के लिये सब कुछ कर गुज़रता है। (483) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक **अल्लाह** तआ़ला दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता। (پارہ ۱۲، یوسف آیت نمبر ۵۲) (484) झूटा दा'वा। (485) दलील, गवाह।

इस से ज़ियादा की हमें ह़ाजत न थी मगर بفضله تعالی हम इन की **कज़्ज़ाबी**(486) का वो रोशन सुबूत दें कि हर मुसलमान पर इन का मुफ़्तरी होना **आफ़ताब**(487) से ज़ियादा ज़ाहिर हो जाए। सुबूत भी بِحَمۡدِاللّٰہِ تَعَالٰی(عَزَّوَجَلَّ) तह़रीरी, वोह भी छपा हुवा, वोह भी न आज का, बल्कि सालहा साल का, जिन जिन की तक्फ़ीर का **इल्तिज़ाम**(488) उ़लमाए अहले सुन्नत पर रखा इन में सब से ज़ियादा गुन्जाइश अगर इन साह़िबों को मिलती तो इस्माई़ल देहलवी में कि बेशक उ़लमाए अहले सुन्नत ने इस के कलाम में बकसरत कलिमाते कुफ़्रिय्या साबित किये और शाएअ़ फ़रमाए **बईहमा**(489) **अव्वलन :** (490)سُبۡحَانُ السُّبُوۡحِ عَنۡ عَیۡبِ کِذۡبٍ مَقۡبُوۡحٍ (1307 हि.) देखिये कि **बारे अव्वल**(491) (1309 हि.) में लखनौ मत़्बए अन्वारे मुह़म्मदी में छपा जिस में **बदलाइले क़ाहिरा**(492) **देहलवी मज़कूर** (493) और इस के इत्तिबाअ़ पर **पछत्तर** (75) **वजह से लुज़ूमे कुफ़्र साबित कर के**(494) सफ़्ह़ा 90 पर हुक्मे अख़ीर येही लिखा कि उ़लमाए मोह़तात़ीन इन्हें काफ़िर न कहें येही सवाब है :

وَ هُوَ الۡجَوَابُ وَ بِهٖ یُفۡتٰی وَ عَلَیۡهِ الۡفَتۡوٰی وَ هُوَ الۡمَذۡهَبُ وَ عَلَیۡهِ الۡاِعۡتِمَادُ وَ فِیۡهِ السَّلَامَةُ وَ فِیۡهِ السَّدُّ

या'नी येही जवाब है और इसी पर फ़तवा हुवा और इसी पर फ़तवा है और येही हमारा मज़्हब और इसी पर ए'तिमाद और इसी में सलामती और इसी में इस्तिक़ामत।

---

(486) झूटा इल्ज़ाम, तोहमत। (487) सूरज। (488) तोहमत। (489) इस के बा वुजूद (490) "**सुब्ह़ानस्सुबूह़ि अ़न ऐ़ब किज़्ब मक़्बूह़**" मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के एक रिसाले का नाम है जिस में येह साबित किया गया है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हर त़रह़ झूट से बरी है। (491) पहली मरतबा। (492) ज़बरदस्त दलीलों के साथ (493) या'नी इस्माई़ल देहलवी। (494) या'नी पछत्तर त़रह़ से कुफ़्र लाज़िम होना साबित किया है।

सानियन : (495)اَلْكَوْكَبَةُ الشَّهَابِيَّةُ فِىْ كُفْرِيَاتِ اَبِى الْوَهَابِيَّةِ देखिये : जो ख़ास इस्माईल देहलवी और उस के **मुत्तबेईन**(496) ही के रद्द में तस्नीफ़ हुवा और बारे अव्वल शा'बान **1316** हि. में अ़ज़ीमाबाद मत़्बए तोह़्फ़ए ह़नफ़िय्या में छपा। जिस में नसूसे जलीला क़ुरआने मजीद व अह़ादीसे सह़ीह़ा व **तसरीह़ाते अइम्मा से**(497) बह़वाला सफ़्ह़ाते **कुतुबे मो'तमदा**(498) इस पर **सत्तर** (**70**) **वजह**(499) बल्कि ज़ाइद से **लुज़ूमे कुफ़्र**(500) साबित किया और बिल आख़िर येही लिखा (स. **62**) हमारे नज़्दीक मक़ामे एह़्तियात़ में **इक्फ़ार**(501) से **कफ़्फ़े लिसान**(502) **माख़ूज़ व मुख़्तार व मुनासिब**(503) وَاللّٰهُ سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰى اَعْلَمُ

सालिसन : (504)سَلُّ السُّيُوْفِ الْهِنْدِيَةِ عَلٰى كُفْرِيَاتِ بَابَا اَلنَّجْدِيَةِ **1312** हि. देखिये कि सफ़र **1312** हि. को अ़ज़ीमाबाद में छपा, इस में इस्माईल देहलवी और इस के मुत्तबेईन पर ब वजहे क़ाहिरा लुज़ूमे कुफ़्र का सुबूत दे कर सफ़्ह़ा, **21-22** पर लिखा : **येह हुक्मे फ़िक़्ही मुतअ़ल्लिक़ ब कलिमाते सफ़्ही था**(505) मगर **अल्लाह** तआला (عَزَّوَجَلَّ) की बे शुमार रह़्मतें, बेह़द

(**495**) الكوكبه الشهابيه فى كفريات ابى الوهابيه मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के एक रिसाले का नाम है। (**496**) शागिर्द। पैरूकार। चेले। (**497**) क़ुरआने मजीद व अह़ादीसे सह़ीह़ा की और अइम्मए किराम की खुली खुली इ़बारतों से (**498**) या'नी जिन किताबों पर उ़लमाए अहले सुन्नत का ए'तिमाद है उन किताबों के सफ़्ह़ात के ह़वालों के साथ। (**499**) सत्तर त़रह़ से। (**500**) कुफ़्र का लाज़िम होना। (**501**) काफ़िर कहने से। (**502**) ज़बान रोकना, ख़ामोशी इख़्तियार करना। (**503**) पसन्दीदा और मुनासिब है या'नी हम ने इसे काफ़िर कहने से अपनी ज़बान को रोक रखा है येही हम ने इख़्तियार किया है और येही मुनासिब है। (**504**) ''سل السيوف الهنديه على كفريات با باالنجديه येह भी आ'ला ह़ज़रत (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का एक मुबारक रिसाला है। जिस में इस्माईल देहलवी का रद्द है (**505**) या'नी कुफ़्र का येह शरई हुक्म उन बे वुक़ूफ़ाना अल्फ़ाज़ के मुतअ़ल्लिक़ था (इन अल्फ़ाज़ बोलने वाले को काफ़िर नहीं कहा बल्कि कहा कि येह अल्फ़ाज़े कुफ़्रिय्या हैं)

बरकतें, हमारे उ़लमाए किराम पर कि येह कुछ देखते । इस **त़ाइफ़ा**(506) के पीर से बात बात पर सच्चे मुसलमानों की निस्बत **हुक्मे कुफ़्रो शिर्क सुनते हैं**(507) **बईंहमा**(508) न शिद्दते ग़ज़ब दामने एह़तियात़ इन के हाथ से छुड़ाती है, **न कुव्वते इन्तिक़ाम ह़रकत में आती**(509) वोह अब तक येही तह़क़ीक़ फ़रमा रहे हैं कि लुज़ूम व इल्तिज़ाम में फ़र्क़ है **अक़्वाल का कलिमए कुफ़्र होना** और बात, और **क़ाइल को काफ़िर मान लेना** और बात, हम एह़तियात़ बरतेंगे, सुकूत करेंगे, जब तक ज़ईफ़ सा ज़ईफ़ एह़तिमाल मिलेगा हुक्मे कुफ़्र जारी करते डरेंगे,..................मुख़्तसरन ।

राबिअ़न : اِزَالَۃُ الْعَارِبِحَجْرِ الْکَرَائِمِ عَنْ کِلَابِ النَّارِ देखिये कि बारे अव्वल 1317 हि. को अ़ज़ीमाबाद में छपा, इस में सफ़्ह़ा 10 पर लिखा हम उस बाब में **क़ौले मुतकल्लिमीन**(510) इख़्तियार करते हैं इन में जो किसी ज़रूरिये दीन का मुन्किर नहीं न **ज़रूरिये दीन**(511) के किसी मुन्किर को मुसलमान कहता है उसे काफ़िर नहीं कहते ।

ख़ामिसन : इस्माईल देहलवी को भी जाने दीजिये, येही दुश्नामी लोग जिन के कुफ़्र पर अब फ़तवा दिया है जब तक इन की **सरीह़ दुश्नामियों**(512) पर इत्तिलाअ़ न थी, मस्अलए **इमकाने किज़्ब**(513) के बाइस इन पर अठत्तर (78) वजह से

---

(506) गुरौह । (507) या'नी इस्माईल देहलवी और उस के चेले बात बात पर सच्चे मुसलमानों को काफ़िर व मुशरिक ठहराते हैं उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی येह सब सुनते और बरदाश्त करते हैं । (508) इस के बावुजूद । (509) या'नी इस्माईल देहलवी सच्चे मुसलमानों को बात बात पर काफ़िर कहता है लेकिन उ़लमाए अहले सुन्नत इस के बा वुजूद न तो कोई इन्तिक़ामी कारवाई करते हैं और न गुस्से की शिद्दत में एह़तियात़ को तर्क फ़रमाते हैं (कि इसे बिला वजह काफ़िर क़रार देते) (510) मुसलमान उ़लमा का ऐसा गुरौह जो अ़क़ाइद पर मुन्तक़ी अन्दाज़ में बह़स करता है । (511) ज़रूरते दीन (इस की वज़ाह़त हो चुकी है) । (512) खुल्लम खुल्ला गालियों पर । (513) या'नी अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से झूट मुमकिन है या नहीं ?

लुज़ूमे कुफ़्र(514) साबित कर के سُبْحَانَ السُّبُّوْحِ(515) में बिल आख़िर सफ़्हा **80** त़बए़ अव्वल पर येही लिखा कि حاشاللہ(516) حاشاللہ हज़ार हज़ार बार حاش للہ मैं हरगिज़ इन की **तक्फ़ीर**(517) पसन्द नहीं करता, इन **मुक़्तदियों**(518) या'नी **मुद्दइयाने जदीद**(519) को तो अभी तक मुसलमान ही जानता हूं अगर्चे इन की **बिदअ़त व ज़लालत**(520) में शक नहीं और इमामुत्ताइफ़ा (इस्माईल देहलवी) के कुफ़्र पर भी हुक्म नहीं करता कि हमें हमारे नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने **अहले** لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ **की तक्फ़ीर से मन्अ़ फ़रमाया है**(521) जब तक वजहे कुफ़्र, **आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन न हो जाए**(522) और हुक्मे इस्लाम के लिये अस्लन कोई **ज़ईफ़ सा ज़ईफ़ मोह़मल भी बाक़ी न रहे।**(523)

فَاِنَّ الْاِسْلَامَ یَعْلُوْ وَلَا یُعْلٰی عَلَیْہِ(524)

---

(514) ऐसे कलिमात जिन को बोलने से इन्सान काफ़िर हो जाता है उन कलिमात के बारे में यूं कहा जाता है कि "इन कलिमात का ए'तिक़ाद और यक़ीन रखना कुफ़्र है" इसे लुज़ूमे कुफ़्र कहते हैं या'नी कुफ़्र का लाज़िम होना। लुज़ूमे कुफ़्र में इन कलिमात को तो कुफ़्रिय्या कहा जाता है लेकिन इन के कहने वाले के मुतअ़ल्लिक़ नाम ले कर या इशारा कर के कुफ़्र का फ़त्वा सादिर नहीं किया जाता जब कि इलतिज़ामे कुफ़्र में उस शख़्स को काफ़िर क़रार दिया जाता है जिस ने वोह कुफ़्रिय्या कलिमात कहे गोया आसान अल्फ़ाज़ में यूं समझ लें कि **लुज़ूमे कुफ़्र** कुफ़्रिय्या कलिमात को कुफ़्रिय्या क़रार देना है और **इलतिज़ामे कुफ़्र** कुफ़्रिय्या कलिमात कहने वाले को काफ़िर क़रार देना है। (515) अठत्तर त़रीक़ों से इस (गंगोही व अम्बेठवी) के कलिमात को कुफ़्रिय्या साबित कर के। (516) ख़ुदा की क़सम हरगिज़ नहीं (517) काफ़िर कहना। (518) जैसे थानवी साहि़ब कि मुह़म्मद रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जनाब में इन की सख़्त गाली 1319 हि. में छपी इस से पहले अपने आप को सुन्नी ज़ाहिर करते बल्कि एक वक़्त वोह था कि मजलिसे मीलाद मुबारक में शरीक अहले इस्लाम होते। (519) नए सिरे से येह दा'वा करने वाले कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) झूट बोल सकता है या'नी गंगोही और अम्बेठवी। (520) दीन में बुरी बात ईजाद करने और गुमराह होने में तो शक नहीं है। (521) कलिमा पढ़ने वालों को काफ़िर कहने से मन्अ़ फ़रमाया है। (522) या'नी मुकम्मल तौर पर यक़ीन न हो जाए कि येह शख़्स काफ़िर हो चुका है। (523) या'नी उस शख़्स को मुसलमान क़रार देने के लिये कोई ज़रा सी गुन्जाइश भी बाक़ी न रहे। (524) इस लिये कि इस्लाम ग़ालिब है मग़लूब नहीं तो जब तक इस्लाम का कोई छोटे से छोटा मा'नए इस्लामी उस के कलाम में हो कुफ़्र का हुक्म न देंगे।

मुसलमानो ! मुसलमानो ! तुम्हें अपना दीनो ईमान और रोज़े क़ियामत व हुज़ूर बारगाहे रह़मान याद दिला कर **इस्तिफ़सार है**[525] कि जिस बन्दए ख़ुदा की **दर बारए तक्फ़ीर**[526] येह शदीद एह़तियात़ येह **जलील तस्रीह़ात**[527] इस पर तक्फ़ीर, **तक्फ़ीर का इफ़्तिरा**[528] कितनी बे ह़याई, कैसा ज़ुल्म, कितनी घिनोवनी नापाक बात, मगर मुह़म्मद रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं और वोह जो कुछ फ़रमाते हैं क़त्अ़न ह़क़ फ़रमाते हैं اِذَا لَمْ تَسْتَحِيْ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ जब तुझे ह़या न रहे तो जो चाहे कर

बे ह़या बाश व आन चे ख़्वाही कुन (529)

मुसलमानो ! येह रोशन ज़ाहिर वाज़ेह़ क़ाहिर इबारात तुम्हारे **पेशे नज़र हैं**[530] जिन्हें छपे हुवे दस (10) दस (10) और बा'ज को सत्तरह (17) और तस्नीफ़ को उन्नीस (19) साल हुवे (और इन दुश्नामियों की तक्फ़ीर तो अब छे साल या'नी 1320 हि. से हुई है (जब से अल मो'तमिद अल मुस्तनद छपी) इन इबारात को बग़ौर नज़र फ़रमाओ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ौफ़ को सामने रख कर इन्साफ़ करो । येह इबारतें फ़क़त़ उन मुफ़्तरियों का इफ़्तिरा ही रद्द नहीं करतीं बल्कि सराह़तन साफ़

---

(525) या'नी येह बन्दए ख़ुदा (आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) का अपनी त़रफ़ इशारा है) तुम्हें याद दिलाता है कि क़ियामत आएगी और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बारगाह में ह़ाज़िर होना पडेगा उस दिन को याद कर के बताओ कि : (526) किसी को काफ़िर कहने के बारे में (527) मुसन्निफ़े किताब मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) ने कितनी वाज़ेह़ इबारतें लिखीं कि हम इन्हें काफ़िर कहना पसन्द नहीं करते जब तक कि मजबूर न हो जाएं । (528) या'नी मुझ पर येह इलज़ाम लगाना कि फ़ुलां को काफ़िर कह दिया, फ़ुला को काफ़िर कहला दिया कितनी बे ह़याई कैसा ज़ुल्म और कितनी गन्दी बात है ! (529) बेह़या हो जा और जो चाहे कर । (530) सामने हैं ।

साफ़ शहादत दे रही हैं कि ऐसी अ़ज़ीम एह़तियात़ वाले ने ★ हरगिज़ इन दुश्नामियों को काफ़िर न कहा जब तक यक़ीनी, क़त़ई, वाज़ेह़, रोशन, जली त़ौर से इन का सरीह़ कुफ़्र आफ़्ताब से ज़ियादा ज़ाहिर न हो लिया जिस में अस्लन-अस्लन, हरगिज़-हरगिज़ गुन्जाइश, कोई तावील न निकल सकी कि आख़िर येह बन्दए ख़ुदा वोही तो है जो इन के अकाबिर पर सत्तर (70) सत्तर (70) वजह से लुज़ूमे कुफ़्र का सुबूत दे कर येही कहता है कि हमें हमारे नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अहले لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की तक्फ़ीर से मन्अ़ फ़रमाया है जब तक कि वजहे कुफ़्र आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन न हो जाए और हुक्मे इस्लाम के लिये अस्लन कोई ज़ईफ़ सा ज़ईफ़ मोह़मल बाक़ी न रहे।

येह बन्दए ख़ुदा वोही तो है जो ख़ुद इन दुश्नामियों की निस्बत (जब तक इन की दुश्नामियों पर इत्त़लाए़ यक़ीनी न हुई थी) अठत्तर (78) वजह से ब हुक्मे फ़ुक़हाए किराम लुज़ूमे कुफ़्र का सुबूत दे कर येही लिख चुका था कि हज़ार हज़ार बार حَاشَ لِلّٰه मैं हरगिज़ इन की तक्फ़ीर पसन्द नहीं करता। जब क्या इन से कोई मिलाप था, अब रन्जिश हो गई? जब इन से जाइदाद की कोई शिर्कत न थी अब पैदा हुई? حَاشَ لِلّٰه मुसलमानों का अ़लाक़ए मह़ब्बत व अ़दावत, सिर्फ़ मह़ब्बत व अ़दावते ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) है, जब तक इन दुश्नाम देहों से दुश्नाम सादिर न हुई या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में इन की दुश्नाम न देखी सुनी थी, उस वक़्त तक **कलिमा गोई का पास लाज़िम था**(531) **ग़ायत एह़तियात़ से काम लिया**(532)

★ या'नी ख़ुद आ'ला ह़ज़रत (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) अपने बारे में फ़रमाते हैं कि मैं ने इन गाली बकने वालों को उस वक़्त तक काफ़िर न कहा और जब तक कि साफ़ वाज़ेह़ और यक़ीनी त़ौर पर इन का कुफ़्र सूरज से ज़ियादा ज़ाहिर न हो गया उस वक़्त तक इन को काफ़िर कहने में एह़तियात़ बरती। (531) या'नी इन के कलिमा पढ़ने का लिह़ाज़ करना ज़रूरी था। (532) इन्तिहाई एह़तियात़ की।

हृत्ताकि फुक़हाए किराम के हुक्म से त़रह़ त़रह़ इन पर कुफ़्र लाज़िम था मगर एह़तियात़न उन का साथ न दिया और मुतकल्लिमीने इज़ाम का मस्लक इख़्तियार किया। जब साफ़ सरीह़ इन्कार ज़रूरियाते दीन व दुश्नाम देहिये रब्बुल आ़लमीन व सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **आंख से देखी**(533) तो **अब बे तक्फ़ीर चारा न था**(534) कि **अकाबिरे अइम्मए दीन की तसरीहें**(535) सुन चुके कि من شک فی عذابه وکفره فقد کفر : **तर्जमा :** "जो ऐसे के मोअ़ज़्ज़ब व काफ़िर होने में शक करे खुद काफ़िर है।" अपना और अपने भाइयों अ़वामे अहले इस्लाम का ईमान बचाना ज़रूरी था **ला जरम हुक्मे कुफ़्र दिया और शाएअ़ किया :** وَذٰلِکَ جَزَآءُ الظّٰلِمِیْنَ **तर्जमा : और येही ज़ालिमों की सज़ा है।**(536)

तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है :

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾ (پارہ۱۵،بنی اسرائیل ۸۱)

तर्जमा : कह दो कि आया ह़क़ और मिटा बात़िल, बेशक बात़िल को ज़रूर मिटना ही था।

और फ़रमाता है :

لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ (پارہ۳،البقرۃ۲۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : दीन में **कुछ जब्र नहीं**(537) बेशक ख़ूब जुदा हो गई है **नेक राह गुमराही से**"(538)

---

(533) या'नी जब अपनी आंखों से देख लिया कि येह लोग ज़रूरियाते दीन का इन्कार करते हैं, मसलन आक़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को आख़िरी नबी नहीं मानते और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) और सरकार (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को गालियां देते हैं मसलन अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) को مَعَاذَ الله झूटा कहा और आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इल्म में शैत़ान से कम और जानवरों के बराबर बताया مَعَاذَ الله (534) तो अब काफ़िर कहना ज़रूरी था (535) बड़े बड़े उ़लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की खुल्लम खुल्ला वज़ाह़तें सुन चुके कि जो इन के काफ़िर होने और अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ होने में शक करे वोह खुद काफ़िर है। (536) तो यक़ीनन इन्हें काफ़िर कहा। और येही ज़ालिमों का बदला है। (537) कुछ ज़बरदस्ती नहीं। (538) ह़क़ का रास्ता गुमराही के रास्ते से साफ़ (व वाज़ेह़) अलग हो गया है।

यहां चार मरह़ले थे : (1) जो कुछ इन दुश्नामियों ने लिखा, छापा ज़रूर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **तौहीन** व **दुश्नाम** था। (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन करने वाला **काफ़िर** है। (3) जो इन्हें काफ़िर न कहे, जो इन का पास-लिहाज़ रखे जो इन की उस्तादी या रिश्ते या दोस्ती का ख़याल करे वोह भी इन में से है, इन ही की त़रह़ **काफ़िर** है, क़ियामत में इन के साथ एक रस्सी में बांधा जाएगा। (4) जो उ़ज़्र व मक्र **जुह्हाल व ज़ुल्लाल**(539) यहां बयान करते हैं सब बात़िल व ना रवा ★ और **पादर हवा**(540) हैं। येह चारों بِحَمْدِاللّٰہِ تعَالٰی **बरवजहे आ'ला**(541) वाज़ेह़ रोशन हो गए जिन के सुबूत क़ुरआने अ़ज़ीम ही की आयाते करीमा ने दिये। अब एक पहलू पर जन्नत व सआ़दते सरमदी, दूसरी त़रफ़ **शक़ावत**(542) व **जहन्नमे अबदी**(543) है, जिसे जो पसन्द आए इख़्तियार करे मगर इतना समझ लो कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का दामन छोड़ कर **ज़ैद व अ़म्र**(544) का साथ देने वाला कभी **फ़लाह़ न पाएगा**(545) बाक़ी हिदायत रब्बुल इ़ज़्ज़त के इख़्तियार में है।

बात بِحَمْدِاللّٰہِ تعَالٰی हर ज़ीइल्म मुसलमान के नज़्दीक **आ'ला बदैहिय्यात से थी**(546) मगर हमारे अ़वाम भाइयों को मोहरें देखने की

---

(539) जाहिल और गुमराह लोग। ★ ग़लत़ व नाजाइज़ व बेकार। (540) कमज़ोर। (541) अच्छे त़रीक़े से, बेहतरीन त़रीक़े से। (542) बदबख़्ती (543) हमेशा के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब। (544) येह नाम मिसाल के त़ौर पर इस्ति'माल किये जाते हैं यहां इन से गुस्ताख़ मुराद हैं। (545) कामयाबी न पाएगा (546) या'नी इतनी ज़ियादा वाज़ेह़ थी कि जिस के समझने के लिये किसी दलील वग़ैरा की बिल्कुल ज़रूरत नहीं थी। **बदैही** उसे कहते हैं जो इतना वाज़ेह़ हो कि समझने के लिये दलील की ज़रूरत न पड़े मसलन दिन के वक़्त सूरज होता है रात के वक़्त सूरज सामने नहीं होता, बर्फ़ ठन्डी है आग गर्म है, वग़ैरहा, बदेही की जम्अ़ **बदैहिय्यात**।

ज़रूरत होती है, मोहरें **उ़लमाए किराम ह़रमैने त़य्यिबैन**[547] से ज़ाइद कहां की होंगी ? जहां से दीन का आग़ाज़ हुवा और ब हुक्मे अह़ादीसे सह़ीह़ा कभी वहां शैत़ान का **दौर दौरा**[548] न होगा लिहाज़ा अपने भाइयों की **ज़ियादते इत़मीनान**[549] को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए त़य्यिबा के उ़लमाए किराम व **मुफ़्तियाने इज़ाम के हुज़ूर**[550] फ़त्वा पेश हुवा जिस ख़ूबी व **ख़ुशउस्लूबी**[551] व जोशे दीनी से इन **अ़माइदे इस्लाम**[552] ने तस्दीकें फ़रमाईं بِحَمْدِاللّٰہ تَعَالٰی **किताबे मुस्तत़ाब**[553] حُسَّامُ الْحَرَمَیْنِ عَلٰی مَنْحَرِ الْکُفْرِ وَ الْمَیْنِ में गिरामी भाइयों के पेशे नज़र और हर सफ़्ह़ा के मुक़ाबिल **सलीस उर्दू**[554] में इस का **तर्जमए मुबीन अह़काम**[555] व **तस्दीक़ाते आ'लाम**[556] जल्वा गर।

इलाही ! इस्लामी भाइयों को क़ुबूले ह़क़ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और **ज़िद व नफ़्सानिय्यत**[557] या तेरे और तेरे ह़बीब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के मुक़ाबिल, ज़ैद व अ़म्र की ह़िमायत से बचा, सदक़ा मुह़म्मद रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की **वजाहत का**[558]

आमीन, आमीन, आमीन

وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَاَفْضَلُ الصَّلاۃِ وَاَکْمَلُ السَّلامِ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِہٖ وَصَحبِہٖ و حِزْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ اٰمِیْنَ[559]

---

(547) मक्कतुल मुकर्रमा व मदीना शरीफ़ के उ़लमाए किराम (رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) (548) ख़ासो आ़म पर मुकम्मल कन्ट्रोल।(549) मुकम्मल त़ौर पर तसल्ली करने के लिये। (550) बड़े बड़े मुफ़्ती ह़ज़रात के सामने। (551) अच्छे त़रीक़े से। (552) बुज़ुर्गाने दीन, इस्लाम के बड़े बड़े उ़लमा (رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) (553) फ़ाइदा मन्द मुबारक किताब (554) आसान उर्दू में। (555) वाज़ेह़ अह़कामात। साफ़ खुली बातें। (556) उ़लमाए किराम की तस्दीक़ात। (557) नफ़्स की पैरवी करना और हटधर्मी से काम लेना। (558) बुज़ुर्गी, मर्तबे का। (559) और तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है और हमारे सरदार मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और उन की आल और अस्ह़ाब और उम्मत पर अफ़्ज़ल दुरूद और अक्मल सलाम हो। "**आमीन**"

अ़रबो अ़जम के उन उ़लमाए किराम के अस्मा जिन्हों ने इमामे अहले सुन्नत (رضی اللہ تعالٰی عنہ) के तक्फ़ीरी फ़त्वा की तस्दीक़ फ़रमाई :

अस्माए उ़लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन

(1) शैख़ उ़लमाए मक्का मुफ़्ती शाफ़िय्या मौलाना शैख़ मुह़म्मद सईद बाबसैल (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(2) शैख़े ख़ुत़बा व अइम्मए मक्कए मुअ़ज़्ज़मा मौलाना शैख़ अह़मद अबुल ख़ैर मीरदाद (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(3) नासिरे सुनन फ़ित्ना शिकन साबिक़ मुफ़्ती मौलाना अ़ल्लामा सालेह़ कमाल (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(4) साह़िबे रिफ़्अ़त व अफ़्ज़ाल मौलाना शैख़ अ़ली बिन सिद्दीक़ कमाल (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(5) बक़िय्यतुल अकाबिर उ़म्दुल अवाख़िर जल्वगाहे नूरे मुत़लक़ मौलाना शैख़ मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़क़ मुहाजिरे इलाहाबादी (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(6) मुह़ाफ़िज़े कुतुबे ख़ानए ह़रम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद इस्माईल ख़लील (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(7) साह़िबे इ़ल्मे हुक्म मौलाना सय्यिद अबू हुसैन मरज़ूक़ी (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(8) सर शिकन अहले मक्रो कैद मौलाना शैख़ उ़मर बिन अबी बक्र बाजुनैद (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(9) साबिक़ मुफ़्ती मालिका मौलाना शैख़ आ़बिद बिन हुसैन मालिकी (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(10) फ़ाज़िले माबरे कामिल मौलाना शैख़ अ़ली बिन हुसैन मालिकी (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(11) ज़ुल जलाल वज़्ज़ीन मौलाना शैख़ जमाल बिन मुह़म्मद बिन हुसैन (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(12) नादिरे रोज़गार मौलाना शैख़ अस्अ़द बिन अह़मद दह्हान मुदर्रिसे ह़रम शरीफ़ (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(13) यक्ताए रोज़गार मौलाना शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान दह्हान (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(14) मुदर्रिस मद्रसए सौलतिया मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ अफ़ग़ानी (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(15) अजल ख़ुलफ़ाए ह़ाजी इम्दादुल्लाह साह़िब मौलाना शैख़ अह़मद मक्की इमदादी मुदर्रिस मद्रसए अह़मदिय्या (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(16) आ़लिमे आ़मिल फ़ाज़िले कामिल मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ ख़य्यात़ (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(17) वाला मन्ज़िलत बुलन्द रिफ़्अ़त ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद सालेह़ बिन मुह़म्मद बाफ़ज़्ल (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(18) साह़िबे फ़ैज़े यज़दानी मौलाना ह़ज़रते अ़ब्दुल करीम नाजी वाग़स्तानी (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(19) फ़ाज़िले कामिल ह़ज़रते मौलाना शैख़ सईद बिन मुह़म्मद यमानी (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(20) फ़ाज़िले कामिल ह़ामिद अह़मद मुह़म्मद जदवाय (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(21) मुफ़्तिये ह़नफ़िय्या ह़ज़रते सय्यिदुना व मौलाना ताजुद्दीन इल्यास मुफ़्तिये मदीनए त़य्यिबा (رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

(22) उ़म्दतुल उ़लमा अफ़्ज़लुल अफ़ाज़िले साबिक़ मुफ़्तिये मदीनए त़य्यिबा अ़स्मन बिन अ़ब्दुस्सलाम दाग़िस्तानी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(23) फ़ाज़िले कामिल शैख़े मालिकिया सय्यिद शरीफ़ मौलाना सय्यिद अह़मद जज़ाइरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(24) साहि़बे फ़ैज़े मल्कूती ह़ज़रते मौलाना ख़लील बिन इब्राहीम ख़ुरबूती (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(25) साहि़बे ख़ूबी व नकूई शैख़ुद्दलाइल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद सई़द (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(26) आ़लिमे जलील फ़ाज़िले अ़क़ील मौलाना मुह़म्मद बिन अह़मद उ़मरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(27) माहिर अ़ल्लामा साहि़ब अ़ज़्ज़ो शरफ़ ह़ज़रते मौलाना सय्यिद अ़ब्बास जलील मुह़म्मद रिज़्वान शैख़े दलाइल (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(28) फ़ाज़िल कामिलुल अ़क़्ल मौलाना उ़मर बिन ह़म्दान मह़रुसी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(29) फ़ाज़िले कामिल आ़लिमे आ़मिल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद बिन मदनी दीदावरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(30) मुदर्रिसे ह़रम मदीनए त़य्यिबा मौलाना शैख़ मुह़म्मद बिन सूसी ख़य्यारी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(31) मुफ़्तिये शाफ़ेइय्या मौलाना सय्यिद शरीफ़ अह़मद बरज़न्जी शाफ़ेई (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(32) फ़ाज़िल ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अ़ज़ीज़ वज़ीर मालिकी मग़रिबी अन्दलूसी मदनी तौनसी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(33) शैख़े फ़ाज़िल मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर तौफ़ीक़ शुलबी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

अस्माए उ़लमाए पाक व हिन्द

(1) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अवलादे रसूल मुह़म्मद मियां बरकाती (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(2) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इस्माई़ल ह़सन अह़मदी बरकाती (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(3) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(4) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना रह़मे इलाही (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(5) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(6) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(7) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़सनैन रज़ा (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(8) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इब्राहीम रज़ा (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(9) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अ़ली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(10) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अक़्दस अ़ली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(11) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना एह़सान अ़ली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(12) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद नूरुल हुदा (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(13) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(14) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद ग़ुलाम मुह़िय्युद्दीन (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(15) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम मोईनुद्दीन (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(16) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सिद्दीक़ुल्लाह (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(17) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नूर (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(18) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुख़्तार अह़मद (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(19)हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम जीलानी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(20) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद शरफ़ुद्दीन अशरफ़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(21) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना हुसैनुद्दीन (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(22) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(23) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना शाहिदुल ह़क़्क़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(24) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अबरार ह़सन (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(25) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सुल्तान अह़मद (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(26) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना वज़ीर अह़मद ख़ान (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(27) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ली (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(28) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मह़बूबे अ़ली (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(29) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना ह़शमत अ़ली (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(30) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अह़मद अशरफ़ुल क़ादिरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(31) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अस्सय्यिद मुह़म्मद अल अशरफ़ी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(32) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अफ़्ज़लुद्दीन अल बिहारी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(33) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मोइनुद्दीन अह़मद (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(34) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अस्सय्यिद मुह़िय्युद्दीन अल अशरफ़ी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(35) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद ह़बीब अशरफ़ी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(36) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना फ़क़ीर मुह़म्मद सुलैमान अगरपूरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(37) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल बाक़ी मुह़म्मद बुरहानुल ह़क़ अल क़ादिरी अर्रज़वी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(38) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल मुफ़्ती मुह़म्मद अ़बदुस्सलाम ज़ियाए सिद्दीक़ी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(39) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल मुफ़्ती जमाअ़त अ़ली (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(40) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ह़ुसैन क़ादिरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(41) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद करमे इलाही बी.ए (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(42) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती ख़ान मुह़म्मद (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(43) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद कामरान (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(44) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल उ़ला मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(45) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इम्तियाज़ अह़मद अन्सारी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(46) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल मजीद (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(47) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़य्य (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(48) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ह़ामिद अ़ली (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(49) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना गुलाम मुह़िय्युद्दीन अह़मद बल्यावी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(50) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अह़मद ह़ुसैन रामपूरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(51) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना क़ाज़ी मुह़म्मद अह़सानुल ह़क़ नईमी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(52) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अह़मद मुख़्तार सिद्दीक़ी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(53) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद अ़ज़ीमुल्लाह इ़ल्मी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(54) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल ह़सनात सय्यिद मुह़म्मद अह़मद रज़वी क़ादिरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(55) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना तसूर ह़िसाम (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(56) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल क़दीर क़ादिरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(57) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना गुलाम ज़ैनुल आ़बिदीन सहसवानी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(58) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद फ़ख़रुद्दीन बिहारी पूरनूरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(59) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना असदुल ह़क़ मुरादाबादी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(60) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मोह़सिन (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(61) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना गुलाम मोईनुद्दीन बिहारी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(62) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना गुलाम अ़ली (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(63) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल हाफ़िज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुरादाबादी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(64) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना गुलाम सय्यिदुल औलिया मुह़िय्युद्दीन अल जीलानी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(65) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(66) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना उ़मर अन्नईमी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(67) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुर्रशीद (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(68) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू मुह़म्मद दीदारे अ़ली (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(69) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल बरकात सय्यिद अह़मद सुन्नी ह़नफ़ी क़ादिरी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(70) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़ज़्ले हुसैन नक़्शबन्दी मुजद्दिदी क़ादिरी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(71) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ नक़्शबन्दी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(72) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नूर मुह़म्मद क़ादिरी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(73) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़िम शाह पुंछवी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(74) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ग़नी हज़ारवी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(75) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मक़्सूद अ़ली (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(76) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाजी अह़मद नक़्शबन्दी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(77) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ग़नी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(78) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इब्राहीम ह़नफ़ी क़ादिरी रज़वी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(79) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल ग़फ़ूर (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(80) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इस्माईल (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(81) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नुरुल क़मर (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(82) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़नीफ़ ह़नफ़ी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(83) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सुल्त़ान अह़मद (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(84) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(85) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़कीम आरवी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(86) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल मजीद रज़वी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(87) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रह़मान दरभंगवी (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(88) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़नीफ़ (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(89) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नसीरुद्दीन आरवी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(90) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ग़रीबुल्लाह (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(91) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ज़फ़रुद्दीन क़ादिरी रज़वी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(92) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद इर्तिज़ा हुसैन क़ादिरी बरकाती (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(93) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इस्माईल मह़मूदाबादी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(94) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुर्रह़मान (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(95) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना रशीद अह़मद उर्फ़ साजीहां मकयावी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(96) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़त़ाउर्रह़मान (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(97) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद वलिय्युर्रह़मान क़ादिरी रशीदी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(98) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद शिफ़ाउर्रह़मान (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(99) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शरफ़ुद्दीन (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(100) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद रह़ीम बख़्श (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(101) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़बीबुर्रह़मान (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(102) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़क़ीर अ़ब्दुल करीम बलयावी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(103) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़फ़ीज़ दरभंगवी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(104) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल ह़सन मुज़फ़्फ़र पूरी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(105) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम रसूल मुह़म्मदी सुन्नी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(106) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुन्नबी अल मुख़्तार मुह़म्मद यारफ़रीदी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(107) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू इल्यास यास इमामुद्दीन ह़नफ़ी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(108) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मीर हुसैन इमामे मस्जिद लोटकी लुधारवी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(109) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(110) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अस्सय्यिद फ़त्ह़ अ़ली शाह अल क़ादिरी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(111) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल करीम जतोड़ी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(112) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना क़ाज़ी फ़ज़्ले अह़मद नक़्शबन्दी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(113) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मज़्हरुल्लाह फ़त्ह़पूर देहली (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(114) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ख़त़ीब जामेअ़ मस्जिद लाहौर मज़ंग (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(115) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना गुल मुह़म्मद इमामे मस्जिद मिरज़ा अह़मद दीन (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(116) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़मीद (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)

(117) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ख़लीलुर्रह़मान बिहारी क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(118) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल फ़ज़्ल मुह़म्मद करीमुद्दीन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(119) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना वाइ़ज़ुल इस्लाम अह़मद दीन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(120) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मौलवी फ़ाज़िल मुह़म्मद फ़ज़्ले हुसैन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(121) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अजमल क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(122) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल क़ादिरी मुह़म्मद अल मदऊ़ ब इ़मादुद्दीन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(123) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम मुह़िय्युद्दीन क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(124) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सलामतुल्लाह क़ादिरी रज़वी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(125) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ूद रशीद मुह़म्मद ह़नीफ़ चिश्ती (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(126) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल ह़ामिद अह़मद अ़ली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(127) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना असद ह़ैदर शाह अल क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(128) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ख़लील (عُفِیَ عَنْہُ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(129) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(130) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद सईद अह़मद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(131) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़मीद (عُفِیَ عَنْہُ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(132) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अमजद अ़ली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(133) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नबी बख़्श (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(134) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुख़्तार अ़ली शाह (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(135) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद फ़ज़्लुर्रह़मान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(136) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद निज़ामुद्दीन मुल्तानी ह़नफ़ी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(137) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद रैह़ान हुसैन अल उ़मरी अल मुजद्दिदी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(138) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मुश्ताक़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(139) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़क़ीर मुह़म्मद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(140) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सुलैमान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(141) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद वसीम ख़ान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(142) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल लत़ीफ़ अल क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(143) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़य्य अ़लीमी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(144) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इस्माई़ल (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(145) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद यह्या अ़लीमी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(146) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अह्मद हुसैन (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(147) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद अ़ब्दुल मजीद अल क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(148) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहिय्युद्दीन क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(149) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद शाह लतीफ़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(150) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद वल हैदरुल क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(151) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर हैदराबादी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(152) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद गियासुद्दीन (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(153) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम मुहिय्युद्दीन क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(154) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद अह्मद अ़ली (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(155) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(156) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद निज़ामुद्दीन क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(157) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद अ़ब्बास मियां (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(158) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मिरज़ा अह्मद अल क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(159) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना नज़ीर अह्मद ख़ुजनदी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(160) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद सा'दुल्लाह मक्की (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(161) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद अबरारुल हक़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(162) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना हाफ़िज़ अ़ब्दुल मजीद देहलवी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(163) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद जमील अह्मद अल क़ादिरी अल बदायूनी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(164) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद मे'राजुल हक़ सिद्दीक़ी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(165) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इब्राहीम अल हनफ़ी अल क़ादिरी अल बदायूनी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(166) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद लखनवी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(167) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल अ़लीम अस्सिद्दीक़ी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(168) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना इमाम मुहम्मद फ़ज़्ले करीम देहलवी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(169) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल हकीम अन्नूरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(170) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद शम्सुल इस्लाम (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(171) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद अ़ब्दुल हकीम (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(172) हज़्रते अ़ल्लामा मौलाना हाफ़िज़ अ़ब्दुल हक़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(173) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(174) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ख़ालिक़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(175) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अह़मद ख़ान देहलवी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(176) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रह़ीम (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(177) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद अह़मद अ़ली (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(178) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल गफ़्फ़ार ह़नफ़ी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(179) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अमीनुल क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(180) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद जसीम (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(181) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ सिद्दीक़ुल्लाह शाह क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(182) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद यासीन (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(183) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नूरुल ह़क़ क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(184) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मह़मूद जान क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(185) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम मुस्त़फ़ा क़ादिरी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(186) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़कीम (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(187) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़कीम (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(188) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाजी नूर मुह़म्मद (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(189) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सालेह़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(190) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सईदुद्दीन (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(191) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रशीद ख़ान बदायूनी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(192) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ली (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(193) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मियां (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(194) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अल मक्की (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(195) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़य्य क़ादिरी रज़वी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(196) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद शम्सुद्दीन क़ादिरी रज़वी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(197) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़फ़ीज़ुल्लाह आ'ज़मी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(198) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अमीर ह़सन (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(199) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद सज्जाद ह़ुसैन (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)
(200) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम अह़मद रज़वी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(201) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़ज़्ले अह़मद (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(202) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़सन क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(203) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शब्बीर हुसैन क़ादिरी रज़वी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(204) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल फ़ज़्ल मुह़म्मद अ़ब्दुल अह़द रज़वी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(205) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती निसार अह़मद (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(206) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुन्नस्र कमालुद्दीन क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(207) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुस्सलाम (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(208) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(209) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद काज़िम (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(210) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नूर मुह़म्मद आ'ज़मी क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(211) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीम क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(212) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ख़ान क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(213) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद यूनुस क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(214) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अह़मद यार ख़ान क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(215) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(216) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नूरुल हुसैन (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(217) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मा'वान हुसैन (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(218) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद शुजाअ़त अ़ली (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(219) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सिराजुल हुसैन (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(220) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(221) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल्लाह (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(222) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद यार मुह़म्मद (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(223) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद उ़मर अल क़ादिरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(224) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ग़नी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(225) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़बीबुर्रह़मान (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(226) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल करीम (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(227) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद आसिफ़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)
(228) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ग़नी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه)

(229) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(230) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाकिर हुसैन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(231) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मुसाहिब अ़ली (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(232) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मह़मूद ज़ैदी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(233) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद मीरां (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(234) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़क़ीर निसार अह़मद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(235) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़क़ीर शम्सुद्दीन अह़मद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(236) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ह़ामिद अ़ली फ़ारूक़ी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(237) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़बीबुर्रह़मान (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(238) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद रशीदुद्दीन अह़मद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(239) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल लत़ीफ़ अजमेरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(240) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मजीद अल क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(241) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद ज़ाहिद अल क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(242) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अह़मद देहलवी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(243) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सूफ़ी ज़ुहूर मुह़म्मद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(244) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद आ़रिफ़ हुसैन क़ुरैशी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(245) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद अ़ली हुसैन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(246) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल फ़ैज़ सुलैमानी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(247) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना क़ासिम मियां रज़वी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(248) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद क़ासिम हाशिमी क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(249) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुश्शकूर क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(250) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ ह़ाजी पीर सय्यिद ज़हूर शाह क़ादिरी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(251) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सिद्दीक़ बड़ौदी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(252) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद ख़ालिद शामी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(253) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बड़ौदी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)
(254) हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रज़ा ह़श्मत अ़ली ख़ान अल क़ादिरी रज़वी लखनवी (मुसन्निफ़ किताब अस्सवारिमुल हिन्दिय्या) (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तबलीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके **मदनी माह़ोल** में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में रिज़ाए इलाही के लिये **अच्छी अच्छी निय्यतों** के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ









-: मक्तबतुल मदीना की शाखें :-

- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
- अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, फ़ोन : (0145) 2629385
- हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
- हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकया, मदनपूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net